Bhavna

11 Aug 1992

07:32 AM

Khurja

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 107916301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**11/08/1992**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**07:32:00 घंटे**
इष्ट	04:24:30 घटी
स्थान	**Khurja**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	28:14:56 उत्तर
रेखांश	77:51:17 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:18:35 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:13:25 घंटे
वेलान्तर	-00:05:10 घंटे
साम्पातिक काल	04:32:34 घंटे
सूर्योदय	05:46:11 घंटे
सूर्यास्त	19:00:46 घंटे
दिनमान	13:14:35 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	24:53:58 कर्क
लग्न के अंश	16:58:55 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उत्तराषाढ़ा - 1**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	प्रीति
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भे-भैरवी
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1914	श्रावण	20
पंजाबी	संवत : 2049	श्रावण	27
बंगाली	सन् : 1399	श्रावण	26
तमिल	संवत : 2049	आदी	27
केरल	कोल्लम : 1167	कर्कदम	27
नेपाली	संवत : 2049	श्रावण	27
चैत्रादि	संवत : 2049	श्रावण	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2049	श्रावण	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 13
तिथि समाप्ति काल _____: 11:06:44
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 29:12:31 घंटे
जन्म योग _____: उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ____: प्रीति
योग समाप्ति काल _____: 12:11:54 घंटे
जन्म योग _____: प्रीति
सूर्योदय कालीन करण ____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 11:06:44 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 13:05:33
भभोग _____: 67:16:50
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 4 वर्ष 9 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

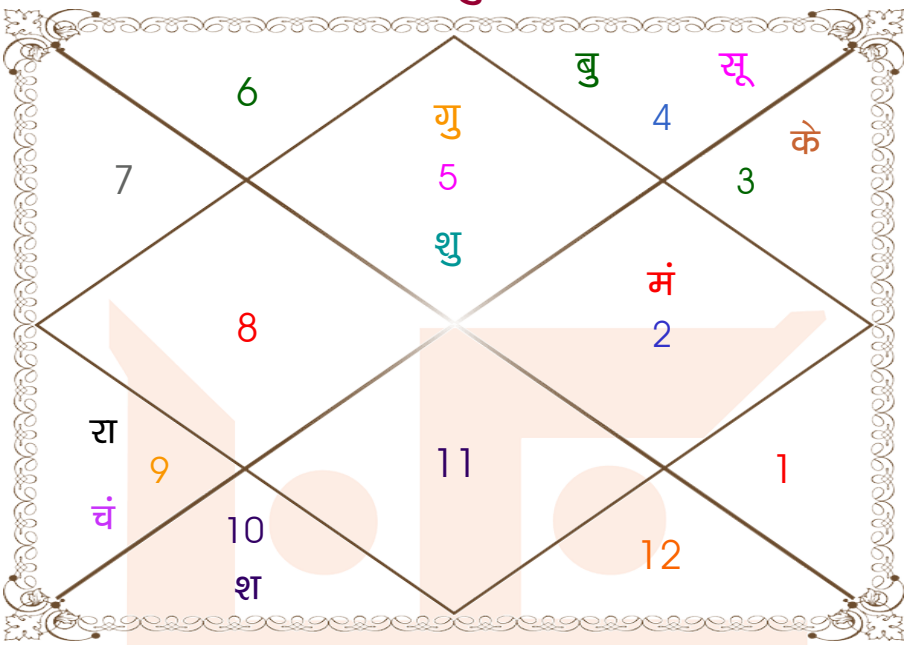

चन्द्र कुंडली

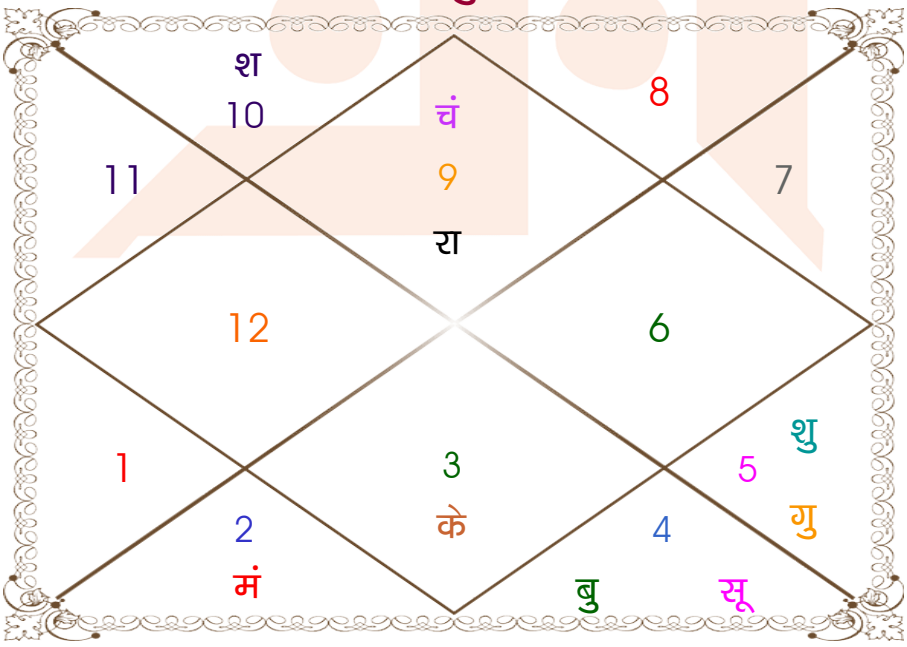

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

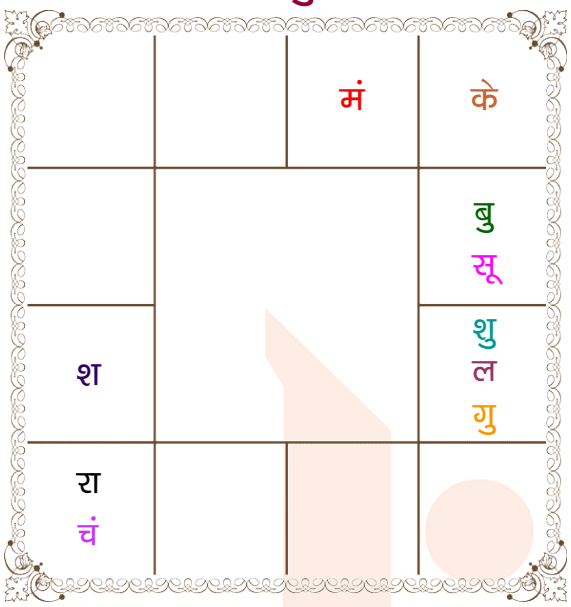

लग्न कुंडली

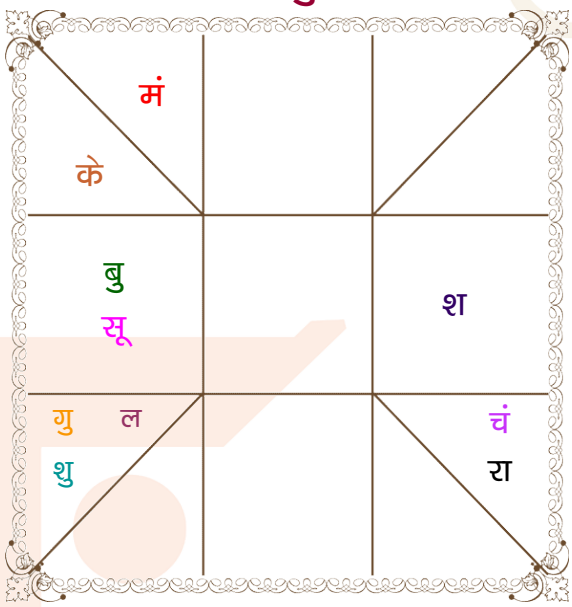

विंशोत्तरी
सूर्य 4वर्ष 9मा 29दि

सूर्य

11/08/1992

11/06/2111

सूर्य	10/06/1997
चन्द्र	10/06/2007
मंगल	10/06/2014
राहु	10/06/2032
गुरु	10/06/2048
शनि	10/06/2067
बुध	10/06/2084
केतु	10/06/2091
शुक्र	11/06/2111

योगिनी
संकटा 6वर्ष 5मा 8दि

सिद्धा

19/01/2020

19/01/2027

सिद्धा	30/05/2021
संकटा	19/12/2022
मंगला	01/03/2023
पिंगला	21/07/2023
धान्या	19/02/2024
भ्रामरी	29/11/2024
भद्रिका	19/11/2025
उल्का	19/01/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	16:58:55	316:22:20	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	---
सूर्य			कर्क	24:53:58	00:57:33	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	मित्र राशि
चंद्र			धनु	29:16:02	11:54:36	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	राहु	सम राशि
मंगल			वृष	16:27:08	00:39:10	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	शनि	सम राशि
बुध	व		कर्क	12:26:37	00:13:38	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	मंगल	शत्रु राशि
गुरु			सिंह	23:22:24	00:12:07	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
शुक्र			सिंह	10:56:09	01:13:47	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	शत्रु राशि
शनि	व		मक	21:06:11	00:04:28	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
राहु	व		धनु	06:04:25	00:03:41	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	06:04:25	00:03:41	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	नीच राशि
हर्ष	व		धनु	21:00:06	00:01:52	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
नेप	व		धनु	22:59:24	00:01:19	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
प्लूटो			तुला	26:25:30	00:00:23	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	---
दशम भाव			वृष	16:02:30	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:32

लग्न-चलित

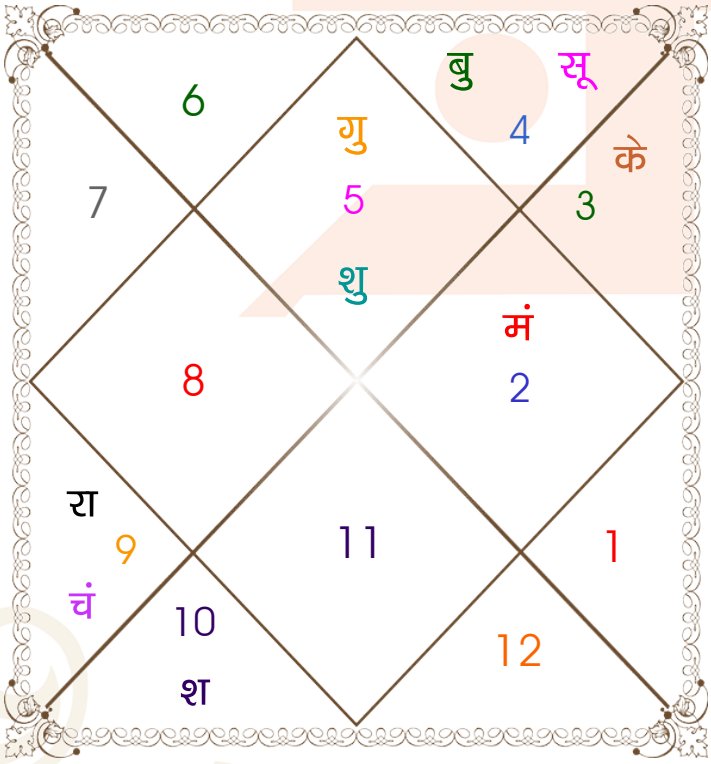

चन्द्र कुंडली

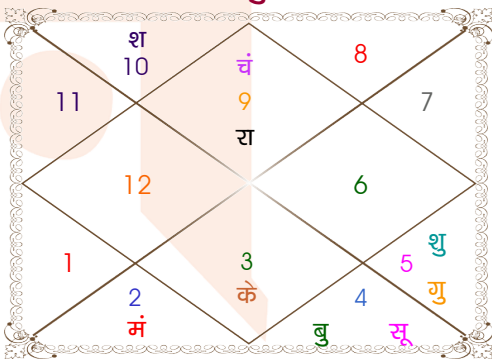

नवमांश कुंडली

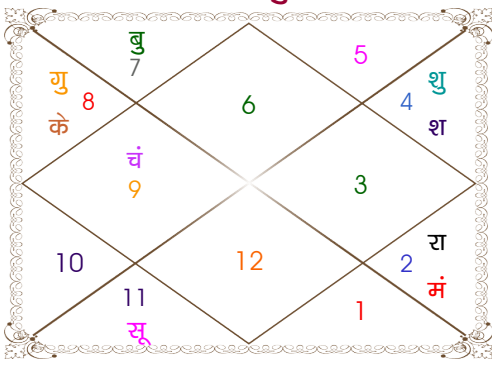

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	01:49:31	सिंह	16:58:55
2	कन्या	01:49:31	कन्या	16:40:07
3	तुला	01:30:43	तुला	16:21:19
4	वृश्चिक	01:11:54	वृश्चिक	16:02:30
5	धनु	01:11:54	धनु	16:21:19
6	मकर	01:30:43	मकर	16:40:07
7	कुम्भ	01:49:31	कुम्भ	16:58:55
8	मीन	01:49:31	मीन	16:40:07
9	मेष	01:30:43	मेष	16:21:19
10	वृष	01:11:54	वृष	16:02:30
11	मिथुन	01:11:54	मिथुन	16:21:19
12	कर्क	01:30:43	कर्क	16:40:07

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	16:58:55
2	कन्या	13:55:25
3	तुला	14:09:34
4	वृश्चिक	16:02:30
5	धनु	17:45:58
6	मकर	18:18:04
7	कुम्भ	16:58:55
8	मीन	13:55:25
9	मेष	14:09:34
10	वृष	16:02:30
11	मिथुन	17:45:58
12	कर्क	18:18:04

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

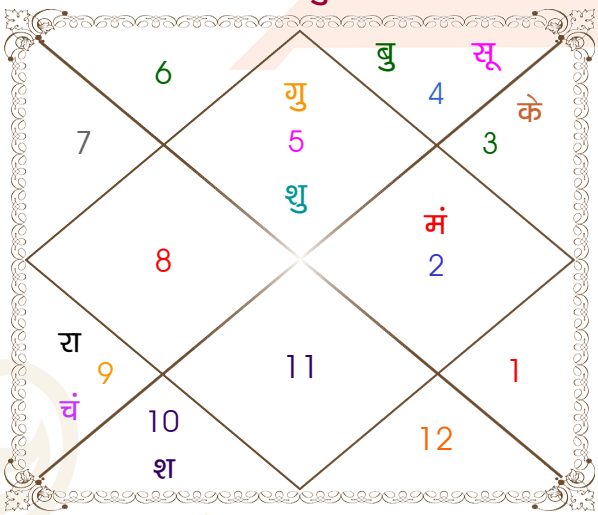

भाव कुंडली

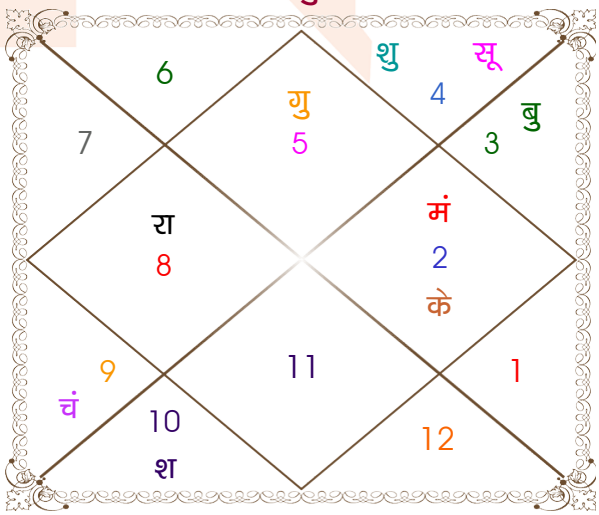

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	मुदित	आगमन	4.17	29 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत	शक्त	निद्रा	1.41	28 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	युवा	निपीदित	आगमन	2.38	81 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	युवा	खल	उपवेशन	1.30	44 %
गुरु	भ्रातृ	धन	वृद्ध	मुदित	उपवेशन	6.83	60 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	कुमार	खल	आगमन	2.05	34 %
शनि	मातृ	आयु	कुमार	स्वस्थ	प्रकाश	3.70	45 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	भीत	नृत्यलिप्सा	0.00	67 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	भीत	निद्रा	0.00	67 %
कुल						21.85	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

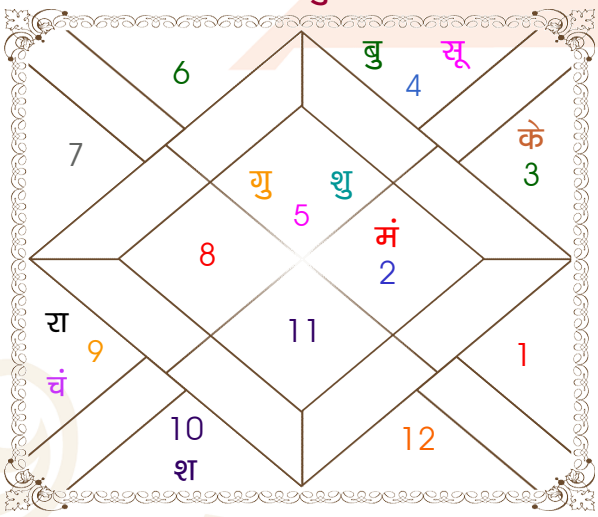

लग्न-चलित

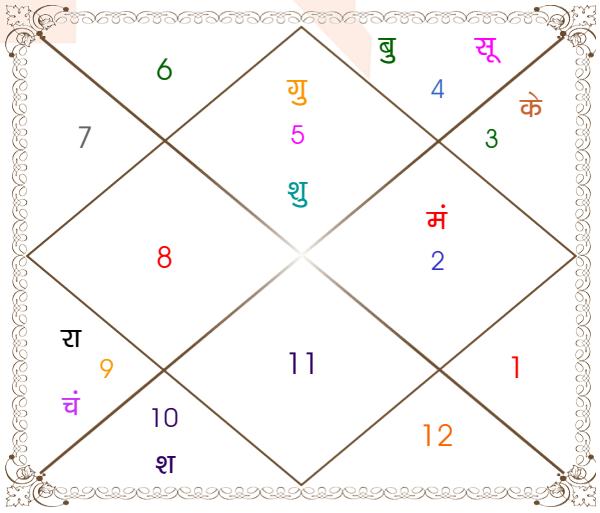

सुदर्शन चक्र

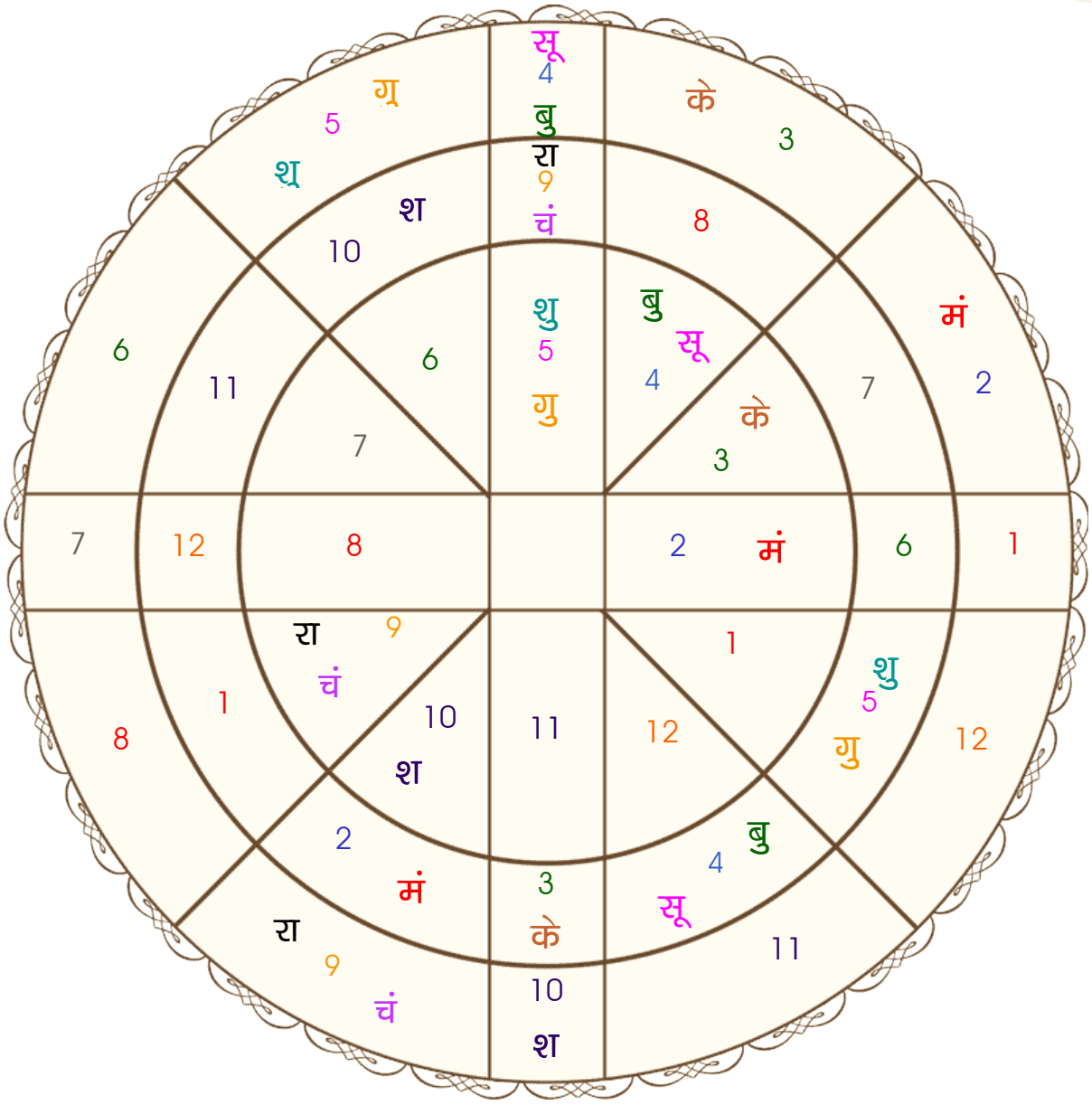

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 9 मास 11 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	25:00:29	चंद्र	बुध	राहु	बुध
चंद्र		धनु	29:22:33	गुरु	सूर्य	राहु	राहु
मंगल		वृष	16:33:40	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
बुध	व	कर्क	12:33:09	चंद्र	शनि	मंगल	बुध
गुरु		सिंह	23:28:55	सूर्य	शुक्र	शनि	राहु
शुक्र		सिंह	11:02:41	सूर्य	केतु	शनि	राहु
शनि	व	मक	21:12:43	शनि	चंद्र	शुक्र	मंगल
राहु	व	धनु	06:10:57	गुरु	केतु	राहु	शनि
केतु	व	मिथु	06:10:57	बुध	मंगल	चंद्र	शनि
हर्ष	व	धनु	21:06:37	गुरु	शुक्र	गुरु	शुक्र
नेप	व	धनु	23:05:56	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य
प्लूटो		तुला	26:32:02	शुक्र	गुरु	केतु	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	17:05:27	सूर्य	शुक्र	चंद्र	केतु
2	कन्या	14:01:56	बुध	चंद्र	गुरु	गुरु
3	तुला	14:16:05	शुक्र	राहु	बुध	शनि
4	वृश्चि	16:09:02	मंगल	शनि	गुरु	चंद्र
5	धनु	17:52:29	गुरु	शुक्र	मंगल	केतु
6	मक	18:24:36	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
7	कुंभ	17:05:27	शनि	राहु	शुक्र	बुध
8	मीन	14:01:56	गुरु	शनि	राहु	बुध
9	मेष	14:16:05	मंगल	शुक्र	शुक्र	राहु
10	वृष	16:09:02	शुक्र	चंद्र	शनि	बुध
11	मिथु	17:52:29	बुध	राहु	सूर्य	बुध
12	कर्क	18:24:36	चंद्र	बुध	बुध	शनि

के.पी. अयनांश : 23:39:01

फॉरच्युना : मकर 21:27:31

लग्न कुंडली

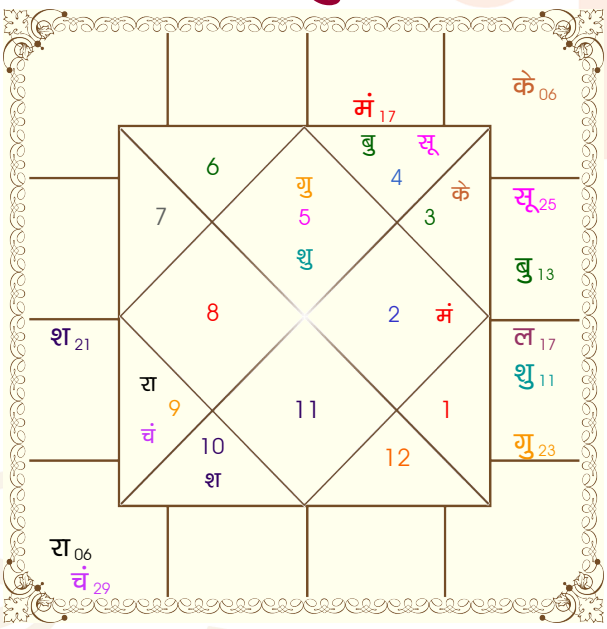

भाव कुंडली

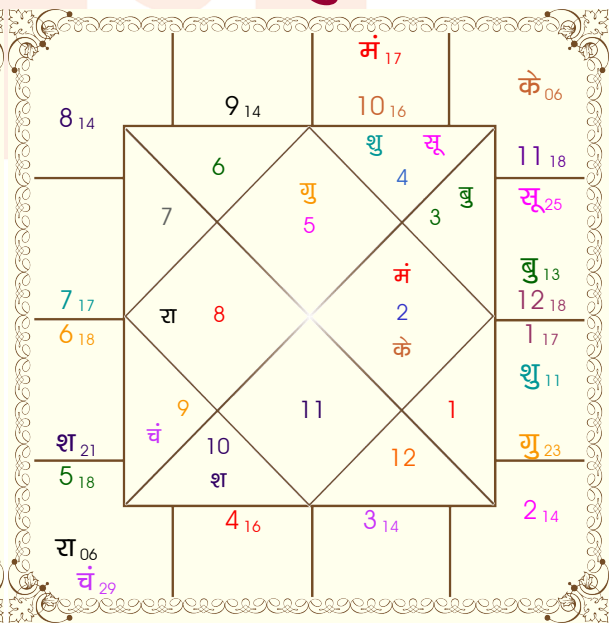

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- चंद्र- गुरु,
2	सूर्य- बुध-
3	गुरु- शुक्र-
4	मंगल- राहु, केतु-
5	चंद्र, मंगल, गुरु- शनि,
6	बुध+ शनि,
7	बुध- शनि-
8	गुरु-
9	मंगल- केतु-
10	मंगल, गुरु- शुक्र+ राहु, केतु+
11	सूर्य+ बुध,
12	सूर्य, चंद्र+ मंगल- गुरु, शुक्र, शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 2- 11+ 12,
चंद्र	1- 5, 12+
मंगल	4- 5, 9- 10, 12-
बुध	2- 6+ 7- 11,
गुरु	1, 3- 5- 8- 10- 12,
शुक्र	3- 10+ 12,
शनि	5, 6, 7- 12-
राहु	4, 10,
केतु	4- 9- 10+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	गु	चं	सू
2	--	--	सू	बु
3	--	--	गु	शु
4	--	रा	के	मं
5	मं श	चं	--	गु
6	बु	श	बु	श
7	--	--	बु	श
8	--	--	--	गु
9	--	--	के	मं
10	शु रा के	मं के	गु	शु
11	सू	बु	सू	बु
12	चं गु	सू शु	मं श	चं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	1	---	कर्क	12
चंद्र	12	2,6,10	धनु	5
मंगल	4,9	---	वृष	10
बुध	2,11	12	कर्क	11
गुरु	5,8	---	सिंह	1
शुक्र	3,10	1,5,9	सिंह	12
शनि	6,7	4,8	मकर	6
राहु	---	3,7,11	धनु	4
केतु	---	---	मिथुन	10

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	2,11	12	11	---	3,7,11	4
चंद्र	1	---	12	---	3,7,11	4
मंगल	12	2,6,10	5	6,7	4,8	6
बुध	6,7	4,8	6	4,9	---	10
गुरु	3,10	1,5,9	12	6,7	4,8	6
शुक्र	---	---	10	6,7	4,8	6
शनि	12	2,6,10	5	3,10	1,5,9	12
राहु	---	---	10	---	3,7,11	4
केतु	4,9	---	10	12	2,6,10	5

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 114.90	चंद्र 269.27	मंगल 46.45	बुध 102.44	गुरु 143.37	शुक्र 130.94	शनि 291.10	राहु 246.07	केतु 66.07	हर्ष 261.00	नेप 262.99	प्लूटो 206.43
सूर्य 114.90	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 2.63	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 9.22	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 2.76
चंद्र 269.27	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 1.90	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 6.48	युति 7.92	-- 0.00
मंगल 46.45	-- 0.00	8वां 2.27	-- 0.00	तृती 1.49	4था 7.49	4था 8.38	-- 0.00	8वां 4.65	-- 0.00	8वां 8.89	8वां 7.75	-- 0.00
बुध 102.44	युति 2.63	सप्त 1.90	-- 0.00	-- 0.00	नवां 0.11	-- 0.00	सप्त 6.16	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
गुरु 143.37	-- 0.00	5वां 8.15	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 2.65	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	5वां 9.69	5वां 9.99	तृती 2.09
शुक्र 130.94	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 2.65	-- 0.00	-- 0.00	पंच 0.88	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शनि 291.10	सप्त 9.22	-- 0.00	पंच 1.04	सप्त 6.16	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	अष्टां 1.00	-- 0.00	-- 0.00	10वा 8.49
राहु 246.07	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	अष्ट 1.00	-- 0.00	सप्त 10.00	युति 0.08	-- 0.00	-- 0.00
केतु 66.07	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	तृती 0.88	-- 0.00	सप्त 10.00	-- 0.00	सप्त 0.08	-- 0.00	-- 0.00
हर्ष 261.00	-- 0.00	युति 6.48	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 0.08	सप्त 0.08	-- 0.00	युति 9.78	-- 0.00
नेप 262.99	-- 0.00	युति 7.92	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.78	-- 0.00	-- 0.00
प्लूटो 206.43	-- 0.00	तृती 2.21	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 0.53	नवां 0.85	-- 0.00	तृती 0.45	तृती 1.87	-- 0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	136.98	166.67	196.36	226.04	256.36	286.67	316.98	346.67	16.36	46.04	76.36	106.67
सूर्य	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
114.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.51
चंद्र	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
269.27	0.00	0.00	0.00	0.00	2.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.17	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
46.45	9.98	3.00	0.00	9.99	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99	0.00	3.00
बुध	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
102.44	0.00	1.34	1.56	0.00	0.00	9.04	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.04
गुरु	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	9वां	--	--	--
143.37	7.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.84	0.00	7.42	0.00	0.00	0.00
शुक्र	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
130.94	8.06	0.00	0.45	0.70	0.45	0.00	8.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	सप्त
291.10	0.00	0.00	8.79	0.00	0.00	8.94	0.00	8.94	0.97	0.73	0.00	8.94
राहु	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--
246.07	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.59	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां
66.07	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.59
हर्ष	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--
261.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.84	0.00	1.49	1.27	1.04	0.00	8.84	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--
262.99	0.00	0.00	0.00	0.00	7.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
206.43	0.00	0.00	4.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.94	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	136.98	163.92	194.16	226.04	257.77	288.30	316.98	343.92	14.16	46.04	77.77	108.30
सूर्य	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
114.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.71
चंद्र	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
269.27	0.00	0.00	0.00	0.00	3.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.58	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
46.45	9.98	2.37	0.00	9.99	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99	0.00	2.66
बुध	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
102.44	0.00	2.78	2.70	0.00	0.00	8.18	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.18
गुरु	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	9वां	--	--	--
143.37	7.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.84	0.00	5.70	0.00	0.00	0.00
शुक्र	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
130.94	8.06	0.00	1.99	0.70	0.00	0.00	8.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच	--	सप्त
291.10	0.00	0.00	7.47	0.00	0.00	9.57	0.00	7.30	0.00	0.73	0.00	9.57
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
246.07	0.00	0.00	0.00	0.00	3.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.39	0.00
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
66.07	0.00	0.00	0.00	0.00	3.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.39	0.00
हर्ष	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--
261.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.43	0.00	1.49	0.00	0.00	0.00	9.43	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--
262.99	0.00	0.00	0.00	0.00	8.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
206.43	0.00	0.00	2.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.82	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

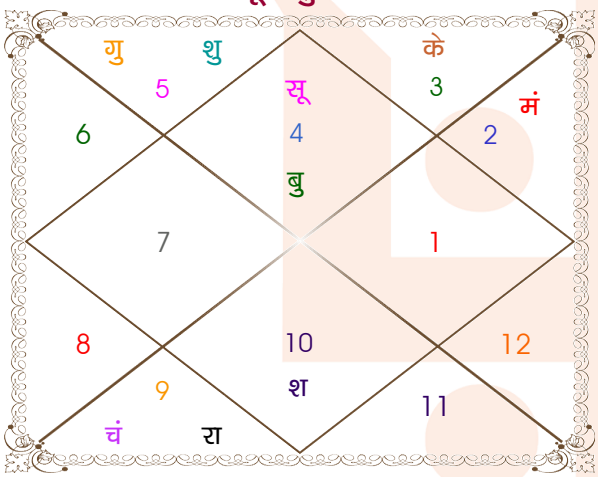

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

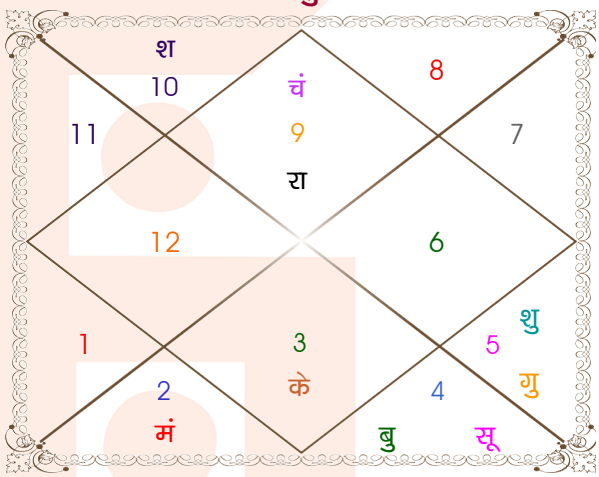

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

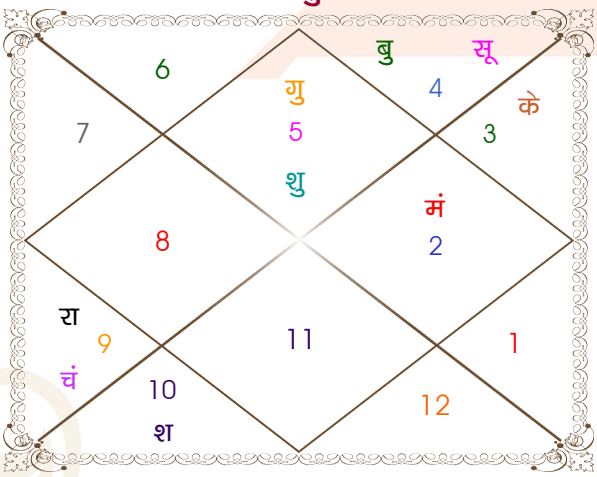

देह विचारः

होरा कुंडली

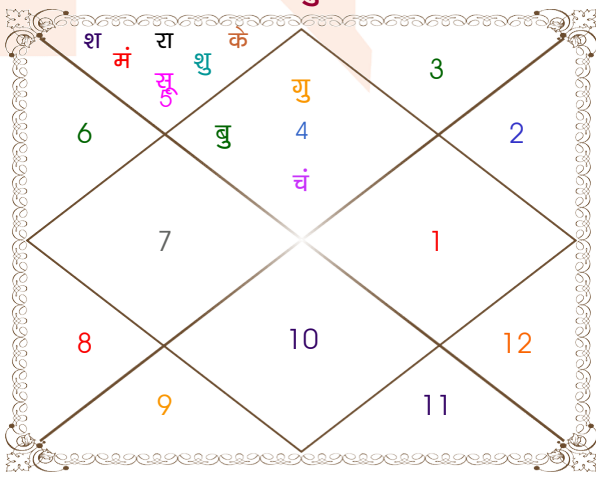

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

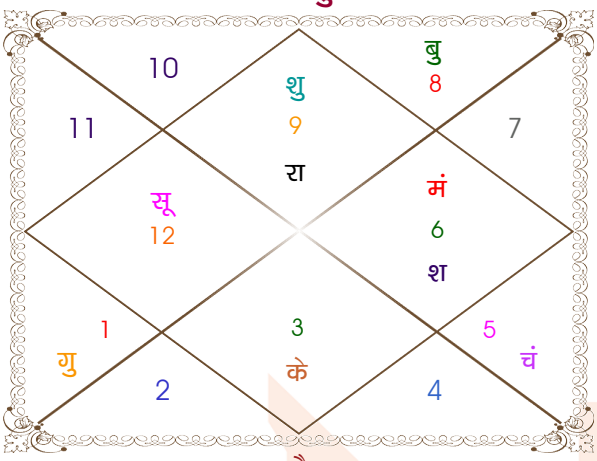

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

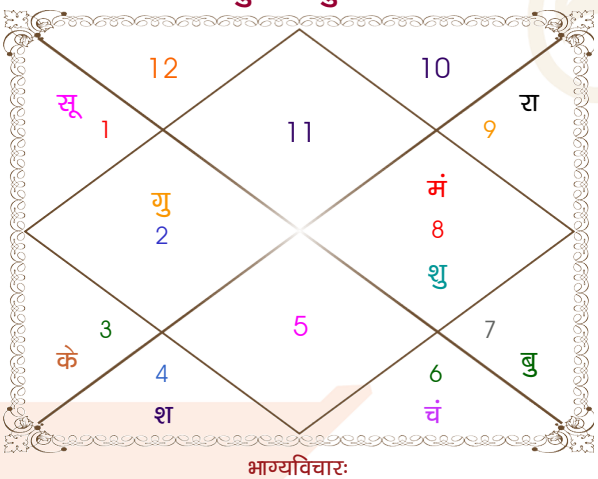

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

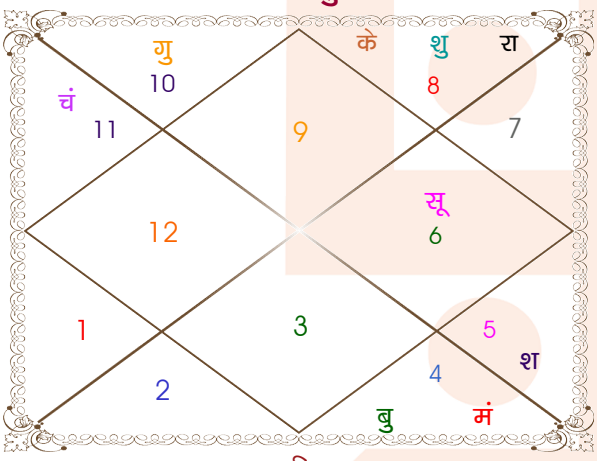

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

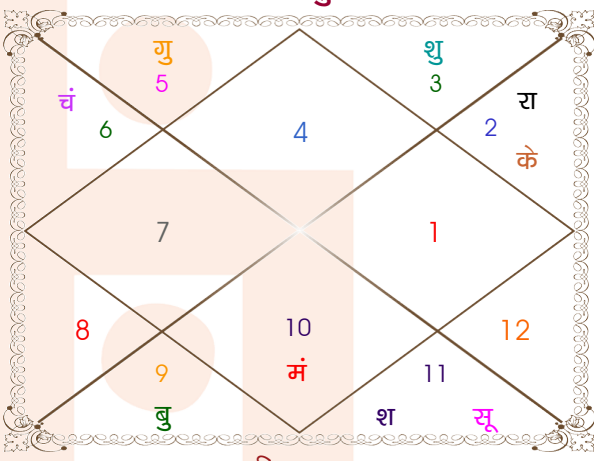

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

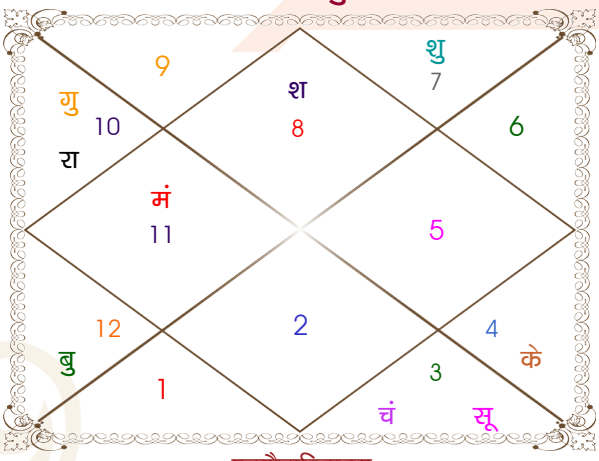

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

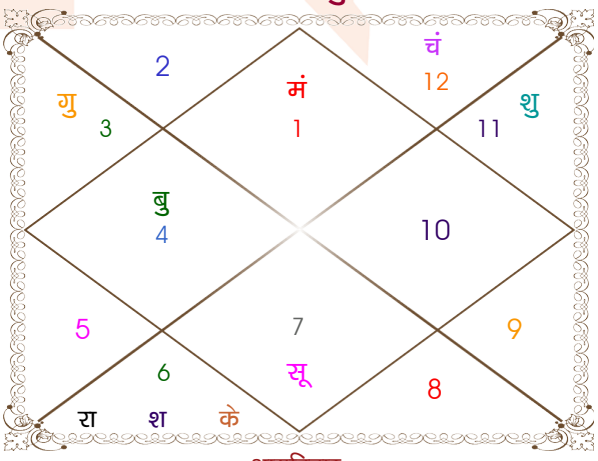

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

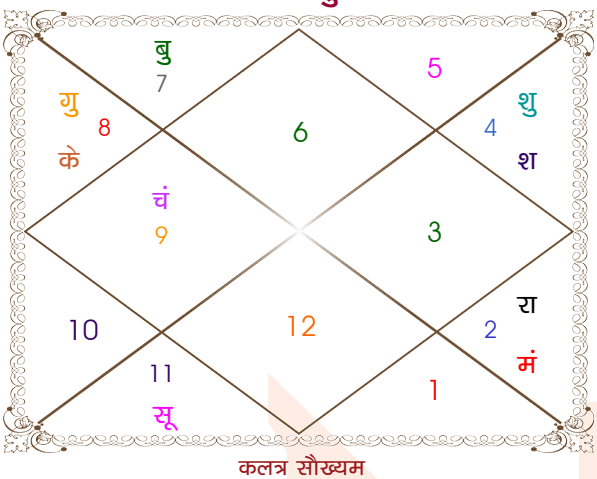

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

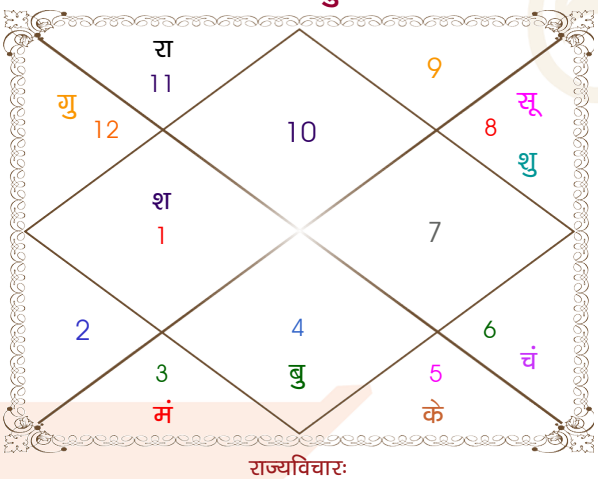

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

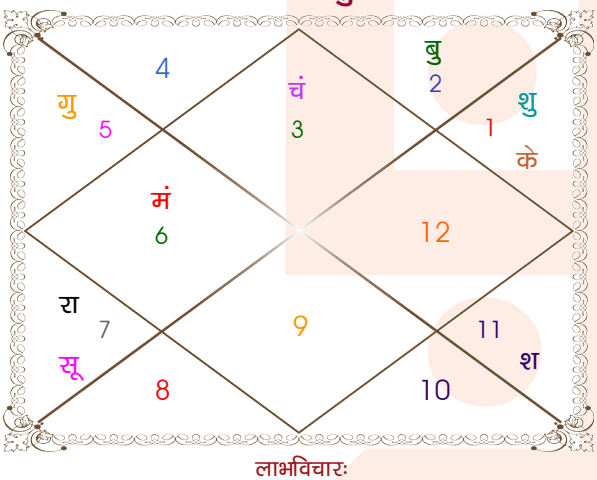

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

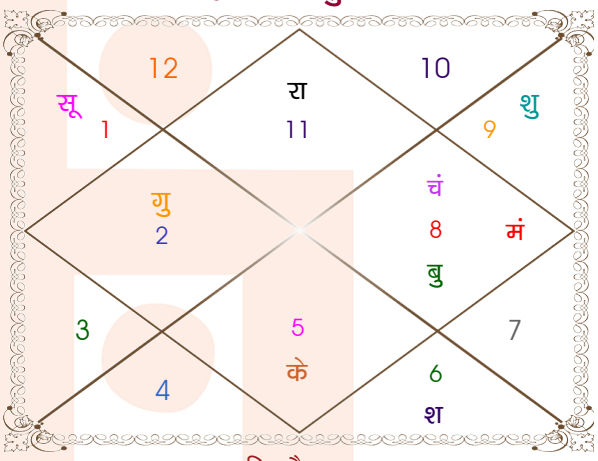

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

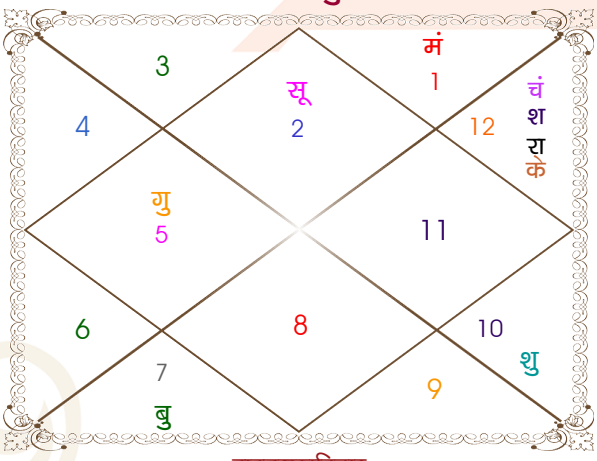

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

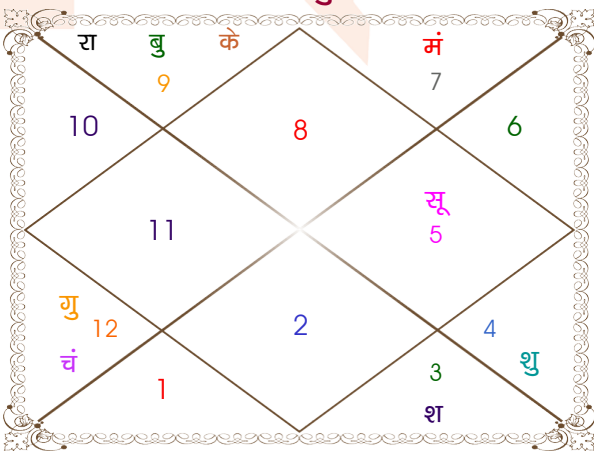

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

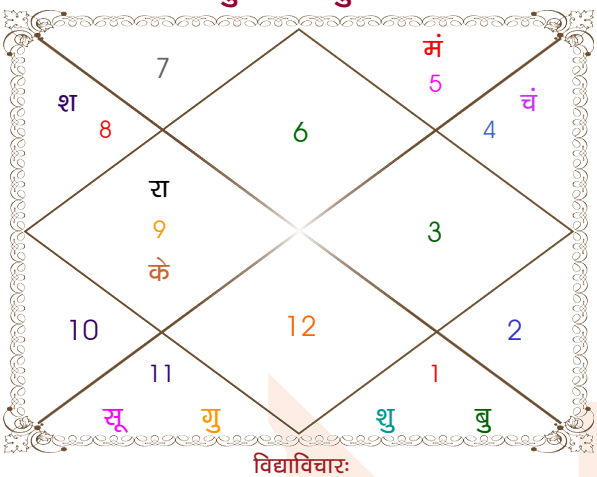

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

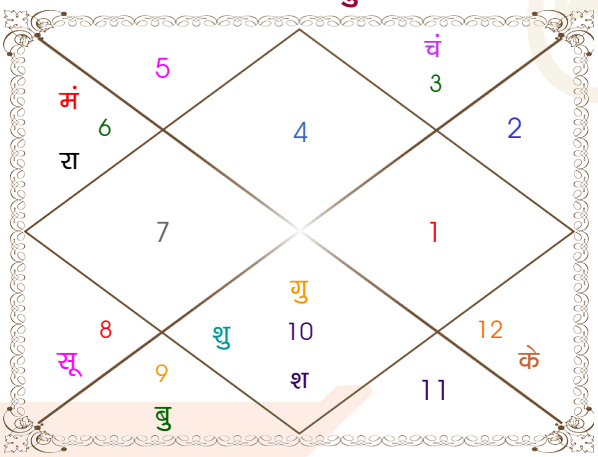

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

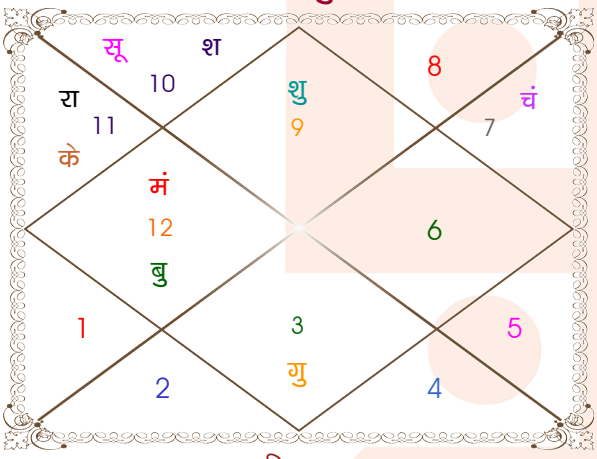

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

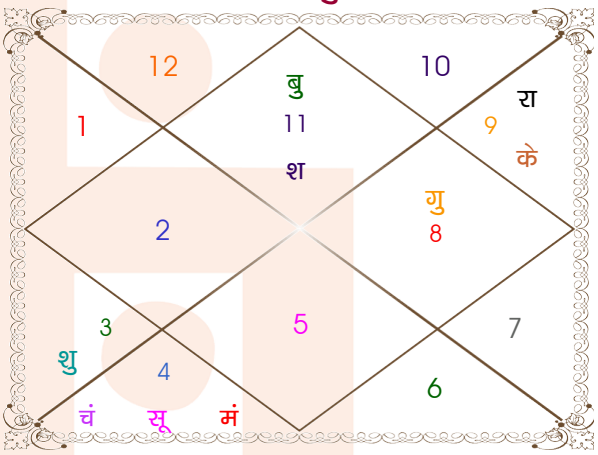

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

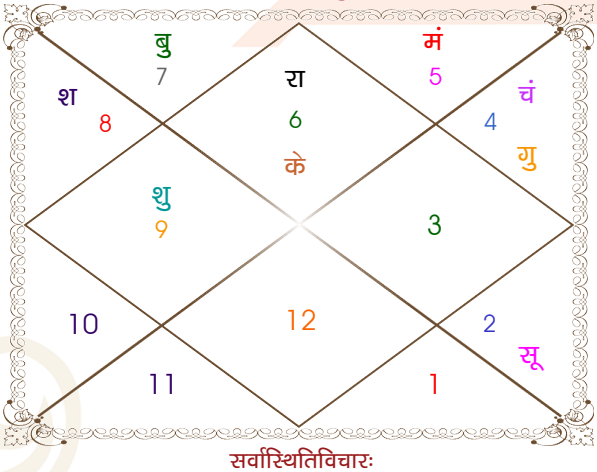

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

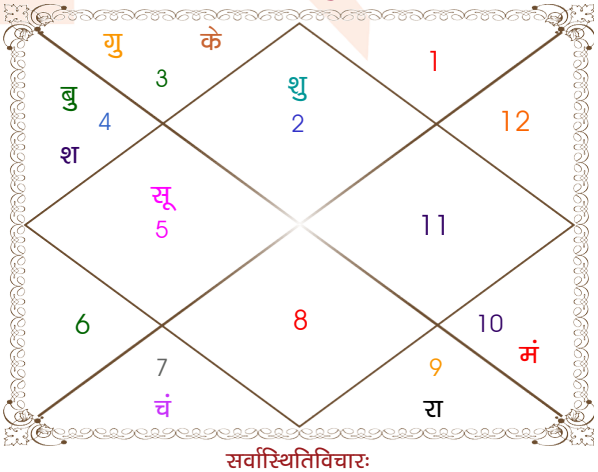

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	कर्क	धनु	वृष	कर्क	सिंह	सिंह	मक	धनु	मिथु
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	धनु	मीन	सिंह	कन्या	वृश्चि	मेष	धनु	कन्या	धनु	मिथु
चतुर्थांश	कुंभ	मेष	कन्या	वृश्चि	तुला	वृष	वृश्चि	कर्क	धनु	मिथु
सप्तमांश	वृश्चि	मिथु	मिथु	कुंभ	मीन	मक	तुला	वृश्चि	मक	कर्क
नवमांश	कन्या	कुंभ	धनु	वृष	तुला	वृश्चि	कर्क	कर्क	वृष	वृश्चि
दशमांश	मक	वृश्चि	कन्या	मिथु	कर्क	मीन	वृश्चि	मेष	कुंभ	सिंह
द्वादशांश	कुंभ	मेष	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि	वृष	धनु	कन्या	कुंभ	सिंह
षोडशांश	वृष	वृष	मीन	मेष	तुला	सिंह	मक	मीन	मीन	मीन
विंशांश	वृश्चि	सिंह	मीन	तुला	धनु	मीन	कर्क	मिथु	धनु	धनु
चतुर्विंशांश	कन्या	कुंभ	कर्क	सिंह	मेष	कुंभ	मेष	वृश्चि	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कर्क	वृश्चि	मिथु	कन्या	धनु	मक	मक	मक	कन्या	मीन
त्रिंशांश	धनु	मक	तुला	मीन	मीन	मिथु	धनु	मक	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	कुंभ	कर्क	कर्क	कर्क	कुंभ	वृश्चि	मिथु	कुंभ	धनु	धनु
अक्षवेदांश	कन्या	वृष	कर्क	सिंह	तुला	कर्क	धनु	वृश्चि	कन्या	कन्या
षष्ट्यंश	वृष	सिंह	तुला	मक	कर्क	मिथु	वृष	कर्क	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शुक्र	0 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	2 भेदक
केतु	0 ---	0 ---	1 ---	5 कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.90	8.90	14.95	11.75	15.50	7.70	13.00	9.20	14.25
सप्तवर्ग	11.25	9.13	14.20	12.18	14.13	9.23	11.88	10.50	12.93
दशवर्ग	14.08	8.65	12.85	9.95	13.15	12.58	10.90	10.38	12.60
षोडशवर्ग	12.75	9.08	13.78	11.20	14.03	11.50	11.70	8.73	14.20

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	25	19	24	39	44	15	30
सप्तवर्गज बल	90	60	116	86	88	58	86
ओजयुग्मक बल	15	0	0	15	15	15	0
केन्द्र बल	15	30	60	15	60	60	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	15	0	0	0
कुल स्थान बल	145	124	200	170	207	148	131
कुल दिग्बल	37	46	60	48	58	28	51
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	9	103	9	9	51	51	9
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	100	58	58	54	37	43	51
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	219	185	166	183	184	130	84
कुल चेष्टाबल	0	0	28	38	10	11	59
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-9	-8	9	-1	-18	-13	-21
कुल षट्बल	452	398	481	465	474	348	313
रूप षट्बल	7.5	6.6	8.0	7.7	7.9	5.8	5.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.1	1.6	1.1	1.2	1.1	1.0
संबंधित पद	2	5	1	4	3	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	33.11	31.07	25.92	38.50	20.66	12.82	41.67
कष्ट फल	23.81	18.77	33.92	21.48	28.47	46.91	6.49

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	452	465	348	481	474	313	313	474	481	348	465	398
भावदिग्बल	30	50	40	30	10	40	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	-15	7	48	39	34	79	90	83	36	46	11	-4
कुल भाव बल	467	522	435	550	519	432	403	578	567	454	516	414
रूप भाव बल	7.8	8.7	7.3	9.2	8.6	7.2	6.7	9.6	9.4	7.6	8.6	6.9
संबंधित पद	7	4	9	3	5	10	12	1	2	8	6	11

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

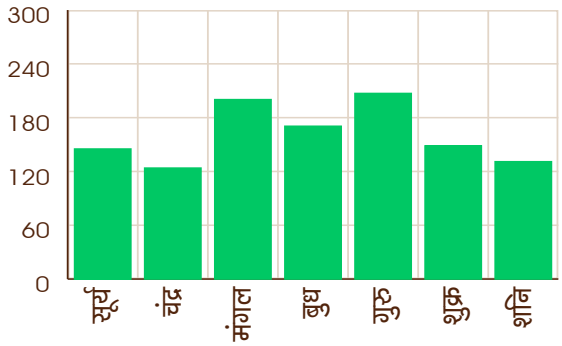

दिग्बल

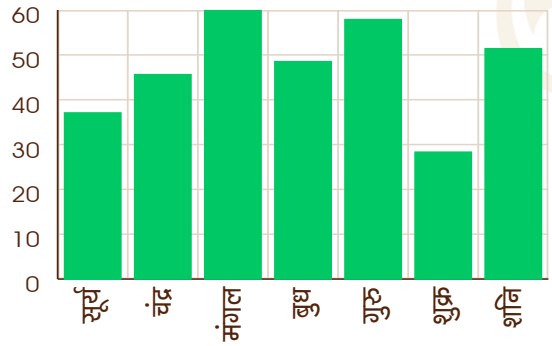

कालबल

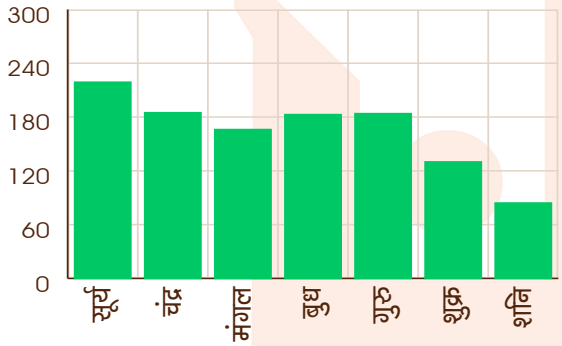

चेष्टाबल

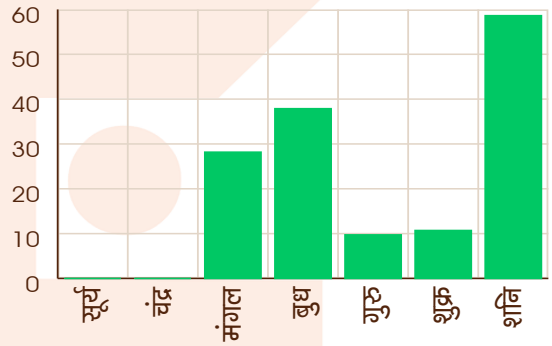

नैसर्गिक बल

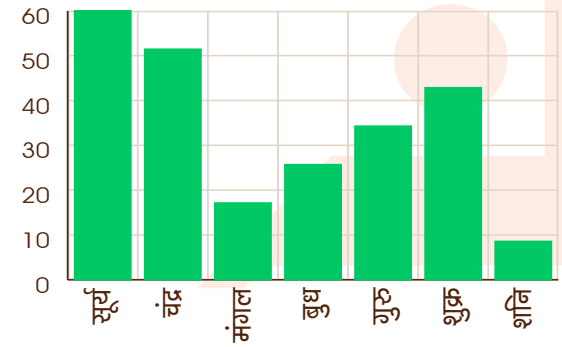

दृग्बल

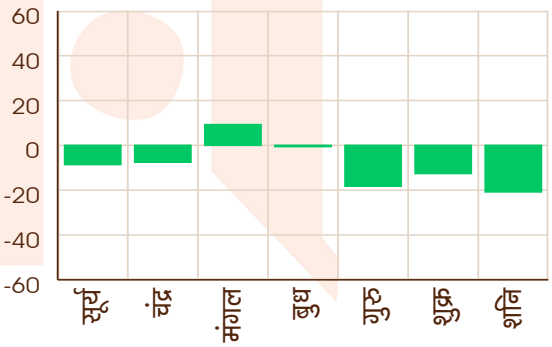

रूप षट्बल

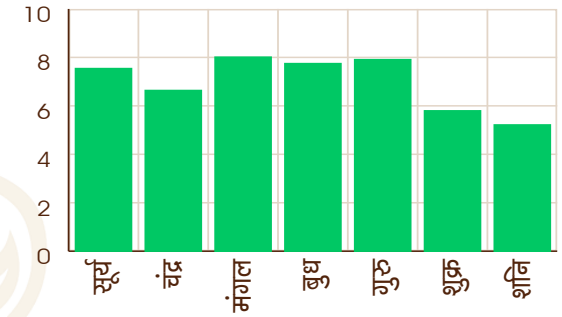

न्यूनतम षट्बल

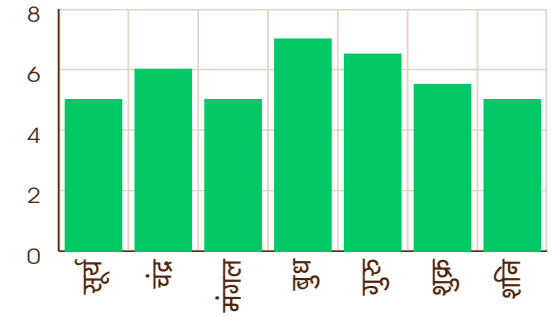

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

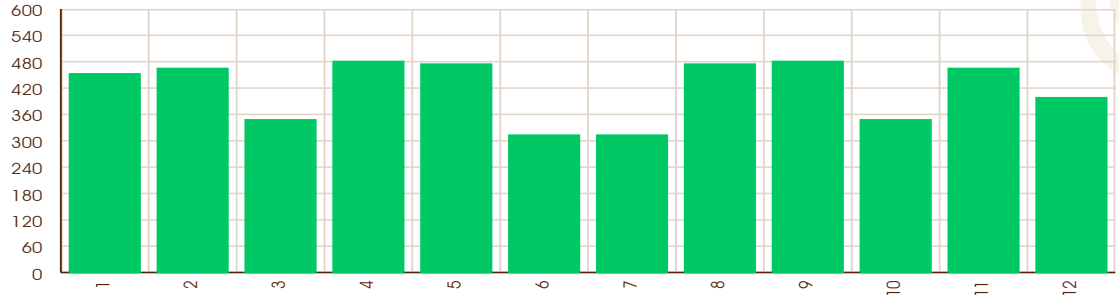

भावदिग्बल

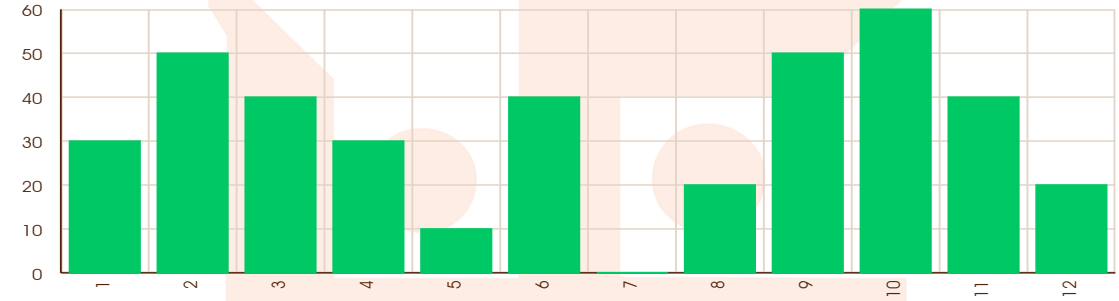

भावदृष्टि बल

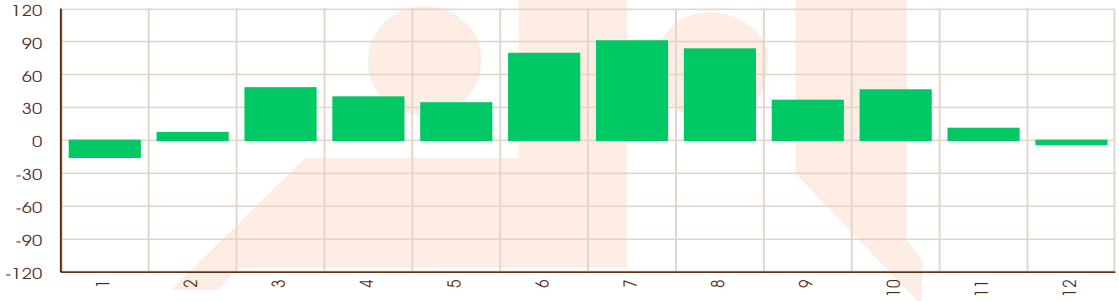

भाव बल

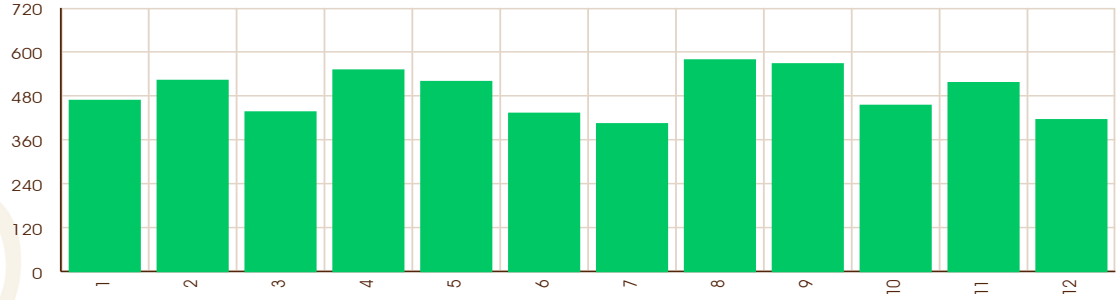

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

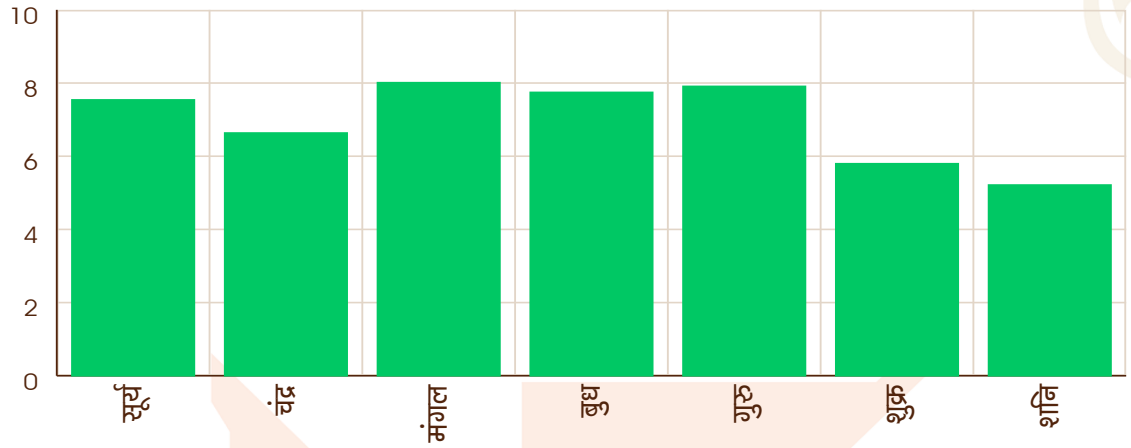

इष्ट - कष्ट फल

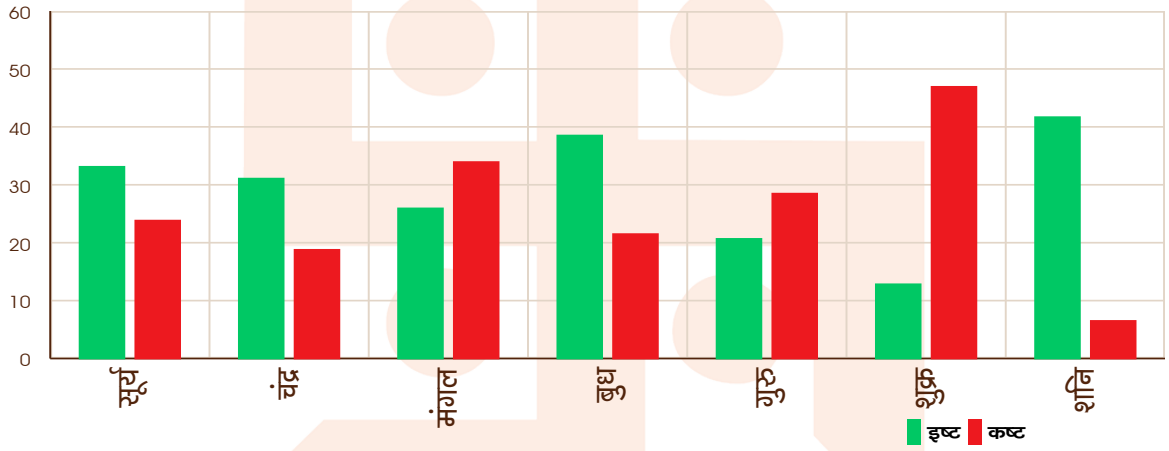

रूप भाव बल

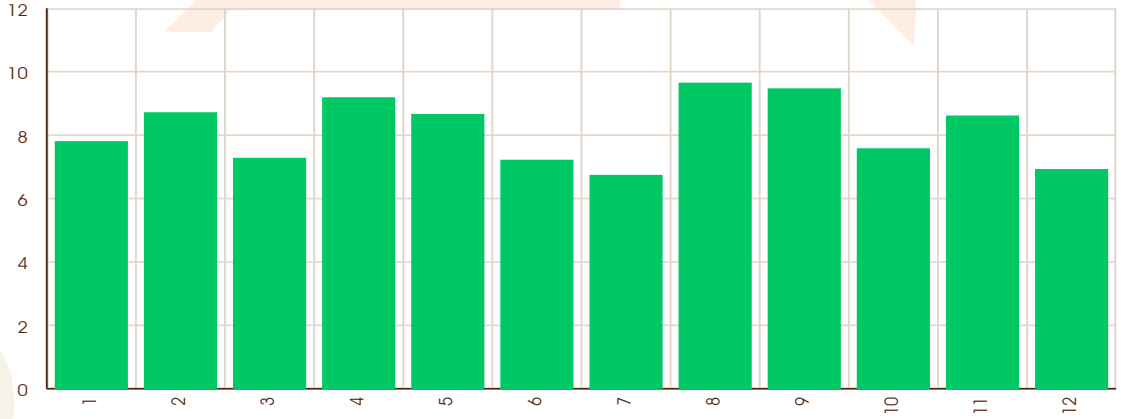

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	16:58:55	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
गुलिक	गु	वृश्चि	12:22:26	--	--	अनुराधा	3	17
काल	का	धनु	03:59:50	--	--	मूल	2	19
मृत्यु	मृ	सिंह	15:46:41	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
यमघंटक	यम	कन्या	29:24:25	--	--	चित्रा	2	14
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	07:43:06	--	--	उ०फाल्गुनी	4	12
धूम	धू	धनु	08:13:58	--	--	मूल	3	19
व्यतिपात	व्य	कर्क	21:46:02	--	--	आश्लेषा	2	9
परिवेश	परि	मक	21:46:02	--	--	श्रवण	4	22
इन्द्रचाप	इ	मिथु	08:13:58	नीच	--	आर्द्रा	1	6
उपकेतु	उप	मिथु	24:53:58	--	--	पुनर्वसु	2	7

प्राणपद	:	मक	13:54:32	कारकाँश लग्न	:	धनु	23:24:15
भाव लग्न	:	सिंह	21:20:59	होरा लग्न	:	कन्या	17:48:01
घटी लग्न	:	धनु	07:09:06	वर्णद लग्न	:	कुंभ	04:46:56

उपग्रह कुंडली

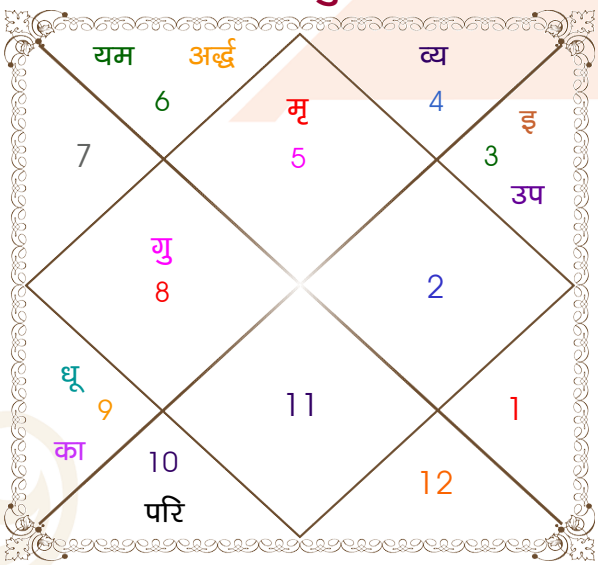

आरूढ़ कुंडली

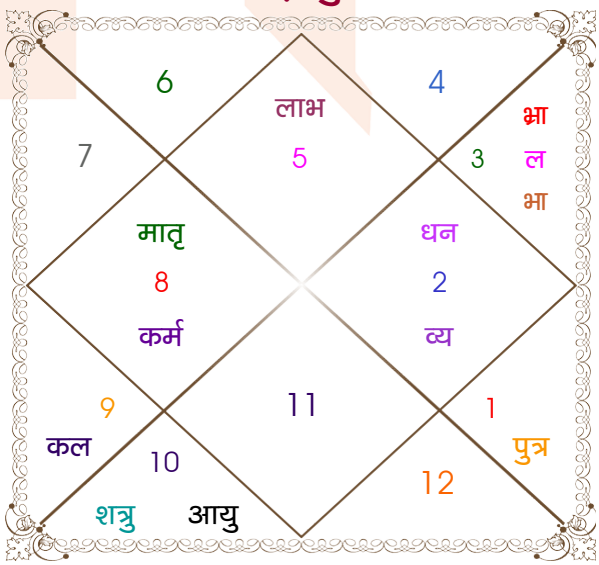

षन्नाडी चक्र

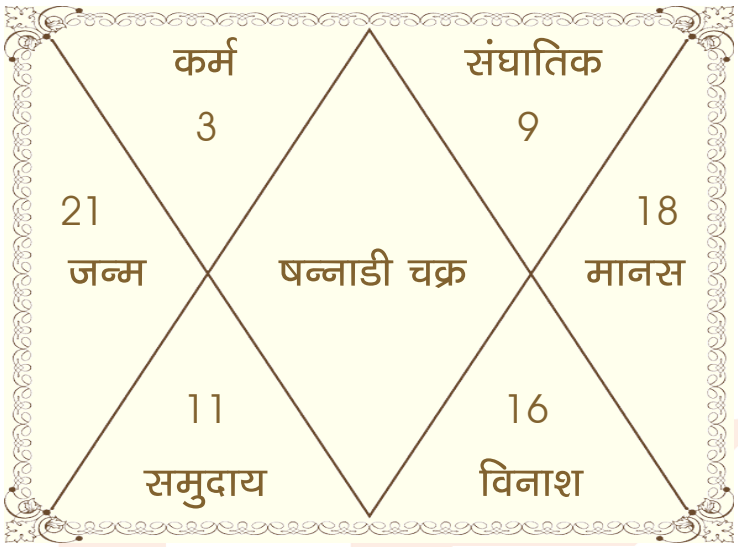

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	4	3	3	4	4	3	6	5	3	4	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	कुल
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
कुल	3	3	6	3	3	7	6	2	2	5	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	6	4	3	3	3	3	4	3	4	2	2	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	4	4	5	3	6	4	5	2	7	3	5	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	6	4	4	4	5	4	4	5	5	7	6	2	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
कुल	5	4	5	5	5	2	2	7	6	5	4	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
कुल	4	4	3	3	5	5	4	2	1	4	2	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	7	4	4	3	4	3	5	6	4	2	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	5	4	2	1	4	2	2	4	4	3	39
गुरु	5	7	6	2	6	4	4	4	5	4	4	5	56
मंगल	2	6	4	3	3	3	3	4	3	4	2	2	39
सूर्य	4	5	4	4	3	3	4	4	3	6	5	3	48
शुक्र	6	5	4	2	5	4	5	5	5	2	2	7	52
बुध	3	5	6	4	4	5	3	6	4	5	2	7	54
चंद्र	3	7	6	2	2	5	5	4	3	3	6	3	49
बिन्दु	26	40	35	21	25	25	28	29	25	28	25	30	337
रेखा	30	16	21	35	31	31	28	27	31	28	31	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	4	1	2	0	0	0	0	0	3	0	1	12
गुरु	0	3	2	0	1	0	0	2	0	0	0	3	11
मंगल	0	3	2	1	1	0	1	2	1	1	0	0	12
सूर्य	1	2	0	1	0	0	0	1	0	3	1	0	9
शुक्र	1	3	2	0	0	2	3	3	0	0	0	5	19
बुध	0	0	4	0	1	0	1	2	1	0	0	3	12
चंद्र	1	4	1	0	0	2	0	2	1	0	1	1	13
रेखा	4	19	12	4	3	4	5	12	3	7	2	13	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	4	1	2	0	0	0	0	0	3	0	1	12
गुरु	0	3	2	0	1	0	0	2	0	0	0	3	11
मंगल	0	3	2	1	1	0	0	2	1	1	0	0	11
सूर्य	0	2	0	1	0	0	0	0	0	3	0	0	6
शुक्र	1	3	0	0	0	0	0	2	0	0	0	5	11
बुध	0	0	4	0	1	0	1	2	1	0	0	2	11
चंद्र	1	4	1	0	0	1	0	1	1	0	1	0	10
रेखा	3	19	10	4	3	1	1	9	3	7	1	11	72

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	39	88	90	98	108	113	90
ग्रह पिंड	41	37	61	22	41	24	67
शोध्य पिंड	80	125	151	120	149	137	157

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

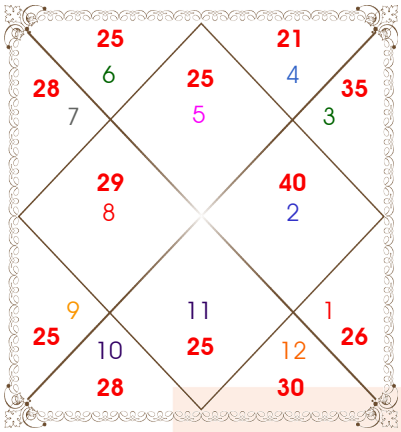

सूर्य का अष्टकवर्ग

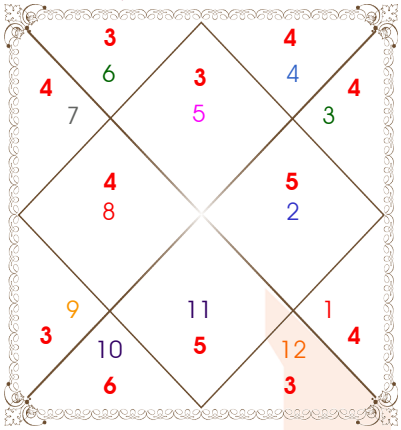

चंद्र का अष्टकवर्ग

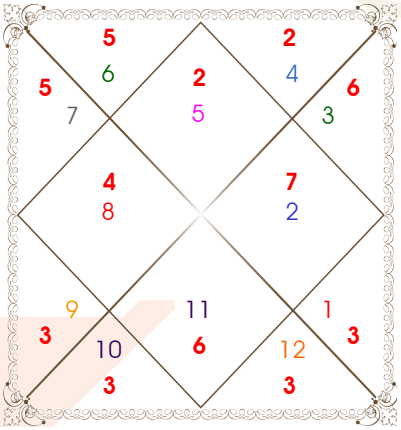

मंगल का अष्टकवर्ग

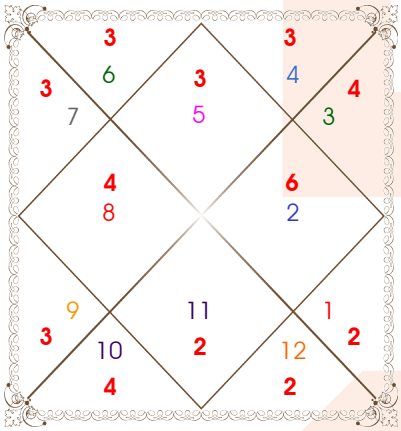

बुध का अष्टकवर्ग

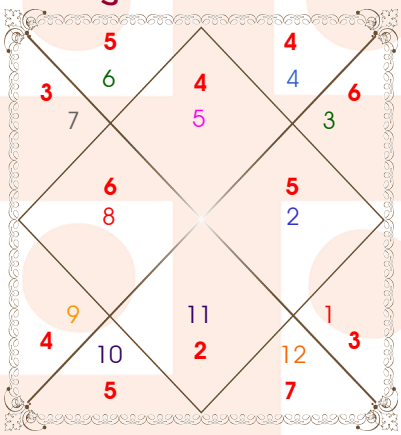

गुरू का अष्टकवर्ग

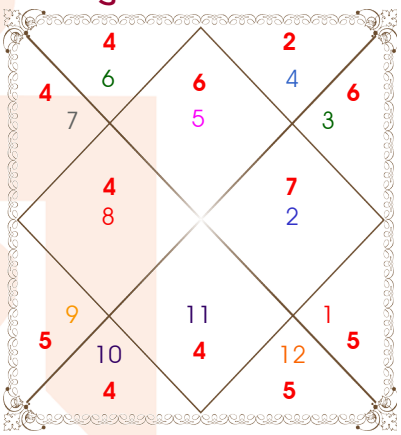

शुक्र का अष्टकवर्ग

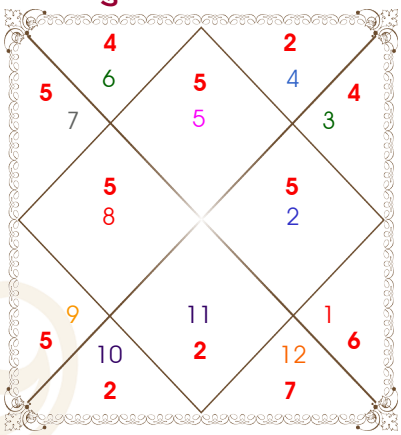

शनि का अष्टकवर्ग

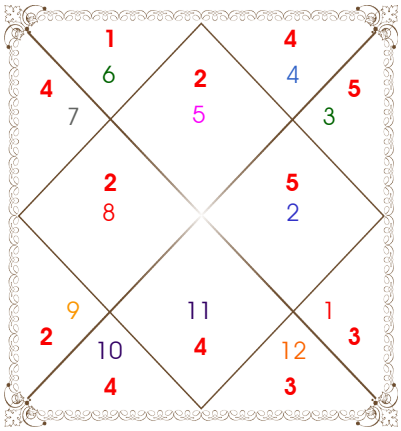

लग्न का अष्टकवर्ग

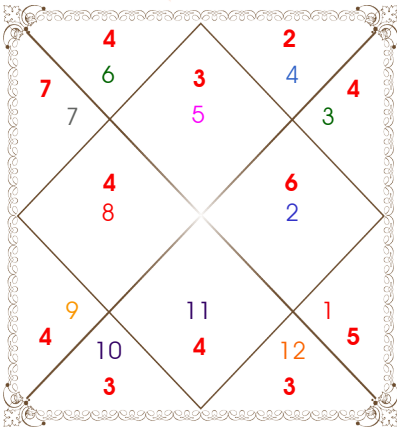

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

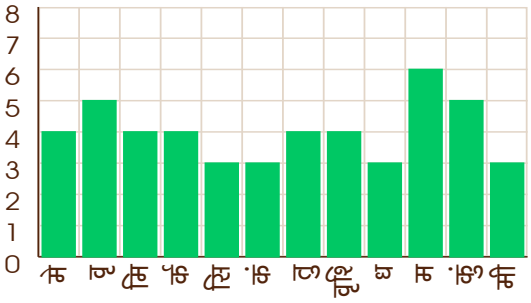

चन्द्र

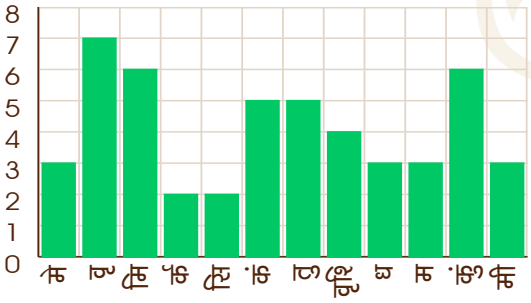

मंगल

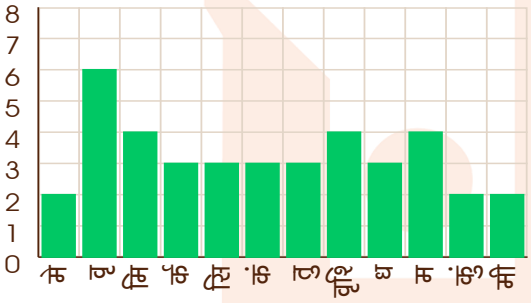

बुध

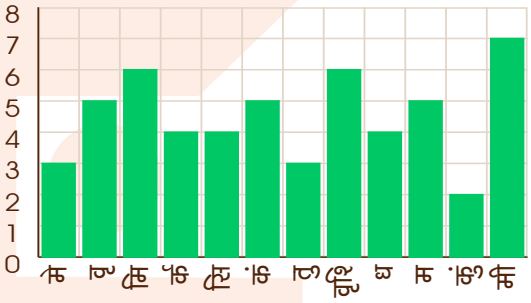

गुरु

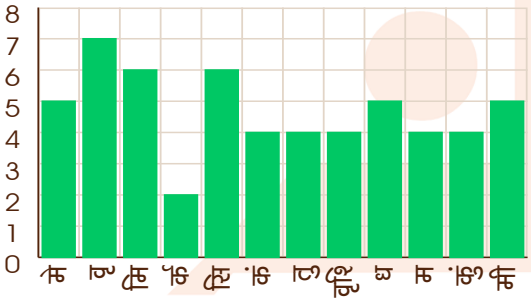

शुक्र

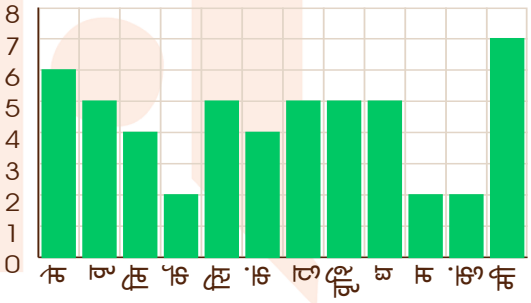

शनि

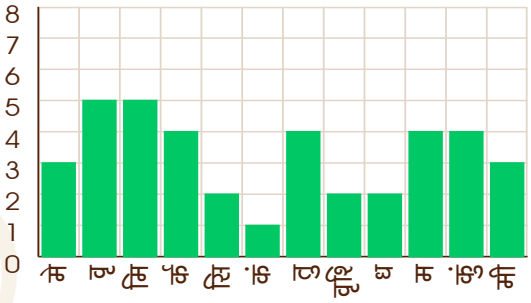

लग्न

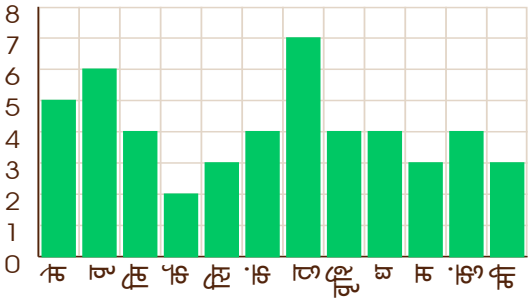

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

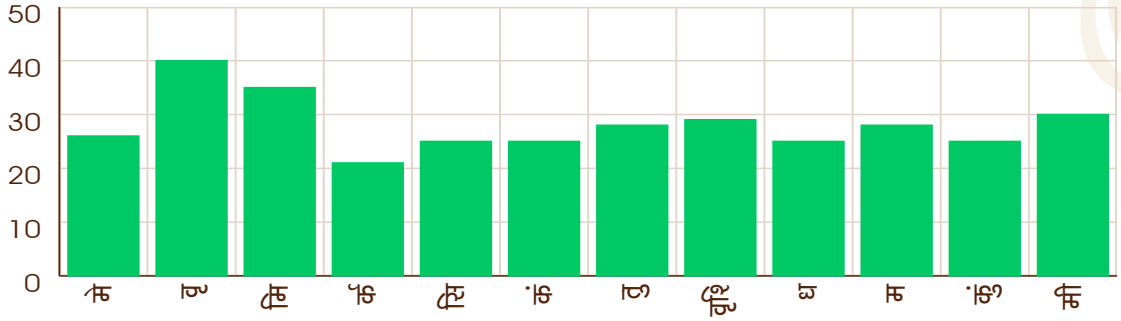

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

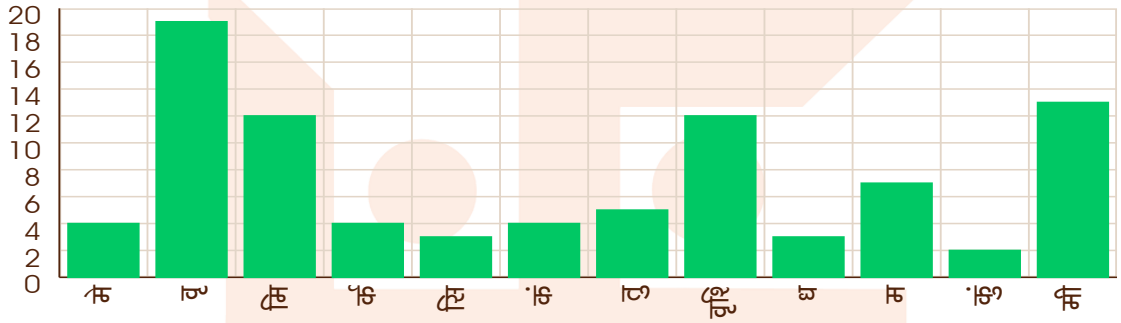

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

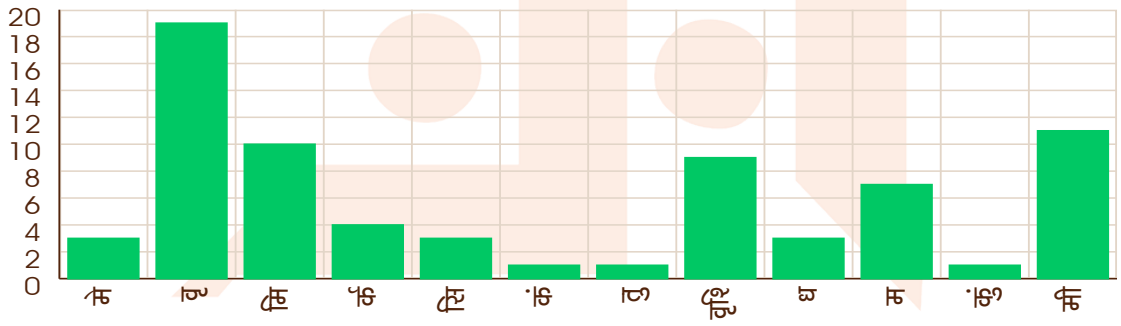

शोध्य पिंड

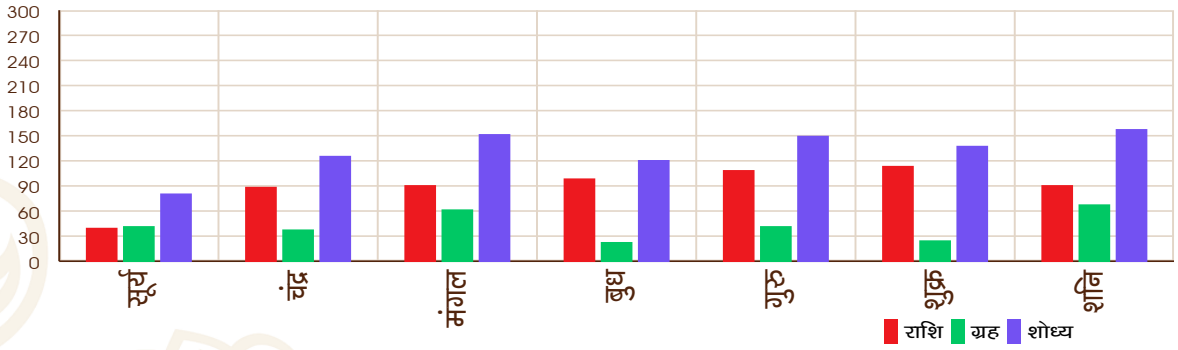

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 9 मास 29 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
11/08/1992		10/06/1997		10/06/2007		10/06/2014		10/06/2032	
10/06/1997		10/06/2007		10/06/2014		10/06/2032		10/06/2048	
	00/00/0000	चंद्र	10/04/1998	मंगल	07/11/2007	राहु	20/02/2017	गुरु	29/07/2034
	00/00/0000	मंगल	09/11/1998	राहु	24/11/2008	गुरु	17/07/2019	शनि	08/02/2037
	11/08/1992	राहु	10/05/2000	गुरु	31/10/2009	शनि	23/05/2022	बुध	17/05/2039
राहु	28/06/1993	गुरु	09/09/2001	शनि	10/12/2010	बुध	09/12/2024	केतु	22/04/2040
गुरु	16/04/1994	शनि	11/04/2003	बुध	07/12/2011	केतु	28/12/2025	शुक्र	22/12/2042
शनि	29/03/1995	बुध	09/09/2004	केतु	04/05/2012	शुक्र	28/12/2028	सूर्य	10/10/2043
बुध	03/02/1996	केतु	10/04/2005	शुक्र	04/07/2013	सूर्य	21/11/2029	चंद्र	08/02/2045
केतु	10/06/1996	शुक्र	10/12/2006	सूर्य	09/11/2013	चंद्र	23/05/2031	मंगल	15/01/2046
शुक्र	10/06/1997	सूर्य	10/06/2007	चंद्र	10/06/2014	मंगल	10/06/2032	राहु	10/06/2048

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
10/06/2048		10/06/2067		10/06/2084		10/06/2091		11/06/2111	
10/06/2067		10/06/2084		10/06/2091		11/06/2111		00/00/0000	
शनि	13/06/2051	बुध	06/11/2069	केतु	06/11/2084	शुक्र	10/10/2094	सूर्य	29/09/2111
बुध	21/02/2054	केतु	03/11/2070	शुक्र	06/01/2086	सूर्य	10/10/2095	चंद्र	30/03/2112
केतु	01/04/2055	शुक्र	03/09/2073	सूर्य	14/05/2086	चंद्र	10/06/2097	मंगल	04/08/2112
शुक्र	01/06/2058	सूर्य	11/07/2074	चंद्र	13/12/2086	मंगल	10/08/2098	राहु	12/08/2112
सूर्य	14/05/2059	चंद्र	10/12/2075	मंगल	11/05/2087	राहु	11/08/2101		00/00/0000
चंद्र	12/12/2060	मंगल	06/12/2076	राहु	28/05/2088	गुरु	11/04/2104		00/00/0000
मंगल	21/01/2062	राहु	26/06/2079	गुरु	04/05/2089	शनि	11/06/2107		00/00/0000
राहु	27/11/2064	गुरु	01/10/2081	शनि	13/06/2090	बुध	11/04/2110		00/00/0000
गुरु	10/06/2067	शनि	10/06/2084	बुध	10/06/2091	केतु	11/06/2111		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 4 वर्ष 9 मा 30 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
11/08/1992		28/06/1993		16/04/1994		29/03/1995		03/02/1996	
28/06/1993		16/04/1994		29/03/1995		03/02/1996		10/06/1996	
राहु	22/09/1992	गुरु	06/08/1993	शनि	10/06/1994	बुध	12/05/1995	केतु	10/02/1996
गुरु	05/11/1992	शनि	21/09/1993	बुध	29/07/1994	केतु	30/05/1995	शुक्र	03/03/1996
शनि	27/12/1992	बुध	02/11/1993	केतु	19/08/1994	शुक्र	21/07/1995	सूर्य	09/03/1996
बुध	11/02/1993	केतु	19/11/1993	शुक्र	16/10/1994	सूर्य	06/08/1995	चंद्र	20/03/1996
केतु	02/03/1993	शुक्र	07/01/1994	सूर्य	02/11/1994	चंद्र	01/09/1995	मंगल	27/03/1996
शुक्र	26/04/1993	सूर्य	21/01/1994	चंद्र	01/12/1994	मंगल	19/09/1995	राहु	15/04/1996
सूर्य	13/05/1993	चंद्र	14/02/1994	मंगल	21/12/1994	राहु	04/11/1995	गुरु	02/05/1996
चंद्र	09/06/1993	मंगल	04/03/1994	राहु	11/02/1995	गुरु	16/12/1995	शनि	23/05/1996
मंगल	28/06/1993	राहु	16/04/1994	गुरु	29/03/1995	शनि	03/02/1996	बुध	10/06/1996

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
10/06/1996		10/06/1997		10/04/1998		09/11/1998		10/05/2000	
10/06/1997		10/04/1998		09/11/1998		10/05/2000		09/09/2001	
शुक्र	10/08/1996	चंद्र	05/07/1997	मंगल	23/04/1998	राहु	31/01/1999	गुरु	14/07/2000
सूर्य	28/08/1996	मंगल	23/07/1997	राहु	25/05/1998	गुरु	14/04/1999	शनि	29/09/2000
चंद्र	27/09/1996	राहु	07/09/1997	गुरु	22/06/1998	शनि	09/07/1999	बुध	07/12/2000
मंगल	19/10/1996	गुरु	17/10/1997	शनि	26/07/1998	बुध	25/09/1999	केतु	05/01/2001
राहु	12/12/1996	शनि	04/12/1997	बुध	25/08/1998	केतु	27/10/1999	शुक्र	27/03/2001
गुरु	30/01/1997	बुध	17/01/1998	केतु	06/09/1998	शुक्र	26/01/2000	सूर्य	20/04/2001
शनि	29/03/1997	केतु	03/02/1998	शुक्र	12/10/1998	सूर्य	23/02/2000	चंद्र	31/05/2001
बुध	20/05/1997	शुक्र	26/03/1998	सूर्य	23/10/1998	चंद्र	08/04/2000	मंगल	28/06/2001
केतु	10/06/1997	सूर्य	10/04/1998	चंद्र	09/11/1998	मंगल	10/05/2000	राहु	09/09/2001

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
09/09/2001		11/04/2003		09/09/2004		10/04/2005		10/12/2006	
11/04/2003		09/09/2004		10/04/2005		10/12/2006		10/06/2007	
शनि	10/12/2001	बुध	23/06/2003	केतु	21/09/2004	शुक्र	20/07/2005	सूर्य	19/12/2006
बुध	02/03/2002	केतु	23/07/2003	शुक्र	27/10/2004	सूर्य	20/08/2005	चंद्र	03/01/2007
केतु	04/04/2002	शुक्र	17/10/2003	सूर्य	07/11/2004	चंद्र	10/10/2005	मंगल	14/01/2007
शुक्र	10/07/2002	सूर्य	12/11/2003	चंद्र	24/11/2004	मंगल	14/11/2005	राहु	10/02/2007
सूर्य	08/08/2002	चंद्र	25/12/2003	मंगल	07/12/2004	राहु	13/02/2006	गुरु	07/03/2007
चंद्र	25/09/2002	मंगल	24/01/2004	राहु	08/01/2005	गुरु	06/05/2006	शनि	04/04/2007
मंगल	29/10/2002	राहु	11/04/2004	गुरु	05/02/2005	शनि	10/08/2006	बुध	30/04/2007
राहु	23/01/2003	गुरु	19/06/2004	शनि	11/03/2005	बुध	04/11/2006	केतु	11/05/2007
गुरु	11/04/2003	शनि	09/09/2004	बुध	10/04/2005	केतु	10/12/2006	शुक्र	10/06/2007

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
10/06/2007		07/11/2007		24/11/2008		31/10/2009		10/12/2010	
07/11/2007		24/11/2008		31/10/2009		10/12/2010		07/12/2011	
मंगल	19/06/2007	राहु	03/01/2008	गुरु	09/01/2009	शनि	03/01/2010	बुध	30/01/2011
राहु	11/07/2007	गुरु	23/02/2008	शनि	03/03/2009	बुध	01/03/2010	केतु	20/02/2011
गुरु	31/07/2007	शनि	24/04/2008	बुध	21/04/2009	केतु	25/03/2010	शुक्र	22/04/2011
शनि	24/08/2007	बुध	17/06/2008	केतु	11/05/2009	शुक्र	31/05/2010	सूर्य	10/05/2011
बुध	14/09/2007	केतु	10/07/2008	शुक्र	06/07/2009	सूर्य	21/06/2010	चंद्र	09/06/2011
केतु	23/09/2007	शुक्र	12/09/2008	सूर्य	24/07/2009	चंद्र	24/07/2010	मंगल	30/06/2011
शुक्र	18/10/2007	सूर्य	01/10/2008	चंद्र	21/08/2009	मंगल	17/08/2010	राहु	23/08/2011
सूर्य	25/10/2007	चंद्र	02/11/2008	मंगल	10/09/2009	राहु	17/10/2010	गुरु	11/10/2011
चंद्र	07/11/2007	मंगल	24/11/2008	राहु	31/10/2009	गुरु	10/12/2010	शनि	07/12/2011

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
07/12/2011		04/05/2012		04/07/2013		09/11/2013		10/06/2014	
04/05/2012		04/07/2013		09/11/2013		10/06/2014		20/02/2017	
केतु	16/12/2011	शुक्र	14/07/2012	सूर्य	11/07/2013	चंद्र	27/11/2013	राहु	05/11/2014
शुक्र	10/01/2012	सूर्य	04/08/2012	चंद्र	21/07/2013	मंगल	09/12/2013	गुरु	17/03/2015
सूर्य	17/01/2012	चंद्र	09/09/2012	मंगल	29/07/2013	राहु	10/01/2014	शनि	20/08/2015
चंद्र	29/01/2012	मंगल	04/10/2012	राहु	17/08/2013	गुरु	08/02/2014	बुध	06/01/2016
मंगल	07/02/2012	राहु	07/12/2012	गुरु	03/09/2013	शनि	13/03/2014	केतु	04/03/2016
राहु	29/02/2012	गुरु	02/02/2013	शनि	23/09/2013	बुध	13/04/2014	शुक्र	15/08/2016
गुरु	20/03/2012	शनि	10/04/2013	बुध	11/10/2013	केतु	25/04/2014	सूर्य	04/10/2016
शनि	13/04/2012	बुध	09/06/2013	केतु	19/10/2013	शुक्र	30/05/2014	चंद्र	25/12/2016
बुध	04/05/2012	केतु	04/07/2013	शुक्र	09/11/2013	सूर्य	10/06/2014	मंगल	20/02/2017

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
20/02/2017		17/07/2019		23/05/2022		09/12/2024		28/12/2025	
17/07/2019		23/05/2022		09/12/2024		28/12/2025		28/12/2028	
गुरु	17/06/2017	शनि	29/12/2019	बुध	02/10/2022	केतु	01/01/2025	शुक्र	28/06/2026
शनि	03/11/2017	बुध	24/05/2020	केतु	25/11/2022	शुक्र	06/03/2025	सूर्य	22/08/2026
बुध	07/03/2018	केतु	24/07/2020	शुक्र	29/04/2023	सूर्य	25/03/2025	चंद्र	22/11/2026
केतु	27/04/2018	शुक्र	13/01/2021	सूर्य	15/06/2023	चंद्र	26/04/2025	मंगल	24/01/2027
शुक्र	20/09/2018	सूर्य	06/03/2021	चंद्र	01/09/2023	मंगल	18/05/2025	राहु	08/07/2027
सूर्य	03/11/2018	चंद्र	01/06/2021	मंगल	25/10/2023	राहु	15/07/2025	गुरु	01/12/2027
चंद्र	15/01/2019	मंगल	01/08/2021	राहु	13/03/2024	गुरु	04/09/2025	शनि	22/05/2028
मंगल	07/03/2019	राहु	04/01/2022	गुरु	15/07/2024	शनि	03/11/2025	बुध	25/10/2028
राहु	17/07/2019	गुरु	23/05/2022	शनि	09/12/2024	बुध	28/12/2025	केतु	28/12/2028

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
28/12/2028		21/11/2029		23/05/2031		10/06/2032		29/07/2034	
21/11/2029		23/05/2031		10/06/2032		29/07/2034		08/02/2037	
सूर्य	13/01/2029	चंद्र	06/01/2030	मंगल	15/06/2031	गुरु	22/09/2032	शनि	22/12/2034
चंद्र	09/02/2029	मंगल	07/02/2030	राहु	11/08/2031	शनि	23/01/2033	बुध	02/05/2035
मंगल	01/03/2029	राहु	30/04/2030	गुरु	01/10/2031	बुध	13/05/2033	केतु	25/06/2035
राहु	19/04/2029	गुरु	12/07/2030	शनि	01/12/2031	केतु	28/06/2033	शुक्र	27/11/2035
गुरु	02/06/2029	शनि	07/10/2030	बुध	24/01/2032	शुक्र	05/11/2033	सूर्य	12/01/2036
शनि	24/07/2029	बुध	23/12/2030	केतु	16/02/2032	सूर्य	14/12/2033	चंद्र	29/03/2036
बुध	08/09/2029	केतु	24/01/2031	शुक्र	20/04/2032	चंद्र	17/02/2034	मंगल	22/05/2036
केतु	27/09/2029	शुक्र	26/04/2031	सूर्य	09/05/2032	मंगल	03/04/2034	राहु	08/10/2036
शुक्र	21/11/2029	सूर्य	23/05/2031	चंद्र	10/06/2032	राहु	29/07/2034	गुरु	08/02/2037

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
08/02/2037		17/05/2039		22/04/2040		22/12/2042		10/10/2043	
17/05/2039		22/04/2040		22/12/2042		10/10/2043		08/02/2045	
बुध	05/06/2037	केतु	06/06/2039	शुक्र	01/10/2040	सूर्य	06/01/2043	चंद्र	20/11/2043
केतु	24/07/2037	शुक्र	02/08/2039	सूर्य	19/11/2040	चंद्र	30/01/2043	मंगल	18/12/2043
शुक्र	09/12/2037	सूर्य	19/08/2039	चंद्र	08/02/2041	मंगल	16/02/2043	राहु	29/02/2044
सूर्य	19/01/2038	चंद्र	16/09/2039	मंगल	06/04/2041	राहु	01/04/2043	गुरु	04/05/2044
चंद्र	29/03/2038	मंगल	06/10/2039	राहु	30/08/2041	गुरु	10/05/2043	शनि	20/07/2044
मंगल	16/05/2038	राहु	26/11/2039	गुरु	07/01/2042	शनि	25/06/2043	बुध	27/09/2044
राहु	18/09/2038	गुरु	11/01/2040	शनि	10/06/2042	बुध	05/08/2043	केतु	26/10/2044
गुरु	06/01/2039	शनि	05/03/2040	बुध	26/10/2042	केतु	22/08/2043	शुक्र	15/01/2045
शनि	17/05/2039	बुध	22/04/2040	केतु	22/12/2042	शुक्र	10/10/2043	सूर्य	08/02/2045

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
08/02/2045		15/01/2046		10/06/2048		13/06/2051		21/02/2054	
15/01/2046		10/06/2048		13/06/2051		21/02/2054		01/04/2055	
मंगल	28/02/2045	राहु	27/05/2046	शनि	01/12/2048	बुध	31/10/2051	केतु	16/03/2054
राहु	20/04/2045	गुरु	20/09/2046	बुध	05/05/2049	केतु	27/12/2051	शुक्र	23/05/2054
गुरु	05/06/2045	शनि	06/02/2047	केतु	08/07/2049	शुक्र	08/06/2052	सूर्य	12/06/2054
शनि	29/07/2045	बुध	10/06/2047	शुक्र	08/01/2050	सूर्य	27/07/2052	चंद्र	16/07/2054
बुध	15/09/2045	केतु	01/08/2047	सूर्य	03/03/2050	चंद्र	17/10/2052	मंगल	08/08/2054
केतु	05/10/2045	शुक्र	25/12/2047	चंद्र	03/06/2050	मंगल	13/12/2052	राहु	08/10/2054
शुक्र	01/12/2045	सूर्य	06/02/2048	मंगल	06/08/2050	राहु	10/05/2053	गुरु	01/12/2054
सूर्य	18/12/2045	चंद्र	20/04/2048	राहु	18/01/2051	गुरु	18/09/2053	शनि	03/02/2055
चंद्र	15/01/2046	मंगल	10/06/2048	गुरु	13/06/2051	शनि	21/02/2054	बुध	01/04/2055

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
01/04/2055		01/06/2058		14/05/2059		12/12/2060		21/01/2062	
01/06/2058		14/05/2059		12/12/2060		21/01/2062		27/11/2064	
शुक्र	11/10/2055	सूर्य	18/06/2058	चंद्र	01/07/2059	मंगल	05/01/2061	राहु	26/06/2062
सूर्य	08/12/2055	चंद्र	17/07/2058	मंगल	04/08/2059	राहु	07/03/2061	गुरु	12/11/2062
चंद्र	13/03/2056	मंगल	07/08/2058	राहु	30/10/2059	गुरु	30/04/2061	शनि	26/04/2063
मंगल	20/05/2056	राहु	28/09/2058	गुरु	15/01/2060	शनि	03/07/2061	बुध	20/09/2063
राहु	09/11/2056	गुरु	13/11/2058	शनि	15/04/2060	बुध	29/08/2061	केतु	20/11/2063
गुरु	13/04/2057	शनि	07/01/2059	बुध	06/07/2060	केतु	22/09/2061	शुक्र	12/05/2064
शनि	13/10/2057	बुध	25/02/2059	केतु	09/08/2060	शुक्र	28/11/2061	सूर्य	03/07/2064
बुध	26/03/2058	केतु	17/03/2059	शुक्र	13/11/2060	सूर्य	18/12/2061	चंद्र	27/09/2064
केतु	01/06/2058	शुक्र	14/05/2059	सूर्य	12/12/2060	चंद्र	21/01/2062	मंगल	27/11/2064

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
27/11/2064		10/06/2067		06/11/2069		03/11/2070		03/09/2073	
10/06/2067		06/11/2069		03/11/2070		03/09/2073		11/07/2074	
गुरु	30/03/2065	बुध	13/10/2067	केतु	27/11/2069	शुक्र	25/04/2071	सूर्य	19/09/2073
शनि	24/08/2065	केतु	03/12/2067	शुक्र	27/01/2070	सूर्य	15/06/2071	चंद्र	15/10/2073
बुध	02/01/2066	शुक्र	28/04/2068	सूर्य	14/02/2070	चंद्र	10/09/2071	मंगल	02/11/2073
केतु	25/02/2066	सूर्य	11/06/2068	चंद्र	16/03/2070	मंगल	09/11/2071	राहु	18/12/2073
शुक्र	29/07/2066	चंद्र	23/08/2068	मंगल	06/04/2070	राहु	12/04/2072	गुरु	29/01/2074
सूर्य	14/09/2066	मंगल	14/10/2068	राहु	30/05/2070	गुरु	28/08/2072	शनि	19/03/2074
चंद्र	30/11/2066	राहु	22/02/2069	गुरु	18/07/2070	शनि	08/02/2073	बुध	02/05/2074
मंगल	23/01/2067	गुरु	20/06/2069	शनि	13/09/2070	बुध	05/07/2073	केतु	20/05/2074
राहु	10/06/2067	शनि	06/11/2069	बुध	03/11/2070	केतु	03/09/2073	शुक्र	11/07/2074

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
11/07/2074		10/12/2075		06/12/2076		26/06/2079		01/10/2081	
10/12/2075		06/12/2076		26/06/2079		01/10/2081		10/06/2084	
चंद्र	23/08/2074	मंगल	31/12/2075	राहु	25/04/2077	गुरु	14/10/2079	शनि	05/03/2082
मंगल	22/09/2074	राहु	23/02/2076	गुरु	27/08/2077	शनि	22/02/2080	बुध	22/07/2082
राहु	09/12/2074	गुरु	12/04/2076	शनि	22/01/2078	बुध	18/06/2080	केतु	18/09/2082
गुरु	15/02/2075	शनि	08/06/2076	बुध	03/06/2078	केतु	06/08/2080	शुक्र	01/03/2083
शनि	08/05/2075	बुध	29/07/2076	केतु	27/07/2078	शुक्र	22/12/2080	सूर्य	19/04/2083
बुध	21/07/2075	केतु	20/08/2076	शुक्र	29/12/2078	सूर्य	01/02/2081	चंद्र	10/07/2083
केतु	20/08/2075	शुक्र	19/10/2076	सूर्य	14/02/2079	चंद्र	11/04/2081	मंगल	05/09/2083
शुक्र	14/11/2075	सूर्य	06/11/2076	चंद्र	02/05/2079	मंगल	29/05/2081	राहु	31/01/2084
सूर्य	10/12/2075	चंद्र	06/12/2076	मंगल	26/06/2079	राहु	01/10/2081	गुरु	10/06/2084

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
10/06/2084		06/11/2084		06/01/2086		14/05/2086		13/12/2086	
06/11/2084		06/01/2086		14/05/2086		13/12/2086		11/05/2087	
केतु	18/06/2084	शुक्र	16/01/2085	सूर्य	12/01/2086	चंद्र	01/06/2086	मंगल	22/12/2086
शुक्र	13/07/2084	सूर्य	06/02/2085	चंद्र	23/01/2086	मंगल	13/06/2086	राहु	13/01/2087
सूर्य	21/07/2084	चंद्र	14/03/2085	मंगल	30/01/2086	राहु	15/07/2086	गुरु	02/02/2087
चंद्र	02/08/2084	मंगल	07/04/2085	राहु	19/02/2086	गुरु	12/08/2086	शनि	25/02/2087
मंगल	11/08/2084	राहु	10/06/2085	गुरु	08/03/2086	शनि	15/09/2086	बुध	19/03/2087
राहु	02/09/2084	गुरु	06/08/2085	शनि	28/03/2086	बुध	15/10/2086	केतु	27/03/2087
गुरु	22/09/2084	शनि	13/10/2085	बुध	15/04/2086	केतु	28/10/2086	शुक्र	21/04/2087
शनि	16/10/2084	बुध	12/12/2085	केतु	22/04/2086	शुक्र	02/12/2086	सूर्य	29/04/2087
बुध	06/11/2084	केतु	06/01/2086	शुक्र	14/05/2086	सूर्य	13/12/2086	चंद्र	11/05/2087

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
11/05/2087		28/05/2088		04/05/2089		13/06/2090		10/06/2091	
28/05/2088		04/05/2089		13/06/2090		10/06/2091		10/10/2094	
राहु	07/07/2087	गुरु	13/07/2088	शनि	07/07/2089	बुध	04/08/2090	शुक्र	30/12/2091
गुरु	28/08/2087	शनि	05/09/2088	बुध	03/09/2089	केतु	25/08/2090	सूर्य	29/02/2092
शनि	27/10/2087	बुध	23/10/2088	केतु	26/09/2089	शुक्र	24/10/2090	चंद्र	10/06/2092
बुध	21/12/2087	केतु	12/11/2088	शुक्र	03/12/2089	सूर्य	11/11/2090	मंगल	20/08/2092
केतु	12/01/2088	शुक्र	08/01/2089	सूर्य	23/12/2089	चंद्र	11/12/2090	राहु	18/02/2093
शुक्र	16/03/2088	सूर्य	25/01/2089	चंद्र	26/01/2090	मंगल	01/01/2091	गुरु	31/07/2093
सूर्य	04/04/2088	चंद्र	22/02/2089	मंगल	18/02/2090	राहु	25/02/2091	शनि	08/02/2094
चंद्र	06/05/2088	मंगल	14/03/2089	राहु	20/04/2090	गुरु	14/04/2091	बुध	31/07/2094
मंगल	28/05/2088	राहु	04/05/2089	गुरु	13/06/2090	शनि	10/06/2091	केतु	10/10/2094

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
10/10/2094		10/10/2095		10/06/2097		10/08/2098		11/08/2101	
10/10/2095		10/06/2097		10/08/2098		11/08/2101		11/04/2104	
सूर्य	28/10/2094	चंद्र	30/11/2095	मंगल	05/07/2097	राहु	21/01/2099	गुरु	19/12/2101
चंद्र	28/11/2094	मंगल	04/01/2096	राहु	07/09/2097	गुरु	16/06/2099	शनि	22/05/2102
मंगल	19/12/2094	राहु	05/04/2096	गुरु	02/11/2097	शनि	07/12/2099	बुध	07/10/2102
राहु	12/02/2095	गुरु	25/06/2096	शनि	09/01/2098	बुध	11/05/2100	केतु	03/12/2102
गुरु	01/04/2095	शनि	29/09/2096	बुध	10/03/2098	केतु	14/07/2100	शुक्र	14/05/2103
शनि	29/05/2095	बुध	24/12/2096	केतु	04/04/2098	शुक्र	13/01/2101	सूर्य	02/07/2103
बुध	20/07/2095	केतु	29/01/2097	शुक्र	14/06/2098	सूर्य	09/03/2101	चंद्र	21/09/2103
केतु	10/08/2095	शुक्र	10/05/2097	सूर्य	06/07/2098	चंद्र	08/06/2101	मंगल	17/11/2103
शुक्र	10/10/2095	सूर्य	10/06/2097	चंद्र	10/08/2098	मंगल	11/08/2101	राहु	11/04/2104

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शुक्र - शुक्र	
28/12/2025 06:48	
28/06/2026 21:48	
शुक्र	27/01/2026 17:18
सूर्य	05/02/2026 20:27
चंद्र	21/02/2026 01:42
मंगल	03/03/2026 17:23
राहु	31/03/2026 02:50
गुरु	24/04/2026 11:14
शनि	23/05/2026 09:12
बुध	18/06/2026 06:08
केतु	28/06/2026 21:48

राहु - शुक्र - सूर्य	
28/06/2026 21:48	
22/08/2026 16:42	
सूर्य	01/07/2026 15:33
चंद्र	06/07/2026 05:08
मंगल	09/07/2026 09:50
राहु	17/07/2026 15:04
गुरु	24/07/2026 22:23
शनि	02/08/2026 14:35
बुध	10/08/2026 08:51
केतु	13/08/2026 13:33
शुक्र	22/08/2026 16:42

राहु - शुक्र - चंद्र	
22/08/2026 16:42	
22/11/2026 00:12	
चंद्र	30/08/2026 07:20
मंगल	04/09/2026 15:10
राहु	18/09/2026 07:54
गुरु	30/09/2026 12:06
शनि	14/10/2026 23:05
बुध	27/10/2026 21:33
केतु	02/11/2026 05:23
शुक्र	17/11/2026 10:38
सूर्य	22/11/2026 00:12

राहु - शुक्र - मंगल	
22/11/2026 00:12	
24/01/2027 22:15	
मंगल	25/11/2026 17:42
राहु	05/12/2026 07:48
गुरु	13/12/2026 20:20
शनि	23/12/2026 23:14
बुध	02/01/2027 00:33
केतु	05/01/2027 18:02
शुक्र	16/01/2027 09:43
सूर्य	19/01/2027 14:25
चंद्र	24/01/2027 22:15

राहु - शुक्र - राहु	
24/01/2027 22:15	
08/07/2027 06:57	
राहु	18/02/2027 13:58
गुरु	12/03/2027 11:55
शनि	07/04/2027 12:30
बुध	30/04/2027 19:20
केतु	10/05/2027 09:26
शुक्र	06/06/2027 18:53
सूर्य	15/06/2027 00:07
चंद्र	28/06/2027 16:51
मंगल	08/07/2027 06:57

राहु - शुक्र - गुरु	
08/07/2027 06:57	
01/12/2027 09:21	
गुरु	27/07/2027 18:29
शनि	19/08/2027 21:39
बुध	09/09/2027 14:24
केतु	18/09/2027 02:56
शुक्र	12/10/2027 11:20
सूर्य	19/10/2027 18:39
चंद्र	31/10/2027 22:51
मंगल	09/11/2027 11:24
राहु	01/12/2027 09:21

राहु - शुक्र - शनि	
01/12/2027 09:21	
22/05/2028 21:12	
शनि	28/12/2027 20:38
बुध	22/01/2028 10:31
केतु	01/02/2028 13:24
शुक्र	01/03/2028 11:23
सूर्य	10/03/2028 03:34
चंद्र	24/03/2028 14:33
मंगल	03/04/2028 17:27
राहु	29/04/2028 18:02
गुरु	22/05/2028 21:12

राहु - शुक्र - बुध	
22/05/2028 21:12	
25/10/2028 02:45	
बुध	13/06/2028 21:00
केतु	22/06/2028 22:19
शुक्र	18/07/2028 19:14
सूर्य	26/07/2028 13:31
चंद्र	08/08/2028 11:59
मंगल	17/08/2028 13:18
राहु	09/09/2028 20:08
गुरु	30/09/2028 12:53
शनि	25/10/2028 02:45

राहु - शुक्र - केतु	
25/10/2028 02:45	
28/12/2028 00:48	
केतु	28/10/2028 20:15
शुक्र	08/11/2028 11:55
सूर्य	11/11/2028 16:37
चंद्र	17/11/2028 00:27
मंगल	20/11/2028 17:57
राहु	30/11/2028 08:03
गुरु	08/12/2028 20:35
शनि	18/12/2028 23:29
बुध	28/12/2028 00:48

राहु - सूर्य - सूर्य	
28/12/2028 00:48	
13/01/2029 11:17	
सूर्य	28/12/2028 20:32
चंद्र	30/12/2028 05:24
मंगल	31/12/2028 04:25
राहु	02/01/2029 15:35
गुरु	04/01/2029 20:11
शनि	07/01/2029 10:38
बुध	09/01/2029 18:31
केतु	10/01/2029 17:32
शुक्र	13/01/2029 11:17

राहु - सूर्य - चंद्र	
13/01/2029 11:17	
09/02/2029 20:44	
चंद्र	15/01/2029 18:04
मंगल	17/01/2029 08:25
राहु	21/01/2029 11:02
गुरु	25/01/2029 02:42
शनि	29/01/2029 10:47
बुध	02/02/2029 07:56
केतु	03/02/2029 22:17
शुक्र	08/02/2029 11:51
सूर्य	09/02/2029 20:44

राहु - सूर्य - मंगल	
09/02/2029 20:44	
01/03/2029 00:56	
मंगल	10/02/2029 23:34
राहु	13/02/2029 20:36
गुरु	16/02/2029 09:58
शनि	19/02/2029 10:50
बुध	22/02/2029 04:02
केतु	23/02/2029 06:53
शुक्र	26/02/2029 11:35
सूर्य	27/02/2029 10:35
चंद्र	01/03/2029 00:56

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - सूर्य - राहु		राहु - सूर्य - गुरु		राहु - सूर्य - शनि		राहु - सूर्य - बुध	
01/03/2029 00:56		19/04/2029 08:21		02/06/2029 04:16		24/07/2029 05:26	
19/04/2029 08:21		02/06/2029 04:16		24/07/2029 05:26		08/09/2029 19:05	
राहु	08/03/2029 10:27	गुरु	25/04/2029 04:36	शनि	10/06/2029 10:03	बुध	30/07/2029 19:46
गुरु	15/03/2029 00:14	शनि	02/05/2029 03:10	बुध	17/06/2029 19:01	केतु	02/08/2029 12:58
शनि	22/03/2029 19:37	बुध	08/05/2029 08:11	केतु	20/06/2029 19:53	शुक्र	10/08/2029 07:14
बुध	29/03/2029 19:16	केतु	10/05/2029 21:33	शुक्र	29/06/2029 12:05	सूर्य	12/08/2029 15:07
केतु	01/04/2029 16:18	शुक्र	18/05/2029 04:52	सूर्य	02/07/2029 02:32	चंद्र	16/08/2029 12:16
शुक्र	09/04/2029 21:32	सूर्य	20/05/2029 09:28	चंद्र	06/07/2029 10:38	मंगल	19/08/2029 05:27
सूर्य	12/04/2029 08:42	चंद्र	24/05/2029 01:07	मंगल	09/07/2029 11:30	राहु	26/08/2029 05:06
चंद्र	16/04/2029 11:19	मंगल	26/05/2029 14:29	राहु	17/07/2029 06:52	गुरु	01/09/2029 10:08
मंगल	19/04/2029 08:21	राहु	02/06/2029 04:16	गुरु	24/07/2029 05:26	शनि	08/09/2029 19:05

राहु - सूर्य - केतु		राहु - सूर्य - शुक्र		राहु - चंद्र - चंद्र		राहु - चंद्र - मंगल	
08/09/2029 19:05		27/09/2029 23:18		21/11/2029 18:12		06/01/2030 09:57	
27/09/2029 23:18		21/11/2029 18:12		06/01/2030 09:57		07/02/2030 08:59	
केतु	09/09/2029 21:56	शुक्र	07/10/2029 02:27	चंद्र	25/11/2029 13:31	मंगल	08/01/2030 06:42
शुक्र	13/09/2029 02:38	सूर्य	09/10/2029 20:12	मंगल	28/11/2029 05:26	राहु	13/01/2030 01:45
सूर्य	14/09/2029 01:39	चंद्र	14/10/2029 09:47	राहु	05/12/2029 01:48	गुरु	17/01/2030 08:01
चंद्र	15/09/2029 16:00	मंगल	17/10/2029 14:29	गुरु	11/12/2029 03:54	शनि	22/01/2030 09:28
मंगल	16/09/2029 18:51	राहु	25/10/2029 19:43	शनि	18/12/2029 09:24	बुध	26/01/2030 22:08
राहु	19/09/2029 15:53	गुरु	02/11/2029 03:02	बुध	24/12/2029 20:37	केतु	28/01/2030 18:52
गुरु	22/09/2029 05:14	शनि	10/11/2029 19:14	केतु	27/12/2029 12:33	शुक्र	03/02/2030 02:43
शनि	25/09/2029 06:07	बुध	18/11/2029 13:30	शुक्र	04/01/2030 03:10	सूर्य	04/02/2030 17:04
बुध	27/09/2029 23:18	केतु	21/11/2029 18:12	सूर्य	06/01/2030 09:57	चंद्र	07/02/2030 08:59

राहु - चंद्र - राहु		राहु - चंद्र - गुरु		राहु - चंद्र - शनि		राहु - चंद्र - बुध	
07/02/2030 08:59		30/04/2030 13:20		12/07/2030 14:32		07/10/2030 08:27	
30/04/2030 13:20		12/07/2030 14:32		07/10/2030 08:27		23/12/2030 23:14	
राहु	19/02/2030 16:50	गुरु	10/05/2030 07:05	शनि	26/07/2030 08:10	बुध	18/10/2030 08:21
गुरु	02/03/2030 15:49	शनि	21/05/2030 20:41	बुध	07/08/2030 15:07	केतु	22/10/2030 21:01
शनि	15/03/2030 16:06	बुध	01/06/2030 05:03	केतु	12/08/2030 16:33	शुक्र	04/11/2030 19:28
बुध	27/03/2030 07:31	केतु	05/06/2030 11:19	शुक्र	27/08/2030 03:33	सूर्य	08/11/2030 16:37
केतु	01/04/2030 02:34	शुक्र	17/06/2030 15:31	सूर्य	31/08/2030 11:38	चंद्र	15/11/2030 03:51
शुक्र	14/04/2030 19:18	सूर्य	21/06/2030 07:11	चंद्र	07/09/2030 17:08	मंगल	19/11/2030 16:30
सूर्य	18/04/2030 21:55	चंद्र	27/06/2030 09:17	मंगल	12/09/2030 18:35	राहु	01/12/2030 07:55
चंद्र	25/04/2030 18:17	मंगल	01/07/2030 15:33	राहु	25/09/2030 18:52	गुरु	11/12/2030 16:18
मंगल	30/04/2030 13:20	राहु	12/07/2030 14:32	गुरु	07/10/2030 08:27	शनि	23/12/2030 23:14

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - चंद्र - केतु		राहु - चंद्र - शुक्र		राहु - चंद्र - सूर्य		राहु - मंगल - मंगल	
23/12/2030 23:14		24/01/2031 22:15		26/04/2031 05:45		23/05/2031 15:12	
24/01/2031 22:15		26/04/2031 05:45		23/05/2031 15:12		15/06/2031 00:07	
केतु	25/12/2030 19:58	शुक्र	09/02/2031 03:30	सूर्य	27/04/2031 14:38	मंगल	24/05/2031 22:32
शुक्र	31/12/2030 03:49	सूर्य	13/02/2031 17:05	चंद्र	29/04/2031 21:25	राहु	28/05/2031 07:04
सूर्य	01/01/2031 18:10	चंद्र	21/02/2031 07:42	मंगल	01/05/2031 11:46	गुरु	31/05/2031 06:39
चंद्र	04/01/2031 10:05	मंगल	26/02/2031 15:33	राहु	05/05/2031 14:23	शनि	03/06/2031 19:40
मंगल	06/01/2031 06:49	राहु	12/03/2031 08:16	गुरु	09/05/2031 06:03	बुध	06/06/2031 23:44
राहु	11/01/2031 01:53	गुरु	24/03/2031 12:28	शनि	13/05/2031 14:08	केतु	08/06/2031 07:03
गुरु	15/01/2031 08:09	शनि	07/04/2031 23:27	बुध	17/05/2031 11:17	शुक्र	12/06/2031 00:32
शनि	20/01/2031 09:36	बुध	20/04/2031 21:55	केतु	19/05/2031 01:38	सूर्य	13/06/2031 03:23
बुध	24/01/2031 22:15	केतु	26/04/2031 05:45	शुक्र	23/05/2031 15:12	चंद्र	15/06/2031 00:07

राहु - मंगल - राहु		राहु - मंगल - गुरु		राहु - मंगल - शनि		राहु - मंगल - बुध	
15/06/2031 00:07		11/08/2031 12:46		01/10/2031 16:01		01/12/2031 09:21	
11/08/2031 12:46		01/10/2031 16:01		01/12/2031 09:21		24/01/2032 17:18	
राहु	23/06/2031 15:13	गुरु	18/08/2031 08:24	शनि	11/10/2031 06:45	बुध	09/12/2031 02:05
गुरु	01/07/2031 07:18	शनि	26/08/2031 10:43	बुध	19/10/2031 21:13	केतु	12/12/2031 06:09
शनि	10/07/2031 09:55	बुध	02/09/2031 16:34	केतु	23/10/2031 10:13	शुक्र	21/12/2031 07:28
बुध	18/07/2031 13:30	केतु	05/09/2031 16:10	शुक्र	02/11/2031 13:07	सूर्य	24/12/2031 00:40
केतु	21/07/2031 22:02	शुक्र	14/09/2031 04:42	सूर्य	05/11/2031 13:59	चंद्र	28/12/2031 13:20
शुक्र	31/07/2031 12:09	सूर्य	16/09/2031 18:04	चंद्र	10/11/2031 15:26	मंगल	31/12/2031 17:23
सूर्य	03/08/2031 09:11	चंद्र	21/09/2031 00:20	मंगल	14/11/2031 04:26	राहु	08/01/2032 20:59
चंद्र	08/08/2031 04:14	मंगल	23/09/2031 23:55	राहु	23/11/2031 07:03	गुरु	16/01/2032 02:50
मंगल	11/08/2031 12:46	राहु	01/10/2031 16:01	गुरु	01/12/2031 09:21	शनि	24/01/2032 17:18

राहु - मंगल - केतु		राहु - मंगल - शुक्र		राहु - मंगल - सूर्य		राहु - मंगल - चंद्र	
24/01/2032 17:18		16/02/2032 02:13		20/04/2032 00:16		09/05/2032 04:29	
16/02/2032 02:13		20/04/2032 00:16		09/05/2032 04:29		10/06/2032 03:30	
केतु	26/01/2032 00:37	शुक्र	26/02/2032 17:53	सूर्य	20/04/2032 23:17	चंद्र	11/05/2032 20:24
शुक्र	29/01/2032 18:06	सूर्य	29/02/2032 22:36	चंद्र	22/04/2032 13:38	मंगल	13/05/2032 17:09
सूर्य	30/01/2032 20:57	चंद्र	06/03/2032 06:26	मंगल	23/04/2032 16:28	राहु	18/05/2032 12:12
चंद्र	01/02/2032 17:42	मंगल	09/03/2032 23:55	राहु	26/04/2032 13:30	गुरु	22/05/2032 18:28
मंगल	03/02/2032 01:01	राहु	19/03/2032 14:01	गुरु	29/04/2032 02:52	शनि	27/05/2032 19:55
राहु	06/02/2032 09:33	गुरु	28/03/2032 02:34	शनि	02/05/2032 03:44	बुध	01/06/2032 08:34
गुरु	09/02/2032 09:08	शनि	07/04/2032 05:27	बुध	04/05/2032 20:56	केतु	03/06/2032 05:19
शनि	12/02/2032 22:09	बुध	16/04/2032 06:47	केतु	05/05/2032 23:47	शुक्र	08/06/2032 13:09
बुध	16/02/2032 02:13	केतु	20/04/2032 00:16	शुक्र	09/05/2032 04:29	सूर्य	10/06/2032 03:30

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - गुरु - गुरु	
10/06/2032 03:30	
22/09/2032 00:57	
गुरु	23/06/2032 23:58
शनि	10/07/2032 10:46
बुध	25/07/2032 04:00
केतु	31/07/2032 05:27
शुक्र	17/08/2032 13:01
सूर्य	22/08/2032 17:42
चंद्र	31/08/2032 09:29
मंगल	06/09/2032 10:56
राहु	22/09/2032 00:57

गुरु - गुरु - शनि	
22/09/2032 00:57	
23/01/2033 09:54	
शनि	11/10/2032 13:46
बुध	29/10/2032 01:14
केतु	05/11/2032 05:57
शुक्र	25/11/2032 19:27
सूर्य	01/12/2032 23:30
चंद्र	12/12/2032 06:15
मंगल	19/12/2032 10:58
राहु	06/01/2033 23:07
गुरु	23/01/2033 09:54

गुरु - गुरु - बुध	
23/01/2033 09:54	
13/05/2033 19:11	
बुध	08/02/2033 01:13
केतु	14/02/2033 11:46
शुक्र	04/03/2033 21:19
सूर्य	10/03/2033 09:46
चंद्र	19/03/2033 14:33
मंगल	26/03/2033 01:05
राहु	11/04/2033 14:29
गुरु	26/04/2033 07:43
शनि	13/05/2033 19:11

गुरु - गुरु - केतु	
13/05/2033 19:11	
28/06/2033 06:04	
केतु	16/05/2033 10:49
शुक्र	24/05/2033 00:38
सूर्य	26/05/2033 07:11
चंद्र	30/05/2033 02:05
मंगल	01/06/2033 17:43
राहु	08/06/2033 13:21
गुरु	14/06/2033 14:48
शनि	21/06/2033 19:31
बुध	28/06/2033 06:04

गुरु - गुरु - शुक्र	
28/06/2033 06:04	
05/11/2033 02:52	
शुक्र	19/07/2033 21:32
सूर्य	26/07/2033 09:22
चंद्र	06/08/2033 05:06
मंगल	13/08/2033 18:55
राहु	02/09/2033 06:26
गुरु	19/09/2033 14:01
शनि	10/10/2033 03:30
बुध	28/10/2033 13:03
केतु	05/11/2033 02:52

गुरु - गुरु - सूर्य	
05/11/2033 02:52	
14/12/2033 01:54	
सूर्य	07/11/2033 01:37
चंद्र	10/11/2033 07:32
मंगल	12/11/2033 14:05
राहु	18/11/2033 10:20
गुरु	23/11/2033 15:01
शनि	29/11/2033 19:03
बुध	05/12/2033 07:31
केतु	07/12/2033 14:04
शुक्र	14/12/2033 01:54

गुरु - गुरु - चंद्र	
14/12/2033 01:54	
17/02/2034 00:18	
चंद्र	19/12/2033 11:46
मंगल	23/12/2033 06:41
राहु	02/01/2034 00:26
गुरु	10/01/2034 16:14
शनि	20/01/2034 22:58
बुध	30/01/2034 03:45
केतु	02/02/2034 22:39
शुक्र	13/02/2034 18:23
सूर्य	17/02/2034 00:18

गुरु - गुरु - मंगल	
17/02/2034 00:18	
03/04/2034 11:11	
मंगल	19/02/2034 15:56
राहु	26/02/2034 11:34
गुरु	04/03/2034 13:01
शनि	11/03/2034 17:45
बुध	18/03/2034 04:17
केतु	20/03/2034 19:55
शुक्र	28/03/2034 09:44
सूर्य	30/03/2034 16:17
चंद्र	03/04/2034 11:11

गुरु - गुरु - राहु	
03/04/2034 11:11	
29/07/2034 08:18	
राहु	20/04/2034 23:57
गुरु	06/05/2034 13:58
शनि	25/05/2034 02:07
बुध	10/06/2034 15:30
केतु	17/06/2034 11:08
शुक्र	06/07/2034 22:39
सूर्य	12/07/2034 18:55
चंद्र	22/07/2034 12:40
मंगल	29/07/2034 08:18

गुरु - शनि - शनि	
29/07/2034 08:18	
22/12/2034 20:27	
शनि	21/08/2034 13:02
बुध	11/09/2034 07:09
केतु	19/09/2034 20:15
शुक्र	14/10/2034 06:17
सूर्य	21/10/2034 14:05
चंद्र	02/11/2034 19:06
मंगल	11/11/2034 08:12
राहु	03/12/2034 07:38
गुरु	22/12/2034 20:27

गुरु - शनि - बुध	
22/12/2034 20:27	
02/05/2035 22:28	
बुध	10/01/2035 10:08
केतु	18/01/2035 01:39
शुक्र	08/02/2035 21:59
सूर्य	15/02/2035 11:17
चंद्र	26/02/2035 09:27
मंगल	06/03/2035 00:58
राहु	25/03/2035 16:53
गुरु	12/04/2035 04:21
शनि	02/05/2035 22:28

गुरु - शनि - केतु	
02/05/2035 22:28	
25/06/2035 21:53	
केतु	06/05/2035 02:02
शुक्र	15/05/2035 01:56
सूर्य	17/05/2035 18:42
चंद्र	22/05/2035 06:39
मंगल	25/05/2035 10:13
राहु	02/06/2035 12:32
गुरु	09/06/2035 17:16
शनि	18/06/2035 06:22
बुध	25/06/2035 21:53

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - शुक्र - शुक्र - शुक्र	
28/12/2025 06:48	
27/01/2026 17:18	
शुक्र	02/01/2026 08:33
सूर्य	03/01/2026 21:05
चंद्र	06/01/2026 09:57
मंगल	08/01/2026 04:34
राहु	12/01/2026 18:09
गुरु	16/01/2026 19:33
शनि	21/01/2026 15:12
बुध	25/01/2026 22:42
केतु	27/01/2026 17:18

राहु - शुक्र - शुक्र - सूर्य	
27/01/2026 17:18	
05/02/2026 20:27	
सूर्य	28/01/2026 04:16
चंद्र	28/01/2026 22:32
मंगल	29/01/2026 11:19
राहु	30/01/2026 20:11
गुरु	01/02/2026 01:24
शनि	02/02/2026 12:06
बुध	03/02/2026 19:09
केतु	04/02/2026 07:56
शुक्र	05/02/2026 20:27

राहु - शुक्र - शुक्र - चंद्र	
05/02/2026 20:27	
21/02/2026 01:42	
चंद्र	07/02/2026 02:54
मंगल	08/02/2026 00:12
राहु	10/02/2026 06:59
गुरु	12/02/2026 07:41
शनि	14/02/2026 17:31
बुध	16/02/2026 21:16
केतु	17/02/2026 18:34
शुक्र	20/02/2026 07:27
सूर्य	21/02/2026 01:42

राहु - शुक्र - शुक्र - मंगल	
21/02/2026 01:42	
03/03/2026 17:23	
मंगल	21/02/2026 16:37
राहु	23/02/2026 06:58
गुरु	24/02/2026 17:04
शनि	26/02/2026 09:33
बुध	27/02/2026 21:46
केतु	28/02/2026 12:41
शुक्र	02/03/2026 07:17
सूर्य	02/03/2026 20:04
चंद्र	03/03/2026 17:23

राहु - शुक्र - शुक्र - राहु	
03/03/2026 17:23	
31/03/2026 02:50	
राहु	07/03/2026 20:00
गुरु	11/03/2026 11:40
शनि	15/03/2026 19:45
बुध	19/03/2026 16:54
केतु	21/03/2026 07:15
शुक्र	25/03/2026 20:49
सूर्य	27/03/2026 05:42
चंद्र	29/03/2026 12:29
मंगल	31/03/2026 02:50

राहु - शुक्र - शुक्र - गुरु	
31/03/2026 02:50	
24/04/2026 11:14	
गुरु	03/04/2026 08:45
शनि	07/04/2026 05:17
बुध	10/04/2026 16:04
केतु	12/04/2026 02:10
शुक्र	16/04/2026 03:34
सूर्य	17/04/2026 08:47
चंद्र	19/04/2026 09:29
मंगल	20/04/2026 19:34
राहु	24/04/2026 11:14

राहु - शुक्र - शुक्र - शनि	
24/04/2026 11:14	
23/05/2026 09:12	
शनि	29/04/2026 01:07
बुध	03/05/2026 03:25
केतु	04/05/2026 19:54
शुक्र	09/05/2026 15:34
सूर्य	11/05/2026 02:16
चंद्र	13/05/2026 12:06
मंगल	15/05/2026 04:35
राहु	19/05/2026 12:41
गुरु	23/05/2026 09:12

राहु - शुक्र - शुक्र - बुध	
23/05/2026 09:12	
18/06/2026 06:08	
बुध	27/05/2026 01:10
केतु	28/05/2026 13:23
शुक्र	01/06/2026 20:53
सूर्य	03/06/2026 03:55
चंद्र	05/06/2026 07:40
मंगल	06/06/2026 19:53
राहु	10/06/2026 17:02
गुरु	14/06/2026 03:49
शनि	18/06/2026 06:08

राहु - शुक्र - शुक्र - केतु	
18/06/2026 06:08	
28/06/2026 21:48	
केतु	18/06/2026 21:03
शुक्र	20/06/2026 15:39
सूर्य	21/06/2026 04:27
चंद्र	22/06/2026 01:45
मंगल	22/06/2026 16:40
राहु	24/06/2026 07:01
गुरु	25/06/2026 17:06
शनि	27/06/2026 09:35
बुध	28/06/2026 21:48

राहु - शुक्र - सूर्य - सूर्य	
28/06/2026 21:48	
01/07/2026 15:33	
सूर्य	29/06/2026 01:06
चंद्र	29/06/2026 06:34
मंगल	29/06/2026 10:24
राहु	29/06/2026 20:16
गुरु	30/06/2026 05:02
शनि	30/06/2026 15:27
बुध	01/07/2026 00:46
केतु	01/07/2026 04:36
शुक्र	01/07/2026 15:33

राहु - शुक्र - सूर्य - चंद्र	
01/07/2026 15:33	
06/07/2026 05:08	
चंद्र	02/07/2026 00:41
मंगल	02/07/2026 07:04
राहु	02/07/2026 23:31
गुरु	03/07/2026 14:07
शनि	04/07/2026 07:28
बुध	04/07/2026 23:00
केतु	05/07/2026 05:23
शुक्र	05/07/2026 23:39
सूर्य	06/07/2026 05:08

राहु - शुक्र - सूर्य - मंगल	
06/07/2026 05:08	
09/07/2026 09:50	
मंगल	06/07/2026 09:36
राहु	06/07/2026 21:06
गुरु	07/07/2026 07:20
शनि	07/07/2026 19:29
बुध	08/07/2026 06:21
केतु	08/07/2026 10:49
शुक्र	08/07/2026 23:36
सूर्य	09/07/2026 03:26
चंद्र	09/07/2026 09:50

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - शुक्र - सूर्य - राहु	
09/07/2026 09:50	
17/07/2026 15:04	
राहु	10/07/2026 15:25
गुरु	11/07/2026 17:43
शनि	13/07/2026 00:56
बुध	14/07/2026 04:53
केतु	14/07/2026 16:23
शुक्र	16/07/2026 01:16
सूर्य	16/07/2026 11:07
चंद्र	17/07/2026 03:33
मंगल	17/07/2026 15:04

राहु - शुक्र - सूर्य - गुरु	
17/07/2026 15:04	
24/07/2026 22:23	
गुरु	18/07/2026 14:26
शनि	19/07/2026 18:12
बुध	20/07/2026 19:02
केतु	21/07/2026 05:16
शुक्र	22/07/2026 10:29
सूर्य	22/07/2026 19:15
चंद्र	23/07/2026 09:52
मंगल	23/07/2026 20:05
राहु	24/07/2026 22:23

राहु - शुक्र - सूर्य - शनि	
24/07/2026 22:23	
02/08/2026 14:35	
शनि	26/07/2026 07:21
बुध	27/07/2026 12:50
केतु	28/07/2026 00:59
शुक्र	29/07/2026 11:41
सूर्य	29/07/2026 22:06
चंद्र	30/07/2026 15:27
मंगल	31/07/2026 03:35
राहु	01/08/2026 10:49
गुरु	02/08/2026 14:35

राहु - शुक्र - सूर्य - बुध	
02/08/2026 14:35	
10/08/2026 08:51	
बुध	03/08/2026 16:58
केतु	04/08/2026 03:50
शुक्र	05/08/2026 10:53
सूर्य	05/08/2026 20:12
चंद्र	06/08/2026 11:43
मंगल	06/08/2026 22:35
राहु	08/08/2026 02:31
गुरु	09/08/2026 03:22
शनि	10/08/2026 08:51

राहु - शुक्र - सूर्य - केतु	
10/08/2026 08:51	
13/08/2026 13:33	
केतु	10/08/2026 13:20
शुक्र	11/08/2026 02:07
सूर्य	11/08/2026 05:57
चंद्र	11/08/2026 12:20
मंगल	11/08/2026 16:49
राहु	12/08/2026 04:19
गुरु	12/08/2026 14:33
शनि	13/08/2026 02:41
बुध	13/08/2026 13:33

राहु - शुक्र - सूर्य - शुक्र	
13/08/2026 13:33	
22/08/2026 16:42	
शुक्र	15/08/2026 02:05
सूर्य	15/08/2026 13:02
चंद्र	16/08/2026 07:18
मंगल	16/08/2026 20:05
राहु	18/08/2026 04:57
गुरु	19/08/2026 10:11
शनि	20/08/2026 20:53
बुध	22/08/2026 03:55
केतु	22/08/2026 16:42

राहु - शुक्र - चंद्र - चंद्र	
22/08/2026 16:42	
30/08/2026 07:20	
चंद्र	23/08/2026 07:55
मंगल	23/08/2026 18:35
राहु	24/08/2026 21:58
गुरु	25/08/2026 22:19
शनि	27/08/2026 03:14
बुध	28/08/2026 05:07
केतु	28/08/2026 15:46
शुक्र	29/08/2026 22:12
सूर्य	30/08/2026 07:20

राहु - शुक्र - चंद्र - मंगल	
30/08/2026 07:20	
04/09/2026 15:10	
मंगल	30/08/2026 14:47
राहु	31/08/2026 09:58
गुरु	01/09/2026 03:01
शनि	01/09/2026 23:15
बुध	02/09/2026 17:22
केतु	03/09/2026 00:49
शुक्र	03/09/2026 22:07
सूर्य	04/09/2026 04:31
चंद्र	04/09/2026 15:10

राहु - शुक्र - चंद्र - राहु	
04/09/2026 15:10	
18/09/2026 07:54	
राहु	06/09/2026 16:29
गुरु	08/09/2026 12:18
शनि	10/09/2026 16:21
बुध	12/09/2026 14:55
केतु	13/09/2026 10:06
शुक्र	15/09/2026 16:53
सूर्य	16/09/2026 09:19
चंद्र	17/09/2026 12:43
मंगल	18/09/2026 07:54

राहु - शुक्र - चंद्र - गुरु	
18/09/2026 07:54	
30/09/2026 12:06	
गुरु	19/09/2026 22:51
शनि	21/09/2026 21:07
बुध	23/09/2026 14:31
केतु	24/09/2026 07:34
शुक्र	26/09/2026 08:16
सूर्य	26/09/2026 22:52
चंद्र	27/09/2026 23:13
मंगल	28/09/2026 16:16
राहु	30/09/2026 12:06

राहु - शुक्र - चंद्र - शनि	
30/09/2026 12:06	
14/10/2026 23:05	
शनि	02/10/2026 19:02
बुध	04/10/2026 20:11
केतु	05/10/2026 16:26
शुक्र	08/10/2026 02:16
सूर्य	08/10/2026 19:37
चंद्र	10/10/2026 00:32
मंगल	10/10/2026 20:46
राहु	13/10/2026 00:49
गुरु	14/10/2026 23:05

राहु - शुक्र - चंद्र - बुध	
14/10/2026 23:05	
27/10/2026 21:33	
बुध	16/10/2026 19:04
केतु	17/10/2026 13:10
शुक्र	19/10/2026 16:55
सूर्य	20/10/2026 08:26
चंद्र	21/10/2026 10:19
मंगल	22/10/2026 04:25
राहु	24/10/2026 03:00
गुरु	25/10/2026 20:23
शनि	27/10/2026 21:33

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 12 वर्ष 10 मास 16 दिन

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष	
11/08/1992		28/06/2005		28/06/2022		28/06/2040		29/06/2051	
28/06/2005		28/06/2022		28/06/2040		29/06/2051		29/06/2063	
	11/08/1992	बुध	25/12/2007	शुक्र	13/04/2025	सूर्य	14/07/2041	मंगल	24/09/2052
बुध	16/01/1994	शुक्र	15/08/2010	सूर्य	28/12/2026	मंगल	02/09/2042	गुरु	28/01/2054
शुक्र	10/07/1996	सूर्य	25/03/2012	मंगल	07/11/2028	गुरु	27/11/2043	शनि	11/07/2055
सूर्य	16/01/1998	मंगल	28/12/2013	गुरु	14/11/2030	शनि	26/03/2045	केतु	28/01/2057
मंगल	12/09/1999	गुरु	24/11/2015	शनि	15/01/2033	केतु	27/08/2046	चंद्र	24/09/2058
गुरु	28/06/2001	शनि	12/12/2017	केतु	15/05/2035	चंद्र	03/03/2048	बुध	28/06/2060
शनि	03/06/2003	केतु	23/02/2020	चंद्र	07/11/2037	बुध	13/10/2049	शुक्र	09/05/2062
केतु	28/06/2005	चंद्र	28/06/2022	बुध	28/06/2040	शुक्र	29/06/2051	सूर्य	29/06/2063

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष	
29/06/2063		28/06/2076		28/06/2090		29/06/2105	
28/06/2076		28/06/2090		29/06/2105		00/00/0000	
गुरु	12/12/2064	शनि	07/03/2078	केतु	06/06/2092	चंद्र	13/09/2107
शनि	08/07/2066	केतु	28/12/2079	चंद्र	01/07/2094	बुध	12/08/2108
केतु	13/03/2068	चंद्र	02/12/2081	बुध	11/09/2096		00/00/0000
चंद्र	28/12/2069	बुध	22/12/2083	शुक्र	10/01/2099		00/00/0000
बुध	24/11/2071	शुक्र	22/02/2086	सूर्य	13/06/2100		00/00/0000
शुक्र	29/11/2073	सूर्य	22/06/2087	मंगल	01/01/2102		00/00/0000
सूर्य	23/02/2075	मंगल	02/12/2088	गुरु	07/09/2103		00/00/0000
मंगल	28/06/2076	गुरु	28/06/2090	शनि	29/06/2105		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
11/08/1992		16/01/1994		10/07/1996		16/01/1998		12/09/1999	
16/01/1994		10/07/1996		16/01/1998		12/09/1999		28/06/2001	
	00/00/0000	शुक्र	05/06/1994	सूर्य	01/09/1996	मंगल	19/03/1998	गुरु	24/11/1999
	11/08/1992	सूर्य	30/08/1994	मंगल	28/10/1996	गुरु	26/05/1998	शनि	12/02/2000
सूर्य	17/08/1992	मंगल	02/12/1994	गुरु	29/12/1996	शनि	07/08/1998	केतु	06/05/2000
मंगल	13/11/1992	गुरु	14/03/1995	शनि	06/03/1997	केतु	24/10/1998	चंद्र	05/08/2000
गुरु	17/02/1993	शनि	01/07/1995	केतु	17/05/1997	चंद्र	15/01/1999	बुध	09/11/2000
शनि	01/06/1993	केतु	26/10/1995	चंद्र	01/08/1997	बुध	14/04/1999	शुक्र	18/02/2001
केतु	19/09/1993	चंद्र	28/02/1996	बुध	22/10/1997	शुक्र	17/07/1999	सूर्य	21/04/2001
चंद्र	16/01/1994	बुध	10/07/1996	शुक्र	16/01/1998	सूर्य	12/09/1999	मंगल	28/06/2001

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
28/06/2001		03/06/2003		28/06/2005		25/12/2007		15/08/2010	
03/06/2003		28/06/2005		25/12/2007		15/08/2010		25/03/2012	
शनि	21/09/2001	केतु	09/09/2003	बुध	08/11/2005	शुक्र	23/05/2008	सूर्य	09/10/2010
केतु	21/12/2001	चंद्र	22/12/2003	शुक्र	30/03/2006	सूर्य	22/08/2008	मंगल	09/12/2010
चंद्र	29/03/2002	बुध	11/04/2004	सूर्य	24/06/2006	मंगल	30/11/2008	गुरु	13/02/2011
बुध	10/07/2002	शुक्र	06/08/2004	मंगल	26/09/2006	गुरु	18/03/2009	शनि	25/04/2011
शुक्र	27/10/2002	सूर्य	17/10/2004	गुरु	06/01/2007	शनि	12/07/2009	केतु	10/07/2011
सूर्य	02/01/2003	मंगल	03/01/2005	शनि	26/04/2007	केतु	13/11/2009	चंद्र	30/09/2011
मंगल	16/03/2003	गुरु	29/03/2005	केतु	21/08/2007	चंद्र	26/03/2010	बुध	25/12/2011
गुरु	03/06/2003	शनि	28/06/2005	चंद्र	25/12/2007	बुध	15/08/2010	शुक्र	25/03/2012

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
25/03/2012		28/12/2013		24/11/2015		12/12/2017		23/02/2020	
28/12/2013		24/11/2015		12/12/2017		23/02/2020		28/06/2022	
मंगल	31/05/2012	गुरु	16/03/2014	शनि	22/02/2016	केतु	26/03/2018	चंद्र	20/06/2020
गुरु	11/08/2012	शनि	08/06/2014	केतु	29/05/2016	चंद्र	14/07/2018	बुध	23/10/2020
शनि	27/10/2012	केतु	06/09/2014	चंद्र	09/09/2016	बुध	09/11/2018	शुक्र	05/03/2021
केतु	18/01/2013	चंद्र	11/12/2014	बुध	28/12/2016	शुक्र	14/03/2019	सूर्य	26/05/2021
चंद्र	17/04/2013	बुध	23/03/2015	शुक्र	23/04/2017	सूर्य	29/05/2019	मंगल	22/08/2021
बुध	20/07/2013	शुक्र	09/07/2015	सूर्य	03/07/2017	मंगल	20/08/2019	गुरु	26/11/2021
शुक्र	28/10/2013	सूर्य	13/09/2015	मंगल	19/09/2017	गुरु	18/11/2019	शनि	10/03/2022
सूर्य	28/12/2013	मंगल	24/11/2015	गुरु	12/12/2017	शनि	23/02/2020	केतु	28/06/2022

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
28/06/2022		13/04/2025		28/12/2026		07/11/2028		14/11/2030	
13/04/2025		28/12/2026		07/11/2028		14/11/2030		15/01/2033	
शुक्र	04/12/2022	सूर्य	12/06/2025	मंगल	08/03/2027	गुरु	29/01/2029	शनि	18/02/2031
सूर्य	10/03/2023	मंगल	15/08/2025	गुरु	23/05/2027	शनि	28/04/2029	केतु	31/05/2031
मंगल	24/06/2023	गुरु	24/10/2025	शनि	14/08/2027	केतु	01/08/2029	चंद्र	18/09/2031
गुरु	16/10/2023	शनि	07/01/2026	केतु	10/11/2027	चंद्र	10/11/2029	बुध	12/01/2032
शनि	16/02/2024	केतु	29/03/2026	चंद्र	11/02/2028	बुध	26/02/2030	शुक्र	14/05/2032
केतु	27/06/2024	चंद्र	23/06/2026	बुध	21/05/2028	शुक्र	21/06/2030	सूर्य	28/07/2032
चंद्र	15/11/2024	बुध	22/09/2026	शुक्र	04/09/2028	सूर्य	30/08/2030	मंगल	18/10/2032
बुध	13/04/2025	शुक्र	28/12/2026	सूर्य	07/11/2028	मंगल	14/11/2030	गुरु	15/01/2033

शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल	
15/01/2033		15/05/2035		07/11/2037		28/06/2040		14/07/2041	
15/05/2035		07/11/2037		28/06/2040		14/07/2041		02/09/2042	
केतु	05/05/2033	चंद्र	18/09/2035	बुध	28/03/2038	सूर्य	03/08/2040	मंगल	26/08/2041
चंद्र	30/08/2033	बुध	28/01/2036	शुक्र	25/08/2038	मंगल	11/09/2040	गुरु	11/10/2041
बुध	02/01/2034	शुक्र	17/06/2036	सूर्य	24/11/2038	गुरु	24/10/2040	शनि	01/12/2041
शुक्र	14/05/2034	सूर्य	11/09/2036	मंगल	04/03/2039	शनि	09/12/2040	केतु	23/01/2042
सूर्य	03/08/2034	मंगल	14/12/2036	गुरु	20/06/2039	केतु	27/01/2041	चंद्र	22/03/2042
मंगल	30/10/2034	गुरु	26/03/2037	शनि	14/10/2039	चंद्र	21/03/2041	बुध	21/05/2042
गुरु	02/02/2035	शनि	13/07/2037	केतु	16/02/2040	बुध	16/05/2041	शुक्र	25/07/2042
शनि	15/05/2035	केतु	07/11/2037	चंद्र	28/06/2040	शुक्र	14/07/2041	सूर्य	02/09/2042

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
02/09/2042		27/11/2043		26/03/2045		27/08/2046		03/03/2048	
27/11/2043		26/03/2045		27/08/2046		03/03/2048		13/10/2049	
गुरु	23/10/2042	शनि	24/01/2044	केतु	01/06/2045	चंद्र	12/11/2046	बुध	29/05/2048
शनि	16/12/2042	केतु	27/03/2044	चंद्र	11/08/2045	बुध	01/02/2047	शुक्र	28/08/2048
केतु	12/02/2043	चंद्र	02/06/2044	बुध	27/10/2045	शुक्र	28/04/2047	सूर्य	23/10/2048
चंद्र	16/04/2043	बुध	12/08/2044	शुक्र	15/01/2046	सूर्य	19/06/2047	मंगल	23/12/2048
बुध	21/06/2043	शुक्र	26/10/2044	सूर्य	05/03/2046	मंगल	16/08/2047	गुरु	27/02/2049
शुक्र	29/08/2043	सूर्य	11/12/2044	मंगल	28/04/2046	गुरु	17/10/2047	शनि	09/05/2049
सूर्य	11/10/2043	मंगल	30/01/2045	गुरु	25/06/2046	शनि	23/12/2047	केतु	24/07/2049
मंगल	27/11/2043	गुरु	26/03/2045	शनि	27/08/2046	केतु	03/03/2048	चंद्र	13/10/2049

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
13/10/2049		29/06/2051		24/09/2052		28/01/2054		11/07/2055	
29/06/2051		24/09/2052		28/01/2054		11/07/2055		28/01/2057	
शुक्र	18/01/2050	मंगल	14/08/2051	गुरु	18/11/2052	शनि	02/04/2054	केतु	22/09/2055
सूर्य	18/03/2050	गुरु	04/10/2051	शनि	16/01/2053	केतु	09/06/2054	चंद्र	10/12/2055
मंगल	21/05/2050	शनि	28/11/2051	केतु	21/03/2053	चंद्र	21/08/2054	बुध	02/03/2056
गुरु	30/07/2050	केतु	26/01/2052	चंद्र	28/05/2053	बुध	07/11/2054	शुक्र	29/05/2056
शनि	14/10/2050	चंद्र	28/03/2052	बुध	08/08/2053	शुक्र	28/01/2055	सूर्य	21/07/2056
केतु	02/01/2051	बुध	03/06/2052	शुक्र	23/10/2053	सूर्य	19/03/2055	मंगल	18/09/2056
चंद्र	29/03/2051	शुक्र	12/08/2052	सूर्य	08/12/2053	मंगल	13/05/2055	गुरु	20/11/2056
बुध	29/06/2051	सूर्य	24/09/2052	मंगल	28/01/2054	गुरु	11/07/2055	शनि	28/01/2057

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
28/01/2057		24/09/2058		28/06/2060		09/05/2062		29/06/2063	
24/09/2058		28/06/2060		09/05/2062		29/06/2063		12/12/2064	
चंद्र	21/04/2057	बुध	28/12/2058	शुक्र	11/10/2060	सूर्य	17/06/2062	गुरु	27/08/2063
बुध	19/07/2057	शुक्र	06/04/2059	सूर्य	15/12/2060	मंगल	30/07/2062	शनि	30/10/2063
शुक्र	21/10/2057	सूर्य	06/06/2059	मंगल	23/02/2061	गुरु	15/09/2062	केतु	07/01/2064
सूर्य	17/12/2057	मंगल	12/08/2059	गुरु	10/05/2061	शनि	04/11/2062	चंद्र	21/03/2064
मंगल	18/02/2058	गुरु	23/10/2059	शनि	31/07/2061	केतु	28/12/2062	बुध	07/06/2064
गुरु	26/04/2058	शनि	08/01/2060	केतु	27/10/2061	चंद्र	23/02/2063	शुक्र	28/08/2064
शनि	08/07/2058	केतु	31/03/2060	चंद्र	29/01/2062	बुध	25/04/2063	सूर्य	18/10/2064
केतु	24/09/2058	चंद्र	28/06/2060	बुध	09/05/2062	शुक्र	29/06/2063	मंगल	12/12/2064

गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र	
12/12/2064		08/07/2066		13/03/2068		28/12/2069		24/11/2071	
08/07/2066		13/03/2068		28/12/2069		24/11/2071		29/11/2073	
शनि	19/02/2065	केतु	25/09/2066	चंद्र	11/06/2068	बुध	09/04/2070	शुक्र	17/03/2072
केतु	04/05/2065	चंद्र	19/12/2066	बुध	15/09/2068	शुक्र	26/07/2070	सूर्य	26/05/2072
चंद्र	22/07/2065	बुध	19/03/2067	शुक्र	26/12/2068	सूर्य	30/09/2070	मंगल	10/08/2072
बुध	14/10/2065	शुक्र	22/06/2067	सूर्य	26/02/2069	मंगल	11/12/2070	गुरु	01/11/2072
शुक्र	11/01/2066	सूर्य	19/08/2067	मंगल	05/05/2069	गुरु	27/02/2071	शनि	28/01/2073
सूर्य	06/03/2066	मंगल	22/10/2067	गुरु	17/07/2069	शनि	22/05/2071	केतु	04/05/2073
मंगल	05/05/2066	गुरु	30/12/2067	शनि	04/10/2069	केतु	20/08/2071	चंद्र	13/08/2073
गुरु	08/07/2066	शनि	13/03/2068	केतु	28/12/2069	चंद्र	24/11/2071	बुध	29/11/2073

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र	
29/11/2073		23/02/2075		28/06/2076		07/03/2078		28/12/2079	
23/02/2075		28/06/2076		07/03/2078		28/12/2079		02/12/2081	
सूर्य	11/01/2074	मंगल	14/04/2075	शनि	10/09/2076	केतु	31/05/2078	चंद्र	03/04/2080
मंगल	27/02/2074	गुरु	08/06/2075	केतु	29/11/2076	चंद्र	31/08/2078	बुध	16/07/2080
गुरु	18/04/2074	शनि	07/08/2075	चंद्र	22/02/2077	बुध	06/12/2078	शुक्र	02/11/2080
शनि	11/06/2074	केतु	09/10/2075	बुध	24/05/2077	शुक्र	18/03/2079	सूर्य	08/01/2081
केतु	09/08/2074	चंद्र	16/12/2075	शुक्र	27/08/2077	सूर्य	20/05/2079	मंगल	22/03/2081
चंद्र	10/10/2074	बुध	26/02/2076	सूर्य	25/10/2077	मंगल	27/07/2079	गुरु	09/06/2081
बुध	15/12/2074	शुक्र	12/05/2076	मंगल	28/12/2077	गुरु	09/10/2079	शनि	02/09/2081
शुक्र	23/02/2075	सूर्य	28/06/2076	गुरु	07/03/2078	शनि	28/12/2079	केतु	02/12/2081

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
02/12/2081		22/12/2083		22/02/2086		22/06/2087		02/12/2088	
22/12/2083		22/02/2086		22/06/2087		02/12/2088		28/06/2090	
बुध	22/03/2082	शुक्र	23/04/2084	सूर्य	09/04/2086	मंगल	16/08/2087	गुरु	04/02/2089
शुक्र	17/07/2082	सूर्य	07/07/2084	मंगल	29/05/2086	गुरु	14/10/2087	शनि	15/04/2089
सूर्य	26/09/2082	मंगल	27/09/2084	गुरु	23/07/2086	शनि	17/12/2087	केतु	28/06/2089
मंगल	12/12/2082	गुरु	25/12/2084	शनि	19/09/2086	केतु	23/02/2088	चंद्र	15/09/2089
गुरु	06/03/2083	शनि	31/03/2085	केतु	21/11/2086	चंद्र	06/05/2088	बुध	08/12/2089
शनि	05/06/2083	केतु	12/07/2085	चंद्र	27/01/2087	बुध	23/07/2088	शुक्र	07/03/2090
केतु	09/09/2083	चंद्र	29/10/2085	बुध	08/04/2087	शुक्र	13/10/2088	सूर्य	30/04/2090
चंद्र	22/12/2083	बुध	22/02/2086	शुक्र	22/06/2087	सूर्य	02/12/2088	मंगल	28/06/2090

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
28/06/2090		06/06/2092		01/07/2094		11/09/2096		10/01/2099	
06/06/2092		01/07/2094		11/09/2096		10/01/2099		13/06/2100	
केतु	28/09/2090	चंद्र	18/09/2092	बुध	27/10/2094	शुक्र	21/01/2097	सूर्य	28/02/2099
चंद्र	04/01/2091	बुध	07/01/2093	शुक्र	01/03/2095	सूर्य	12/04/2097	मंगल	23/04/2099
बुध	17/04/2091	शुक्र	04/05/2093	सूर्य	16/05/2095	मंगल	09/07/2097	गुरु	20/06/2099
शुक्र	05/08/2091	सूर्य	15/07/2093	मंगल	07/08/2095	गुरु	12/10/2097	शनि	21/08/2099
सूर्य	12/10/2091	मंगल	01/10/2093	गुरु	05/11/2095	शनि	23/01/2098	केतु	28/10/2099
मंगल	24/12/2091	गुरु	25/12/2093	शनि	10/02/2096	केतु	13/05/2098	चंद्र	07/01/2100
गुरु	12/03/2092	शनि	26/03/2094	केतु	24/05/2096	चंद्र	07/09/2098	बुध	24/03/2100
शनि	06/06/2092	केतु	01/07/2094	चंद्र	11/09/2096	बुध	10/01/2099	शुक्र	13/06/2100

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 2 मास 19 दिन

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
11/08/1992		31/10/1995		01/07/2002		01/03/2007		01/03/2019	
31/10/1995		01/07/2002		01/03/2007		01/03/2019		30/10/2029	
	00/00/0000	चंद्र	21/05/1996	मंगल	08/10/2002	राहु	18/12/2008	गुरु	02/08/2020
	00/00/0000	मंगल	10/10/1996	राहु	21/06/2003	गुरु	25/07/2010	शनि	11/04/2022
	11/08/1992	राहु	10/10/1997	गुरु	03/02/2004	शनि	18/06/2012	बुध	15/10/2023
राहु	13/03/1993	गुरु	31/08/1998	शनि	30/10/2004	बुध	01/03/2014	केतु	29/05/2024
गुरु	24/09/1993	शनि	20/09/1999	बुध	29/06/2005	केतु	12/11/2014	शुक्र	09/03/2026
शनि	13/05/1994	बुध	30/08/2000	केतु	06/10/2005	शुक्र	11/11/2016	सूर्य	20/09/2026
बुध	06/12/1994	केतु	19/01/2001	शुक्र	17/07/2006	सूर्य	18/06/2017	चंद्र	11/08/2027
केतु	01/03/1995	शुक्र	01/03/2002	सूर्य	10/10/2006	चंद्र	19/06/2018	मंगल	25/03/2028
शुक्र	31/10/1995	सूर्य	01/07/2002	चंद्र	01/03/2007	मंगल	01/03/2019	राहु	30/10/2029

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
30/10/2029		01/07/2042		30/10/2053		01/07/2058		31/10/2071	
01/07/2042		30/10/2053		01/07/2058		31/10/2071		00/00/0000	
शनि	02/11/2031	बुध	07/02/2044	केतु	07/02/2054	शुक्र	20/09/2060	सूर्य	12/01/2072
बुध	18/08/2033	केतु	06/10/2044	शुक्र	18/11/2054	सूर्य	21/05/2061	चंद्र	13/05/2072
केतु	15/05/2034	शुक्र	27/08/2046	सूर्य	11/02/2055	चंद्र	01/07/2062	मंगल	06/08/2072
शुक्र	24/06/2036	सूर्य	22/03/2047	चंद्र	03/07/2055	मंगल	11/04/2063	राहु	11/08/2072
सूर्य	11/02/2037	चंद्र	01/03/2048	मंगल	11/10/2055	राहु	10/04/2065		00/00/0000
चंद्र	03/03/2038	मंगल	28/10/2048	राहु	22/06/2056	गुरु	20/01/2067		00/00/0000
मंगल	28/11/2038	राहु	11/07/2050	गुरु	05/02/2057	शनि	01/03/2069		00/00/0000
राहु	22/10/2040	गुरु	14/01/2052	शनि	01/11/2057	बुध	20/01/2071		00/00/0000
गुरु	01/07/2042	शनि	30/10/2053	बुध	01/07/2058	केतु	31/10/2071		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
11/08/1992		13/03/1993		24/09/1993		13/05/1994		06/12/1994	
13/03/1993		24/09/1993		13/05/1994		06/12/1994		01/03/1995	
राहु	08/09/1992	गुरु	08/04/1993	शनि	30/10/1993	बुध	11/06/1994	केतु	11/12/1994
गुरु	07/10/1992	शनि	09/05/1993	बुध	02/12/1993	केतु	24/06/1994	शुक्र	25/12/1994
शनि	11/11/1992	बुध	05/06/1993	केतु	16/12/1993	शुक्र	28/07/1994	सूर्य	30/12/1994
बुध	12/12/1992	केतु	17/06/1993	शुक्र	23/01/1994	सूर्य	07/08/1994	चंद्र	06/01/1995
केतु	25/12/1992	शुक्र	19/07/1993	सूर्य	04/02/1994	चंद्र	25/08/1994	मंगल	11/01/1995
शुक्र	30/01/1993	सूर्य	29/07/1993	चंद्र	23/02/1994	मंगल	06/09/1994	राहु	23/01/1995
सूर्य	10/02/1993	चंद्र	14/08/1993	मंगल	09/03/1994	राहु	07/10/1994	गुरु	04/02/1995
चंद्र	28/02/1993	मंगल	26/08/1993	राहु	12/04/1994	गुरु	03/11/1994	शनि	17/02/1995
मंगल	13/03/1993	राहु	24/09/1993	गुरु	13/05/1994	शनि	06/12/1994	बुध	01/03/1995

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
01/03/1995		31/10/1995		21/05/1996		10/10/1996		10/10/1997	
31/10/1995		21/05/1996		10/10/1996		10/10/1997		31/08/1998	
शुक्र	11/04/1995	चंद्र	17/11/1995	मंगल	29/05/1996	राहु	04/12/1996	गुरु	22/11/1997
सूर्य	23/04/1995	मंगल	29/11/1995	राहु	19/06/1996	गुरु	21/01/1997	शनि	13/01/1998
चंद्र	13/05/1995	राहु	29/12/1995	गुरु	08/07/1996	शनि	20/03/1997	बुध	28/02/1998
मंगल	28/05/1995	गुरु	25/01/1996	शनि	31/07/1996	बुध	11/05/1997	केतु	19/03/1998
राहु	03/07/1995	शनि	26/02/1996	बुध	20/08/1996	केतु	01/06/1997	शुक्र	12/05/1998
गुरु	05/08/1995	बुध	26/03/1996	केतु	28/08/1996	शुक्र	01/08/1997	सूर्य	28/05/1998
शनि	12/09/1995	केतु	07/04/1996	शुक्र	21/09/1996	सूर्य	19/08/1997	चंद्र	24/06/1998
बुध	17/10/1995	शुक्र	11/05/1996	सूर्य	28/09/1996	चंद्र	19/09/1997	मंगल	13/07/1998
केतु	31/10/1995	सूर्य	21/05/1996	चंद्र	10/10/1996	मंगल	10/10/1997	राहु	31/08/1998

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
31/08/1998		20/09/1999		30/08/2000		19/01/2001		01/03/2002	
20/09/1999		30/08/2000		19/01/2001		01/03/2002		01/07/2002	
शनि	31/10/1998	बुध	08/11/1999	केतु	08/09/2000	शुक्र	28/03/2001	सूर्य	07/03/2002
बुध	24/12/1998	केतु	28/11/1999	शुक्र	01/10/2000	सूर्य	17/04/2001	चंद्र	17/03/2002
केतु	16/01/1999	शुक्र	25/01/2000	सूर्य	08/10/2000	चंद्र	21/05/2001	मंगल	24/03/2002
शुक्र	21/03/1999	सूर्य	11/02/2000	चंद्र	20/10/2000	मंगल	14/06/2001	राहु	12/04/2002
सूर्य	09/04/1999	चंद्र	11/03/2000	मंगल	28/10/2000	राहु	14/08/2001	गुरु	28/04/2002
चंद्र	12/05/1999	मंगल	31/03/2000	राहु	19/11/2000	गुरु	07/10/2001	शनि	17/05/2002
मंगल	03/06/1999	राहु	22/05/2000	गुरु	08/12/2000	शनि	10/12/2001	बुध	03/06/2002
राहु	31/07/1999	गुरु	07/07/2000	शनि	30/12/2000	बुध	05/02/2002	केतु	11/06/2002
गुरु	20/09/1999	शनि	30/08/2000	बुध	19/01/2001	केतु	01/03/2002	शुक्र	01/07/2002

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
01/07/2002		08/10/2002		21/06/2003		03/02/2004		30/10/2004	
08/10/2002		21/06/2003		03/02/2004		30/10/2004		29/06/2005	
मंगल	07/07/2002	राहु	16/11/2002	गुरु	21/07/2003	शनि	17/03/2004	बुध	03/12/2004
राहु	22/07/2002	गुरु	20/12/2002	शनि	26/08/2003	बुध	24/04/2004	केतु	17/12/2004
गुरु	04/08/2002	शनि	29/01/2003	बुध	27/09/2003	केतु	10/05/2004	शुक्र	27/01/2005
शनि	20/08/2002	बुध	06/03/2003	केतु	11/10/2003	शुक्र	24/06/2004	सूर्य	08/02/2005
बुध	03/09/2002	केतु	21/03/2003	शुक्र	18/11/2003	सूर्य	07/07/2004	चंद्र	28/02/2005
केतु	08/09/2002	शुक्र	03/05/2003	सूर्य	29/11/2003	चंद्र	30/07/2004	मंगल	14/03/2005
शुक्र	25/09/2002	सूर्य	16/05/2003	चंद्र	18/12/2003	मंगल	15/08/2004	राहु	19/04/2005
सूर्य	30/09/2002	चंद्र	06/06/2003	मंगल	31/12/2003	राहु	24/09/2004	गुरु	21/05/2005
चंद्र	08/10/2002	मंगल	21/06/2003	राहु	03/02/2004	गुरु	30/10/2004	शनि	29/06/2005

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
29/06/2005		06/10/2005		17/07/2006		10/10/2006		01/03/2007	
06/10/2005		17/07/2006		10/10/2006		01/03/2007		18/12/2008	
केतु	04/07/2005	शुक्र	22/11/2005	सूर्य	21/07/2006	चंद्र	22/10/2006	राहु	08/06/2007
शुक्र	21/07/2005	सूर्य	07/12/2005	चंद्र	28/07/2006	मंगल	30/10/2006	गुरु	04/09/2007
सूर्य	26/07/2005	चंद्र	30/12/2005	मंगल	02/08/2006	राहु	21/11/2006	शनि	17/12/2007
चंद्र	03/08/2005	मंगल	16/01/2006	राहु	15/08/2006	गुरु	10/12/2006	बुध	19/03/2008
मंगल	09/08/2005	राहु	27/02/2006	गुरु	27/08/2006	शनि	01/01/2007	केतु	26/04/2008
राहु	24/08/2005	गुरु	06/04/2006	शनि	09/09/2006	बुध	21/01/2007	शुक्र	14/08/2008
गुरु	06/09/2005	शनि	21/05/2006	बुध	21/09/2006	केतु	30/01/2007	सूर्य	16/09/2008
शनि	22/09/2005	बुध	01/07/2006	केतु	26/09/2006	शुक्र	22/02/2007	चंद्र	09/11/2008
बुध	06/10/2005	केतु	17/07/2006	शुक्र	10/10/2006	सूर्य	01/03/2007	मंगल	18/12/2008

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
18/12/2008		25/07/2010		18/06/2012		01/03/2014		12/11/2014	
25/07/2010		18/06/2012		01/03/2014		12/11/2014		11/11/2016	
गुरु	06/03/2009	शनि	12/11/2010	बुध	14/09/2012	केतु	16/03/2014	शुक्र	14/03/2015
शनि	06/06/2009	बुध	18/02/2011	केतु	20/10/2012	शुक्र	28/04/2014	सूर्य	19/04/2015
बुध	28/08/2009	केतु	31/03/2011	शुक्र	01/02/2013	सूर्य	10/05/2014	चंद्र	19/06/2015
केतु	01/10/2009	शुक्र	25/07/2011	सूर्य	04/03/2013	चंद्र	01/06/2014	मंगल	01/08/2015
शुक्र	07/01/2010	सूर्य	28/08/2011	चंद्र	25/04/2013	मंगल	16/06/2014	राहु	18/11/2015
सूर्य	05/02/2010	चंद्र	25/10/2011	मंगल	31/05/2013	राहु	24/07/2014	गुरु	24/02/2016
चंद्र	25/03/2010	मंगल	05/12/2011	राहु	01/09/2013	गुरु	27/08/2014	शनि	18/06/2016
मंगल	29/04/2010	राहु	18/03/2012	गुरु	23/11/2013	शनि	07/10/2014	बुध	30/09/2016
राहु	25/07/2010	गुरु	18/06/2012	शनि	01/03/2014	बुध	12/11/2014	केतु	11/11/2016

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
11/11/2016		18/06/2017		19/06/2018		01/03/2019		02/08/2020	
18/06/2017		19/06/2018		01/03/2019		02/08/2020		11/04/2022	
सूर्य	22/11/2016	चंद्र	19/07/2017	मंगल	04/07/2018	गुरु	10/05/2019	शनि	08/11/2020
चंद्र	11/12/2016	मंगल	09/08/2017	राहु	11/08/2018	शनि	31/07/2019	बुध	03/02/2021
मंगल	23/12/2016	राहु	03/10/2017	गुरु	14/09/2018	बुध	12/10/2019	केतु	11/03/2021
राहु	25/01/2017	गुरु	21/11/2017	शनि	25/10/2018	केतु	12/11/2019	शुक्र	22/06/2021
गुरु	23/02/2017	शनि	18/01/2018	बुध	30/11/2018	शुक्र	06/02/2020	सूर्य	23/07/2021
शनि	30/03/2017	बुध	10/03/2018	केतु	15/12/2018	सूर्य	03/03/2020	चंद्र	12/09/2021
बुध	30/04/2017	केतु	01/04/2018	शुक्र	26/01/2019	चंद्र	16/04/2020	मंगल	18/10/2021
केतु	13/05/2017	शुक्र	31/05/2018	सूर्य	08/02/2019	मंगल	16/05/2020	राहु	18/01/2022
शुक्र	18/06/2017	सूर्य	19/06/2018	चंद्र	01/03/2019	राहु	02/08/2020	गुरु	11/04/2022

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
11/04/2022		15/10/2023		29/05/2024		09/03/2026		20/09/2026	
15/10/2023		29/05/2024		09/03/2026		20/09/2026		11/08/2027	
बुध	28/06/2022	केतु	28/10/2023	शुक्र	14/09/2024	सूर्य	19/03/2026	चंद्र	17/10/2026
केतु	30/07/2022	शुक्र	05/12/2023	सूर्य	17/10/2024	चंद्र	04/04/2026	मंगल	05/11/2026
शुक्र	30/10/2022	सूर्य	16/12/2023	चंद्र	10/12/2024	मंगल	16/04/2026	राहु	24/12/2026
सूर्य	27/11/2022	चंद्र	04/01/2024	मंगल	17/01/2025	राहु	15/05/2026	गुरु	05/02/2027
चंद्र	12/01/2023	मंगल	17/01/2024	राहु	24/04/2025	गुरु	10/06/2026	शनि	28/03/2027
मंगल	13/02/2023	राहु	20/02/2024	गुरु	20/07/2025	शनि	11/07/2026	बुध	13/05/2027
राहु	07/05/2023	गुरु	22/03/2024	शनि	30/10/2025	बुध	07/08/2026	केतु	01/06/2027
गुरु	19/07/2023	शनि	27/04/2024	बुध	30/01/2026	केतु	19/08/2026	शुक्र	25/07/2027
शनि	15/10/2023	बुध	29/05/2024	केतु	09/03/2026	शुक्र	20/09/2026	सूर्य	11/08/2027

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
11/08/2027		25/03/2028		30/10/2029		02/11/2031		18/08/2033	
25/03/2028		30/10/2029		02/11/2031		18/08/2033		15/05/2034	
मंगल	24/08/2027	राहु	21/06/2028	शनि	23/02/2030	बुध	03/02/2032	केतु	03/09/2033
राहु	27/09/2027	गुरु	07/09/2028	बुध	07/06/2030	केतु	12/03/2032	शुक्र	18/10/2033
गुरु	27/10/2027	शनि	08/12/2028	केतु	20/07/2030	शुक्र	29/06/2032	सूर्य	01/11/2033
शनि	02/12/2027	बुध	01/03/2029	शुक्र	19/11/2030	सूर्य	01/08/2032	चंद्र	23/11/2033
बुध	04/01/2028	केतु	04/04/2029	सूर्य	26/12/2030	चंद्र	25/09/2032	मंगल	09/12/2033
केतु	17/01/2028	शुक्र	10/07/2029	चंद्र	25/02/2031	मंगल	02/11/2032	राहु	18/01/2034
शुक्र	24/02/2028	सूर्य	09/08/2029	मंगल	08/04/2031	राहु	08/02/2033	गुरु	23/02/2034
सूर्य	06/03/2028	चंद्र	26/09/2029	राहु	27/07/2031	गुरु	07/05/2033	शनि	07/04/2034
चंद्र	25/03/2028	मंगल	30/10/2029	गुरु	02/11/2031	शनि	18/08/2033	बुध	15/05/2034

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
15/05/2034		24/06/2036		11/02/2037		03/03/2038		28/11/2038	
24/06/2036		11/02/2037		03/03/2038		28/11/2038		22/10/2040	
शुक्र	21/09/2034	सूर्य	06/07/2036	चंद्र	15/03/2037	मंगल	19/03/2038	राहु	12/03/2039
सूर्य	29/10/2034	चंद्र	25/07/2036	मंगल	06/04/2037	राहु	28/04/2038	गुरु	13/06/2039
चंद्र	02/01/2035	मंगल	08/08/2036	राहु	03/06/2037	गुरु	03/06/2038	शनि	01/10/2039
मंगल	16/02/2035	राहु	11/09/2036	गुरु	24/07/2037	शनि	16/07/2038	बुध	07/01/2040
राहु	11/06/2035	गुरु	12/10/2036	शनि	24/09/2037	बुध	23/08/2038	केतु	16/02/2040
गुरु	22/09/2035	शनि	18/11/2036	बुध	17/11/2037	केतु	08/09/2038	शुक्र	11/06/2040
शनि	22/01/2036	बुध	21/12/2036	केतु	10/12/2037	शुक्र	23/10/2038	सूर्य	16/07/2040
बुध	10/05/2036	केतु	03/01/2037	शुक्र	12/02/2038	सूर्य	06/11/2038	चंद्र	12/09/2040
केतु	24/06/2036	शुक्र	11/02/2037	सूर्य	03/03/2038	चंद्र	28/11/2038	मंगल	22/10/2040

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
22/10/2040		01/07/2042		07/02/2044		06/10/2044		27/08/2046	
01/07/2042		07/02/2044		06/10/2044		27/08/2046		22/03/2047	
गुरु	12/01/2041	बुध	22/09/2042	केतु	21/02/2044	शुक्र	29/01/2045	सूर्य	06/09/2046
शनि	20/04/2041	केतु	26/10/2042	शुक्र	02/04/2044	सूर्य	04/03/2045	चंद्र	23/09/2046
बुध	16/07/2041	शुक्र	01/02/2043	सूर्य	14/04/2044	चंद्र	01/05/2045	मंगल	05/10/2046
केतु	21/08/2041	सूर्य	02/03/2043	चंद्र	04/05/2044	मंगल	10/06/2045	राहु	05/11/2046
शुक्र	02/12/2041	चंद्र	20/04/2043	मंगल	18/05/2044	राहु	21/09/2045	गुरु	03/12/2046
सूर्य	02/01/2042	मंगल	24/05/2043	राहु	23/06/2044	गुरु	22/12/2045	शनि	05/01/2047
चंद्र	22/02/2042	राहु	20/08/2043	गुरु	25/07/2044	शनि	11/04/2046	बुध	03/02/2047
मंगल	30/03/2042	गुरु	06/11/2043	शनि	02/09/2044	बुध	17/07/2046	केतु	15/02/2047
राहु	01/07/2042	शनि	07/02/2044	बुध	06/10/2044	केतु	27/08/2046	शुक्र	22/03/2047

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
22/03/2047		01/03/2048		28/10/2048		11/07/2050		14/01/2052	
01/03/2048		28/10/2048		11/07/2050		14/01/2052		30/10/2053	
चंद्र	19/04/2047	मंगल	15/03/2048	राहु	29/01/2049	गुरु	23/09/2050	शनि	27/04/2052
मंगल	10/05/2047	राहु	20/04/2048	गुरु	22/04/2049	शनि	19/12/2050	बुध	29/07/2052
राहु	30/06/2047	गुरु	22/05/2048	शनि	29/07/2049	बुध	07/03/2051	केतु	05/09/2052
गुरु	15/08/2047	शनि	29/06/2048	बुध	25/10/2049	केतु	08/04/2051	शुक्र	23/12/2052
शनि	09/10/2047	बुध	03/08/2048	केतु	01/12/2049	शुक्र	09/07/2051	सूर्य	25/01/2053
बुध	27/11/2047	केतु	17/08/2048	शुक्र	14/03/2050	सूर्य	06/08/2051	चंद्र	20/03/2053
केतु	17/12/2047	शुक्र	26/09/2048	सूर्य	14/04/2050	चंद्र	21/09/2051	मंगल	28/04/2053
शुक्र	12/02/2048	सूर्य	08/10/2048	चंद्र	05/06/2050	मंगल	23/10/2051	राहु	04/08/2053
सूर्य	01/03/2048	चंद्र	28/10/2048	मंगल	11/07/2050	राहु	14/01/2052	गुरु	30/10/2053

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
30/10/2053		07/02/2054		18/11/2054		11/02/2055		03/07/2055	
07/02/2054		18/11/2054		11/02/2055		03/07/2055		11/10/2055	
केतु	05/11/2053	शुक्र	26/03/2054	सूर्य	22/11/2054	चंद्र	23/02/2055	मंगल	09/07/2055
शुक्र	22/11/2053	सूर्य	09/04/2054	चंद्र	29/11/2054	मंगल	03/03/2055	राहु	24/07/2055
सूर्य	27/11/2053	चंद्र	03/05/2054	मंगल	04/12/2054	राहु	25/03/2055	गुरु	06/08/2055
चंद्र	05/12/2053	मंगल	20/05/2054	राहु	17/12/2054	गुरु	12/04/2055	शनि	22/08/2055
मंगल	11/12/2053	राहु	01/07/2054	गुरु	28/12/2054	शनि	05/05/2055	बुध	05/09/2055
राहु	26/12/2053	गुरु	08/08/2054	शनि	11/01/2055	बुध	25/05/2055	केतु	11/09/2055
गुरु	08/01/2054	शनि	22/09/2054	बुध	23/01/2055	केतु	02/06/2055	शुक्र	27/09/2055
शनि	24/01/2054	बुध	01/11/2054	केतु	28/01/2055	शुक्र	26/06/2055	सूर्य	02/10/2055
बुध	07/02/2054	केतु	18/11/2054	शुक्र	11/02/2055	सूर्य	03/07/2055	चंद्र	11/10/2055

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
11/10/2055		22/06/2056		05/02/2057		01/11/2057		01/07/2058	
22/06/2056		05/02/2057		01/11/2057		01/07/2058		20/09/2060	
राहु	18/11/2055	गुरु	23/07/2056	शनि	19/03/2057	बुध	06/12/2057	शुक्र	13/11/2058
गुरु	22/12/2055	शनि	28/08/2056	बुध	26/04/2057	केतु	20/12/2057	सूर्य	24/12/2058
शनि	01/02/2056	बुध	29/09/2056	केतु	12/05/2057	शुक्र	29/01/2058	चंद्र	01/03/2059
बुध	08/03/2056	केतु	12/10/2056	शुक्र	26/06/2057	सूर्य	10/02/2058	मंगल	18/04/2059
केतु	23/03/2056	शुक्र	19/11/2056	सूर्य	10/07/2057	चंद्र	02/03/2058	राहु	17/08/2059
शुक्र	04/05/2056	सूर्य	30/11/2056	चंद्र	01/08/2057	मंगल	16/03/2058	गुरु	04/12/2059
सूर्य	17/05/2056	चंद्र	19/12/2056	मंगल	17/08/2057	राहु	21/04/2058	शनि	10/04/2060
चंद्र	07/06/2056	मंगल	01/01/2057	राहु	26/09/2057	गुरु	24/05/2058	बुध	03/08/2060
मंगल	22/06/2056	राहु	05/02/2057	गुरु	01/11/2057	शनि	01/07/2058	केतु	20/09/2060

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
20/09/2060		21/05/2061		01/07/2062		11/04/2063		10/04/2065	
21/05/2061		01/07/2062		11/04/2063		10/04/2065		20/01/2067	
सूर्य	02/10/2060	चंद्र	24/06/2061	मंगल	17/07/2062	राहु	30/07/2063	गुरु	06/07/2065
चंद्र	22/10/2060	मंगल	18/07/2061	राहु	29/08/2062	गुरु	04/11/2063	शनि	17/10/2065
मंगल	05/11/2060	राहु	16/09/2061	गुरु	06/10/2062	शनि	28/02/2064	बुध	17/01/2066
राहु	12/12/2060	गुरु	10/11/2061	शनि	20/11/2062	बुध	10/06/2064	केतु	24/02/2066
गुरु	13/01/2061	शनि	13/01/2062	बुध	30/12/2062	केतु	23/07/2064	शुक्र	12/06/2066
शनि	21/02/2061	बुध	11/03/2062	केतु	16/01/2063	शुक्र	21/11/2064	सूर्य	14/07/2066
बुध	27/03/2061	केतु	04/04/2062	शुक्र	04/03/2063	सूर्य	28/12/2064	चंद्र	07/09/2066
केतु	10/04/2061	शुक्र	11/06/2062	सूर्य	18/03/2063	चंद्र	27/02/2065	मंगल	14/10/2066
शुक्र	21/05/2061	सूर्य	01/07/2062	चंद्र	11/04/2063	मंगल	10/04/2065	राहु	20/01/2067

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 0 मास 6 दिन

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
11/08/1992		17/08/1998		17/08/2017		17/08/2029		17/08/2050	
17/08/1998		17/08/2017		17/08/2029		17/08/2050		17/08/2056	
	00/00/0000	गुरु	20/12/2001	राहु	17/12/2018	शुक्र	17/09/2033	सूर्य	17/12/2050
	00/00/0000	राहु	30/01/2004	शुक्र	17/04/2021	सूर्य	17/11/2034	चंद्र	17/10/2051
	11/08/1992	शुक्र	11/10/2007	सूर्य	17/12/2021	चंद्र	17/10/2037	मंगल	28/03/2052
शुक्र	15/05/1994	सूर्य	30/10/2008	चंद्र	18/08/2023	मंगल	08/05/2039	बुध	08/03/2053
सूर्य	04/12/1994	चंद्र	21/06/2011	मंगल	07/07/2024	बुध	28/08/2042	शनि	27/09/2053
चंद्र	24/04/1996	मंगल	16/11/2012	बुध	28/05/2026	शनि	07/08/2044	गुरु	17/10/2054
मंगल	19/01/1997	बुध	14/11/2015	शनि	08/07/2027	गुरु	17/04/2048	राहु	18/06/2055
बुध	17/08/1998	शनि	17/08/2017	गुरु	17/08/2029	राहु	17/08/2050	शुक्र	17/08/2056

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
17/08/2056		18/08/2071		18/08/2079		17/08/2096	
18/08/2071		18/08/2079		17/08/2096		00/00/0000	
चंद्र	17/09/2058	मंगल	21/03/2072	बुध	21/04/2082	शनि	21/07/2097
मंगल	28/10/2059	बुध	24/06/2073	शनि	17/11/2083	गुरु	25/04/2099
बुध	08/03/2062	शनि	22/03/2074	गुरु	13/11/2086	राहु	04/06/2100
शनि	28/07/2063	गुरु	18/08/2075	राहु	03/10/2088	शुक्र	12/08/2100
गुरु	18/03/2066	राहु	07/07/2076	शुक्र	24/01/2092		00/00/0000
राहु	17/11/2067	शुक्र	26/01/2078	सूर्य	03/01/2093		00/00/0000
शुक्र	17/10/2070	सूर्य	08/07/2078	चंद्र	15/05/2095		00/00/0000
सूर्य	18/08/2071	चंद्र	18/08/2079	मंगल	17/08/2096		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
11/08/1992		15/05/1994		04/12/1994		24/04/1996		19/01/1997	
15/05/1994		04/12/1994		24/04/1996		19/01/1997		17/08/1998	
शुक्र	20/10/1992	सूर्य	26/05/1994	चंद्र	12/02/1995	मंगल	14/05/1996	बुध	20/04/1997
सूर्य	28/11/1992	चंद्र	23/06/1994	मंगल	22/03/1995	बुध	26/06/1996	शनि	12/06/1997
चंद्र	07/03/1993	मंगल	08/07/1994	बुध	09/06/1995	शनि	21/07/1996	गुरु	21/09/1997
मंगल	28/04/1993	बुध	09/08/1994	शनि	26/07/1995	गुरु	06/09/1996	राहु	24/11/1997
बुध	18/08/1993	शनि	28/08/1994	गुरु	24/10/1995	राहु	06/10/1996	शुक्र	16/03/1998
शनि	23/10/1993	गुरु	03/10/1994	राहु	19/12/1995	शुक्र	28/11/1996	सूर्य	17/04/1998
गुरु	25/02/1994	राहु	25/10/1994	शुक्र	27/03/1996	सूर्य	13/12/1996	चंद्र	06/07/1998
राहु	15/05/1994	शुक्र	04/12/1994	सूर्य	24/04/1996	चंद्र	19/01/1997	मंगल	17/08/1998

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
17/08/1998		20/12/2001		30/01/2004		11/10/2007		30/10/2008	
20/12/2001		30/01/2004		11/10/2007		30/10/2008		21/06/2011	
गुरु	20/03/1999	राहु	16/03/2002	शुक्र	19/10/2004	सूर्य	01/11/2007	चंद्र	13/03/2009
राहु	03/08/1999	शुक्र	13/08/2002	सूर्य	02/01/2005	चंद्र	25/12/2007	मंगल	24/05/2009
शुक्र	27/03/2000	सूर्य	25/09/2002	चंद्र	08/07/2005	मंगल	22/01/2008	बुध	22/10/2009
सूर्य	03/06/2000	चंद्र	10/01/2003	मंगल	16/10/2005	बुध	23/03/2008	शनि	19/01/2010
चंद्र	20/11/2000	मंगल	08/03/2003	बुध	16/05/2006	शनि	28/04/2008	गुरु	08/07/2010
मंगल	18/02/2001	बुध	07/07/2003	शनि	18/09/2006	गुरु	04/07/2008	राहु	23/10/2010
बुध	29/08/2001	शनि	17/09/2003	गुरु	14/05/2007	राहु	16/08/2008	शुक्र	29/04/2011
शनि	20/12/2001	गुरु	30/01/2004	राहु	11/10/2007	शुक्र	30/10/2008	सूर्य	21/06/2011

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
21/06/2011		16/11/2012		14/11/2015		17/08/2017		17/12/2018	
16/11/2012		14/11/2015		17/08/2017		17/12/2018		17/04/2021	
मंगल	29/07/2011	बुध	07/05/2013	शनि	12/01/2016	राहु	10/10/2017	शुक्र	01/06/2019
बुध	18/10/2011	शनि	16/08/2013	गुरु	04/05/2016	शुक्र	13/01/2018	सूर्य	18/07/2019
शनि	05/12/2011	गुरु	24/02/2014	राहु	14/07/2016	सूर्य	09/02/2018	चंद्र	14/11/2019
गुरु	04/03/2012	राहु	26/06/2014	शुक्र	16/11/2016	चंद्र	18/04/2018	मंगल	16/01/2020
राहु	30/04/2012	शुक्र	24/01/2015	सूर्य	22/12/2016	मंगल	24/05/2018	बुध	29/05/2020
शुक्र	08/08/2012	सूर्य	26/03/2015	चंद्र	21/03/2017	बुध	08/08/2018	शनि	16/08/2020
सूर्य	06/09/2012	चंद्र	25/08/2015	मंगल	08/05/2017	शनि	22/09/2018	गुरु	13/01/2021
चंद्र	16/11/2012	मंगल	14/11/2015	बुध	17/08/2017	गुरु	17/12/2018	राहु	17/04/2021

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
17/04/2021		17/12/2021		18/08/2023		07/07/2024		28/05/2026	
17/12/2021		18/08/2023		07/07/2024		28/05/2026		08/07/2027	
सूर्य	01/05/2021	चंद्र	11/03/2022	मंगल	11/09/2023	बुध	24/10/2024	शनि	05/07/2026
चंद्र	04/06/2021	मंगल	26/04/2022	बुध	01/11/2023	शनि	27/12/2024	गुरु	14/09/2026
मंगल	22/06/2021	बुध	30/07/2022	शनि	01/12/2023	गुरु	27/04/2025	राहु	29/10/2026
बुध	30/07/2021	शनि	25/09/2022	गुरु	27/01/2024	राहु	13/07/2025	शुक्र	16/01/2027
शनि	22/08/2021	गुरु	10/01/2023	राहु	03/03/2024	शुक्र	24/11/2025	सूर्य	08/02/2027
गुरु	03/10/2021	राहु	18/03/2023	शुक्र	05/05/2024	सूर्य	01/01/2026	चंद्र	05/04/2027
राहु	31/10/2021	शुक्र	15/07/2023	सूर्य	23/05/2024	चंद्र	07/04/2026	मंगल	05/05/2027
शुक्र	17/12/2021	सूर्य	18/08/2023	चंद्र	07/07/2024	मंगल	28/05/2026	बुध	08/07/2027

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
08/07/2027		17/08/2029		17/09/2033		17/11/2034		17/10/2037	
17/08/2029		17/09/2033		17/11/2034		17/10/2037		08/05/2039	
गुरु	21/11/2027	शुक्र	03/06/2030	सूर्य	10/10/2033	चंद्र	14/04/2035	मंगल	28/11/2037
राहु	14/02/2028	सूर्य	25/08/2030	चंद्र	08/12/2033	मंगल	02/07/2035	बुध	26/02/2038
शुक्र	13/07/2028	चंद्र	20/03/2031	मंगल	09/01/2034	बुध	16/12/2035	शनि	19/04/2038
सूर्य	25/08/2028	मंगल	09/07/2031	बुध	17/03/2034	शनि	24/03/2036	गुरु	28/07/2038
चंद्र	10/12/2028	बुध	28/02/2032	शनि	26/04/2034	गुरु	27/09/2036	राहु	29/09/2038
मंगल	05/02/2029	शनि	15/07/2032	गुरु	09/07/2034	राहु	24/01/2037	शुक्र	18/01/2039
बुध	07/06/2029	गुरु	04/04/2033	राहु	26/08/2034	शुक्र	19/08/2037	सूर्य	18/02/2039
शनि	17/08/2029	राहु	17/09/2033	शुक्र	17/11/2034	सूर्य	17/10/2037	चंद्र	08/05/2039

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
08/05/2039		28/08/2042		07/08/2044		17/04/2048		17/08/2050	
28/08/2042		07/08/2044		17/04/2048		17/08/2050		17/12/2050	
बुध	14/11/2039	शनि	01/11/2042	गुरु	01/04/2045	राहु	21/07/2048	सूर्य	24/08/2050
शनि	05/03/2040	गुरु	06/03/2043	राहु	29/08/2045	शुक्र	03/01/2049	चंद्र	10/09/2050
गुरु	03/10/2040	राहु	24/05/2043	शुक्र	18/05/2046	सूर्य	19/02/2049	मंगल	19/09/2050
राहु	15/02/2041	शुक्र	09/10/2043	सूर्य	01/08/2046	चंद्र	17/06/2049	बुध	08/10/2050
शुक्र	07/10/2041	सूर्य	18/11/2043	चंद्र	05/02/2047	मंगल	19/08/2049	शनि	19/10/2050
सूर्य	13/12/2041	चंद्र	24/02/2044	मंगल	16/05/2047	बुध	01/01/2050	गुरु	10/11/2050
चंद्र	30/05/2042	मंगल	17/04/2044	बुध	14/12/2047	शनि	20/03/2050	राहु	23/11/2050
मंगल	28/08/2042	बुध	07/08/2044	शनि	17/04/2048	गुरु	17/08/2050	शुक्र	17/12/2050

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु	
17/12/2050		17/10/2051		28/03/2052		08/03/2053		27/09/2053	
17/10/2051		28/03/2052		08/03/2053		27/09/2053		17/10/2054	
चंद्र	28/01/2051	मंगल	30/10/2051	बुध	21/05/2052	शनि	27/03/2053	गुरु	04/12/2053
मंगल	20/02/2051	बुध	24/11/2051	शनि	22/06/2052	गुरु	01/05/2053	राहु	15/01/2054
बुध	09/04/2051	शनि	09/12/2051	गुरु	22/08/2052	राहु	24/05/2053	शुक्र	31/03/2054
शनि	07/05/2051	गुरु	07/01/2052	राहु	29/09/2052	शुक्र	02/07/2053	सूर्य	22/04/2054
गुरु	30/06/2051	राहु	25/01/2052	शुक्र	05/12/2052	सूर्य	14/07/2053	चंद्र	14/06/2054
राहु	02/08/2051	शुक्र	25/02/2052	सूर्य	24/12/2052	चंद्र	11/08/2053	मंगल	13/07/2054
शुक्र	01/10/2051	सूर्य	05/03/2052	चंद्र	10/02/2053	मंगल	26/08/2053	बुध	12/09/2054
सूर्य	17/10/2051	चंद्र	28/03/2052	मंगल	08/03/2053	बुध	27/09/2053	शनि	17/10/2054

सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध	
17/10/2054		18/06/2055		17/08/2056		17/09/2058		28/10/2059	
18/06/2055		17/08/2056		17/09/2058		28/10/2059		08/03/2062	
राहु	13/11/2054	शुक्र	09/09/2055	चंद्र	01/12/2056	मंगल	17/10/2058	बुध	11/03/2060
शुक्र	31/12/2054	सूर्य	02/10/2055	मंगल	26/01/2057	बुध	20/12/2058	शनि	30/05/2060
सूर्य	13/01/2055	चंद्र	30/11/2055	बुध	26/05/2057	शनि	26/01/2059	गुरु	29/10/2060
चंद्र	16/02/2055	मंगल	01/01/2056	शनि	04/08/2057	गुरु	08/04/2059	राहु	02/02/2061
मंगल	06/03/2055	बुध	08/03/2056	गुरु	16/12/2057	राहु	23/05/2059	शुक्र	19/07/2061
बुध	13/04/2055	शनि	17/04/2056	राहु	11/03/2058	शुक्र	10/08/2059	सूर्य	05/09/2061
शनि	06/05/2055	गुरु	01/07/2056	शुक्र	06/08/2058	सूर्य	01/09/2059	चंद्र	03/01/2062
गुरु	18/06/2055	राहु	17/08/2056	सूर्य	17/09/2058	चंद्र	28/10/2059	मंगल	08/03/2062

चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
08/03/2062		28/07/2063		18/03/2066		17/11/2067		17/10/2070	
28/07/2063		18/03/2066		17/11/2067		17/10/2070		18/08/2071	
शनि	24/04/2062	गुरु	14/01/2064	राहु	25/05/2066	शुक्र	11/06/2068	सूर्य	03/11/2070
गुरु	22/07/2062	राहु	30/04/2064	शुक्र	20/09/2066	सूर्य	09/08/2068	चंद्र	15/12/2070
राहु	17/09/2062	शुक्र	03/11/2064	सूर्य	24/10/2066	चंद्र	04/01/2069	मंगल	07/01/2071
शुक्र	24/12/2062	सूर्य	27/12/2064	चंद्र	17/01/2067	मंगल	24/03/2069	बुध	24/02/2071
सूर्य	21/01/2063	चंद्र	10/05/2065	मंगल	03/03/2067	बुध	08/09/2069	शनि	24/03/2071
चंद्र	02/04/2063	मंगल	20/07/2065	बुध	06/06/2067	शनि	15/12/2069	गुरु	17/05/2071
मंगल	09/05/2063	बुध	19/12/2065	शनि	02/08/2067	गुरु	21/06/2070	राहु	19/06/2071
बुध	28/07/2063	शनि	18/03/2066	गुरु	17/11/2067	राहु	17/10/2070	शुक्र	18/08/2071

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु	
18/08/2071		21/03/2072		24/06/2073		22/03/2074		18/08/2075	
21/03/2072		24/06/2073		22/03/2074		18/08/2075		07/07/2076	
मंगल	03/09/2071	बुध	01/06/2072	शनि	19/07/2073	गुरु	20/06/2074	राहु	23/09/2075
बुध	07/10/2071	शनि	14/07/2072	गुरु	05/09/2073	राहु	16/08/2074	शुक्र	25/11/2075
शनि	27/10/2071	गुरु	03/10/2072	राहु	05/10/2073	शुक्र	24/11/2074	सूर्य	13/12/2075
गुरु	04/12/2071	राहु	23/11/2072	शुक्र	26/11/2073	सूर्य	23/12/2074	चंद्र	27/01/2076
राहु	28/12/2071	शुक्र	20/02/2073	सूर्य	11/12/2073	चंद्र	04/03/2075	मंगल	20/02/2076
शुक्र	08/02/2072	सूर्य	18/03/2073	चंद्र	18/01/2074	मंगल	11/04/2075	बुध	11/04/2076
सूर्य	20/02/2072	चंद्र	21/05/2073	मंगल	07/02/2074	बुध	01/07/2075	शनि	11/05/2076
चंद्र	21/03/2072	मंगल	24/06/2073	बुध	22/03/2074	शनि	18/08/2075	गुरु	07/07/2076

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
07/07/2076		26/01/2078		08/07/2078		18/08/2079		21/04/2082	
26/01/2078		08/07/2078		18/08/2079		21/04/2082		17/11/2083	
शुक्र	26/10/2076	सूर्य	04/02/2078	चंद्र	02/09/2078	बुध	18/01/2080	शनि	13/06/2082
सूर्य	26/11/2076	चंद्र	27/02/2078	मंगल	02/10/2078	शनि	18/04/2080	गुरु	22/09/2082
चंद्र	13/02/2077	मंगल	11/03/2078	बुध	05/12/2078	गुरु	07/10/2080	राहु	25/11/2082
मंगल	27/03/2077	बुध	06/04/2078	शनि	12/01/2079	राहु	23/01/2081	शुक्र	17/03/2083
बुध	25/06/2077	शनि	21/04/2078	गुरु	24/03/2079	शुक्र	02/08/2081	सूर्य	18/04/2083
शनि	16/08/2077	गुरु	19/05/2078	राहु	08/05/2079	सूर्य	25/09/2081	चंद्र	07/07/2083
गुरु	24/11/2077	राहु	06/06/2078	शुक्र	26/07/2079	चंद्र	08/02/2082	मंगल	18/08/2083
राहु	26/01/2078	शुक्र	08/07/2078	सूर्य	18/08/2079	मंगल	21/04/2082	बुध	17/11/2083

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
17/11/2083		13/11/2086		03/10/2088		24/01/2092		03/01/2093	
13/11/2086		03/10/2088		24/01/2092		03/01/2093		15/05/2095	
गुरु	27/05/2084	राहु	29/01/2087	शुक्र	26/05/2089	सूर्य	12/02/2092	चंद्र	02/05/2093
राहु	25/09/2084	शुक्र	12/06/2087	सूर्य	01/08/2089	चंद्र	31/03/2092	मंगल	05/07/2093
शुक्र	26/04/2085	सूर्य	20/07/2087	चंद्र	16/01/2090	मंगल	25/04/2092	बुध	18/11/2093
सूर्य	26/06/2085	चंद्र	24/10/2087	मंगल	15/04/2090	बुध	18/06/2092	शनि	06/02/2094
चंद्र	24/11/2085	मंगल	14/12/2087	बुध	22/10/2090	शनि	20/07/2092	गुरु	07/07/2094
मंगल	13/02/2086	बुध	01/04/2088	शनि	11/02/2091	गुरु	19/09/2092	राहु	11/10/2094
बुध	04/08/2086	शनि	04/06/2088	गुरु	11/09/2091	राहु	27/10/2092	शुक्र	28/03/2095
शनि	13/11/2086	गुरु	03/10/2088	राहु	24/01/2092	शुक्र	03/01/2093	सूर्य	15/05/2095

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : संकटा 6 वर्ष 5 मास 8 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
11/08/1992		19/01/1999		19/01/2000		19/01/2002		18/01/2005	
19/01/1999		19/01/2000		19/01/2002		18/01/2005		18/01/2009	
संक	29/10/1992	मंग	29/01/1999	पिंग	29/02/2000	धांय	20/04/2002	भ्राम	30/06/2005
मंग	18/01/1993	पिंग	18/02/1999	धांय	30/04/2000	भ्राम	20/08/2002	भद्रि	19/01/2006
पिंग	30/06/1993	धांय	21/03/1999	भ्राम	20/07/2000	भद्रि	19/01/2003	उल्क	19/09/2006
धांय	28/02/1994	भ्राम	30/04/1999	भद्रि	29/10/2000	उल्क	21/07/2003	सिद्ध	30/06/2007
भ्राम	19/01/1995	भद्रि	20/06/1999	उल्क	28/02/2001	सिद्ध	19/02/2004	संक	20/05/2008
भद्रि	29/02/1996	उल्क	20/08/1999	सिद्ध	20/07/2001	संक	19/10/2004	मंग	30/06/2008
उल्क	30/06/1997	सिद्ध	30/10/1999	संक	29/12/2001	मंग	19/11/2004	पिंग	19/09/2008
सिद्ध	19/01/1999	संक	19/01/2000	मंग	19/01/2002	पिंग	18/01/2005	धांय	18/01/2009

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
18/01/2009		19/01/2014		19/01/2020		19/01/2027		19/01/2035	
19/01/2014		19/01/2020		19/01/2027		19/01/2035		19/01/2036	
भद्रि	29/09/2009	उल्क	19/01/2015	सिद्ध	30/05/2021	संक	29/10/2028	मंग	29/01/2035
उल्क	30/07/2010	सिद्ध	20/03/2016	संक	19/12/2022	मंग	18/01/2029	पिंग	18/02/2035
सिद्ध	21/07/2011	संक	20/07/2017	मंग	01/03/2023	पिंग	30/06/2029	धांय	21/03/2035
संक	29/08/2012	मंग	19/09/2017	पिंग	21/07/2023	धांय	28/02/2030	भ्राम	30/04/2035
मंग	19/10/2012	पिंग	19/01/2018	धांय	19/02/2024	भ्राम	19/01/2031	भद्रि	20/06/2035
पिंग	29/01/2013	धांय	20/07/2018	भ्राम	29/11/2024	भद्रि	29/02/2032	उल्क	20/08/2035
धांय	30/06/2013	भ्राम	21/03/2019	भद्रि	19/11/2025	उल्क	30/06/2033	सिद्ध	30/10/2035
भ्राम	19/01/2014	भद्रि	19/01/2020	उल्क	19/01/2027	सिद्ध	19/01/2035	संक	19/01/2036

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
19/01/2036		19/01/2038		18/01/2041		18/01/2045		19/01/2050	
19/01/2038		18/01/2041		18/01/2045		19/01/2050		19/01/2056	
पिंग	29/02/2036	धांय	20/04/2038	भ्राम	30/06/2041	भद्रि	29/09/2045	उल्क	19/01/2051
धांय	30/04/2036	भ्राम	20/08/2038	भद्रि	19/01/2042	उल्क	30/07/2046	सिद्ध	20/03/2052
भ्राम	20/07/2036	भद्रि	19/01/2039	उल्क	19/09/2042	सिद्ध	21/07/2047	संक	20/07/2053
भद्रि	29/10/2036	उल्क	21/07/2039	सिद्ध	30/06/2043	संक	29/08/2048	मंग	19/09/2053
उल्क	28/02/2037	सिद्ध	19/02/2040	संक	20/05/2044	मंग	19/10/2048	पिंग	19/01/2054
सिद्ध	20/07/2037	संक	19/10/2040	मंग	30/06/2044	पिंग	29/01/2049	धांय	20/07/2054
संक	29/12/2037	मंग	19/11/2040	पिंग	19/09/2044	धांय	30/06/2049	भ्राम	21/03/2055
मंग	19/01/2038	पिंग	18/01/2041	धांय	18/01/2045	भ्राम	19/01/2050	भद्रि	19/01/2056

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
19/01/2056		19/01/2063		19/01/2071		19/01/2072		19/01/2074	
19/01/2063		19/01/2071		19/01/2072		19/01/2074		18/01/2077	
सिद्ध	30/05/2057	संक	29/10/2064	मंग	29/01/2071	पिंग	29/02/2072	धांय	20/04/2074
संक	19/12/2058	मंग	18/01/2065	पिंग	18/02/2071	धांय	30/04/2072	भ्राम	20/08/2074
मंग	01/03/2059	पिंग	30/06/2065	धांय	21/03/2071	भ्राम	20/07/2072	भद्रि	19/01/2075
पिंग	21/07/2059	धांय	28/02/2066	भ्राम	30/04/2071	भद्रि	29/10/2072	उल्क	21/07/2075
धांय	19/02/2060	भ्राम	19/01/2067	भद्रि	20/06/2071	उल्क	28/02/2073	सिद्ध	19/02/2076
भ्राम	29/11/2060	भद्रि	29/02/2068	उल्क	20/08/2071	सिद्ध	20/07/2073	संक	19/10/2076
भद्रि	19/11/2061	उल्क	30/06/2069	सिद्ध	30/10/2071	संक	29/12/2073	मंग	19/11/2076
उल्क	19/01/2063	सिद्ध	19/01/2071	संक	19/01/2072	मंग	19/01/2074	पिंग	18/01/2077

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
18/01/2077		18/01/2081		19/01/2086		19/01/2092		19/01/2099	
18/01/2081		19/01/2086		19/01/2092		19/01/2099		00/00/0000	
भ्राम	30/06/2077	भद्रि	29/09/2081	उल्क	19/01/2087	सिद्ध	30/05/2093	संक	12/08/2100
भद्रि	19/01/2078	उल्क	30/07/2082	सिद्ध	20/03/2088	संक	19/12/2094		00/00/0000
उल्क	19/09/2078	सिद्ध	21/07/2083	संक	20/07/2089	मंग	01/03/2095		00/00/0000
सिद्ध	30/06/2079	संक	29/08/2084	मंग	19/09/2089	पिंग	21/07/2095		00/00/0000
संक	20/05/2080	मंग	19/10/2084	पिंग	19/01/2090	धांय	19/02/2096		00/00/0000
मंग	30/06/2080	पिंग	29/01/2085	धांय	20/07/2090	भ्राम	29/11/2096		00/00/0000
पिंग	19/09/2080	धांय	30/06/2085	भ्राम	21/03/2091	भद्रि	19/11/2097		00/00/0000
धांय	18/01/2081	भ्राम	19/01/2086	भद्रि	19/01/2092	उल्क	19/01/2099		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - उल्क	संक - संक	संक - मंग	संक - पिंग	संक - धांय
19/11/2025	19/01/2027	29/10/2028	18/01/2029	30/06/2029
19/01/2027	29/10/2028	18/01/2029	30/06/2029	28/02/2030
उल्क 29/01/2026	संक 12/06/2027	मंग 01/11/2028	पिंग 27/01/2029	धांय 20/07/2029
सिद्ध 22/04/2026	मंग 30/06/2027	पिंग 05/11/2028	धांय 10/02/2029	भ्राम 16/08/2029
संक 25/07/2026	पिंग 05/08/2027	धांय 12/11/2028	भ्राम 28/02/2029	भद्रि 19/09/2029
मंग 06/08/2026	धांय 28/09/2027	भ्राम 21/11/2028	भद्रि 23/03/2029	उल्क 30/10/2029
पिंग 30/08/2026	भ्राम 10/12/2027	भद्रि 02/12/2028	उल्क 19/04/2029	सिद्ध 16/12/2029
धांय 04/10/2026	भद्रि 09/03/2028	उल्क 16/12/2028	सिद्ध 20/05/2029	संक 08/02/2030
भ्राम 21/11/2026	उल्क 25/06/2028	सिद्ध 31/12/2028	संक 25/06/2029	मंग 15/02/2030
भद्रि 19/01/2027	सिद्ध 29/10/2028	संक 18/01/2029	मंग 30/06/2029	पिंग 28/02/2030

संक - भ्राम	संक - भद्रि	संक - उल्क	संक - सिद्ध	मंग - मंग
28/02/2030	19/01/2031	29/02/2032	30/06/2033	19/01/2035
19/01/2031	29/02/2032	30/06/2033	19/01/2035	29/01/2035
भ्राम 05/04/2030	भद्रि 16/03/2031	उल्क 20/05/2032	सिद्ध 18/10/2033	मंग 19/01/2035
भद्रि 20/05/2030	उल्क 23/05/2031	सिद्ध 23/08/2032	संक 21/02/2034	पिंग 20/01/2035
उल्क 14/07/2030	सिद्ध 10/08/2031	संक 09/12/2032	मंग 09/03/2034	धांय 21/01/2035
सिद्ध 15/09/2030	संक 08/11/2031	मंग 22/12/2032	पिंग 10/04/2034	भ्राम 22/01/2035
संक 26/11/2030	मंग 19/11/2031	पिंग 18/01/2033	धांय 27/05/2034	भद्रि 23/01/2035
मंग 05/12/2030	पिंग 12/12/2031	धांय 28/02/2033	भ्राम 29/07/2034	उल्क 25/01/2035
पिंग 23/12/2030	धांय 15/01/2032	भ्राम 23/04/2033	भद्रि 16/10/2034	सिद्ध 27/01/2035
धांय 19/01/2031	भ्राम 29/02/2032	भद्रि 30/06/2033	उल्क 19/01/2035	संक 29/01/2035

मंग - पिंग	मंग - धांय	मंग - भ्राम	मंग - भद्रि	मंग - उल्क
29/01/2035	18/02/2035	21/03/2035	30/04/2035	20/06/2035
18/02/2035	21/03/2035	30/04/2035	20/06/2035	20/08/2035
पिंग 30/01/2035	धांय 21/02/2035	भ्राम 25/03/2035	भद्रि 07/05/2035	उल्क 30/06/2035
धांय 01/02/2035	भ्राम 24/02/2035	भद्रि 31/03/2035	उल्क 16/05/2035	सिद्ध 12/07/2035
भ्राम 03/02/2035	भद्रि 01/03/2035	उल्क 07/04/2035	सिद्ध 26/05/2035	संक 26/07/2035
भद्रि 06/02/2035	उल्क 06/03/2035	सिद्ध 15/04/2035	संक 06/06/2035	मंग 27/07/2035
उल्क 09/02/2035	सिद्ध 11/03/2035	संक 24/04/2035	मंग 07/06/2035	पिंग 31/07/2035
सिद्ध 13/02/2035	संक 18/03/2035	मंग 25/04/2035	पिंग 10/06/2035	धांय 05/08/2035
संक 18/02/2035	मंग 19/03/2035	पिंग 27/04/2035	धांय 14/06/2035	भ्राम 12/08/2035
मंग 18/02/2035	पिंग 21/03/2035	धांय 30/04/2035	भ्राम 20/06/2035	भद्रि 20/08/2035

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - सिद्ध	मंग - संक	पिंग - पिंग	पिंग - धांय	पिंग - भ्राम
20/08/2035	30/10/2035	19/01/2036	29/02/2036	30/04/2036
30/10/2035	19/01/2036	29/02/2036	30/04/2036	20/07/2036
सिद्ध 03/09/2035	संक 17/11/2035	पिंग 21/01/2036	धांय 05/03/2036	भ्राम 09/05/2036
संक 19/09/2035	मंग 19/11/2035	धांय 25/01/2036	भ्राम 12/03/2036	भद्रि 20/05/2036
मंग 21/09/2035	पिंग 24/11/2035	भ्राम 29/01/2036	भद्रि 20/03/2036	उल्क 02/06/2036
पिंग 24/09/2035	धांय 01/12/2035	भद्रि 04/02/2036	उल्क 30/03/2036	सिद्ध 18/06/2036
धांय 30/09/2035	भ्राम 10/12/2035	उल्क 11/02/2036	सिद्ध 11/04/2036	संक 06/07/2036
भ्राम 08/10/2035	भद्रि 21/12/2035	सिद्ध 19/02/2036	संक 25/04/2036	मंग 09/07/2036
भद्रि 18/10/2035	उल्क 03/01/2036	संक 28/02/2036	मंग 26/04/2036	पिंग 13/07/2036
उल्क 30/10/2035	सिद्ध 19/01/2036	मंग 29/02/2036	पिंग 30/04/2036	धांय 20/07/2036

पिंग - भद्रि	पिंग - उल्क	पिंग - सिद्ध	पिंग - संक	पिंग - मंग
20/07/2036	29/10/2036	28/02/2037	20/07/2037	29/12/2037
29/10/2036	28/02/2037	20/07/2037	29/12/2037	19/01/2038
भद्रि 03/08/2036	उल्क 19/11/2036	सिद्ध 28/03/2037	संक 25/08/2037	मंग 30/12/2037
उल्क 20/08/2036	सिद्ध 12/12/2036	संक 28/04/2037	मंग 30/08/2037	पिंग 31/12/2037
सिद्ध 09/09/2036	संक 08/01/2037	मंग 02/05/2037	पिंग 08/09/2037	धांय 02/01/2038
संक 01/10/2036	मंग 12/01/2037	पिंग 10/05/2037	धांय 21/09/2037	भ्राम 04/01/2038
मंग 04/10/2036	पिंग 18/01/2037	धांय 22/05/2037	भ्राम 09/10/2037	भद्रि 07/01/2038
पिंग 10/10/2036	धांय 29/01/2037	भ्राम 07/06/2037	भद्रि 01/11/2037	उल्क 10/01/2038
धांय 18/10/2036	भ्राम 11/02/2037	भद्रि 26/06/2037	उल्क 28/11/2037	सिद्ध 14/01/2038
भ्राम 29/10/2036	भद्रि 28/02/2037	उल्क 20/07/2037	सिद्ध 29/12/2037	संक 19/01/2038

धांय - धांय	धांय - भ्राम	धांय - भद्रि	धांय - उल्क	धांय - सिद्ध
19/01/2038	20/04/2038	20/08/2038	19/01/2039	21/07/2039
20/04/2038	20/08/2038	19/01/2039	21/07/2039	19/02/2040
धांय 26/01/2038	भ्राम 04/05/2038	भद्रि 10/09/2038	उल्क 18/02/2039	सिद्ध 31/08/2039
भ्राम 05/02/2038	भद्रि 20/05/2038	उल्क 05/10/2038	सिद्ध 26/03/2039	संक 17/10/2039
भद्रि 18/02/2038	उल्क 10/06/2038	सिद्ध 04/11/2038	संक 05/05/2039	मंग 23/10/2039
उल्क 05/03/2038	सिद्ध 03/07/2038	संक 08/12/2038	मंग 11/05/2039	पिंग 04/11/2039
सिद्ध 23/03/2038	संक 30/07/2038	मंग 12/12/2038	पिंग 21/05/2039	धांय 22/11/2039
संक 12/04/2038	मंग 03/08/2038	पिंग 20/12/2038	धांय 05/06/2039	भ्राम 16/12/2039
मंग 15/04/2038	पिंग 10/08/2038	धांय 02/01/2039	भ्राम 25/06/2039	भद्रि 14/01/2040
पिंग 20/04/2038	धांय 20/08/2038	भ्राम 19/01/2039	भद्रि 21/07/2039	उल्क 19/02/2040

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 4 वर्ष 11 मास 25 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : उत्तराषाढ़ा - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष	
11/08/1992		06/08/1997		06/08/2004		06/08/2014		06/08/2021	
06/08/1997		06/08/2004		06/08/2014		06/08/2021		06/08/2037	
	00/00/0000	वृश्चि	01/02/1998	धनु	06/08/2005	मेष	01/02/2015	वृष	27/02/2024
	00/00/0000	धनु	15/10/1998	मेष	19/04/2006	वृष	16/03/2016	मिथु	06/08/2025
	00/00/0000	मेष	12/04/1999	वृष	24/11/2007	मिथु	01/11/2016	कर्क	15/12/2028
	00/00/0000	वृष	25/05/2000	मिथु	18/10/2008	कर्क	22/04/2018	सिंह	03/10/2029
	00/00/0000	मिथु	10/01/2001	कर्क	24/11/2010	सिंह	28/08/2018	कन्या	13/03/2031
	11/08/1992	कर्क	01/07/2002	सिंह	25/05/2011	कन्या	15/04/2019	तुला	03/10/2033
कर्क	11/05/1995	सिंह	06/11/2002	कन्या	18/04/2012	तुला	28/05/2020	वृश्चि	17/11/2034
सिंह	27/02/1996	कन्या	24/06/2003	तुला	24/11/2013	वृश्चि	23/11/2020	धनु	23/06/2036
कन्या	06/08/1997	तुला	06/08/2004	वृश्चि	06/08/2014	धनु	06/08/2021	मेष	06/08/2037

मिथुन 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
06/08/2037		06/08/2046		07/08/2067		06/08/2072		06/08/2081	
06/08/2046		07/08/2067		06/08/2072		06/08/2081		00/00/0000	
मिथु	29/05/2038	कर्क	03/01/2051	सिंह	06/11/2067	कन्या	29/05/2073	तुला	27/02/2084
कर्क	18/04/2040	सिंह	22/01/2052	कन्या	18/04/2068	तुला	06/11/2074	वृश्चि	11/04/2085
सिंह	30/09/2040	कन्या	12/12/2053	तुला	04/02/2069	वृश्चि	24/06/2075	धनु	17/11/2086
कन्या	22/07/2041	तुला	22/04/2057	वृश्चि	12/06/2069	धनु	17/05/2076	मेष	31/12/2087
तुला	30/12/2042	वृश्चि	11/10/2058	धनु	12/12/2069	मेष	03/01/2077	वृष	23/07/2090
वृश्चि	18/08/2043	धनु	16/11/2060	मेष	19/04/2070	वृष	13/06/2078	मिथु	31/12/2091
धनु	11/07/2044	मेष	07/05/2062	वृष	05/02/2071	मिथु	04/04/2079	कर्क	11/08/2092
मेष	26/02/2045	वृष	15/09/2065	मिथु	19/07/2071	कर्क	23/02/2081		00/00/0000
वृष	06/08/2046	मिथु	07/08/2067	कर्क	06/08/2072	सिंह	06/08/2081		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कर्क		वृष - सिंह		वृष - कन्या		वृष - तुला		वृष - वृश्चि	
06/08/2025		15/12/2028		03/10/2029		13/03/2031		03/10/2033	
15/12/2028		03/10/2029		13/03/2031		03/10/2033		17/11/2034	
कर्क	21/04/2026	सिंह	30/12/2028	कन्या	20/11/2029	तुला	10/08/2031	वृश्चि	01/11/2033
सिंह	21/06/2026	कन्या	25/01/2029	तुला	12/02/2030	वृश्चि	15/10/2031	धनु	12/12/2033
कन्या	10/10/2026	तुला	13/03/2029	वृश्चि	21/03/2030	धनु	16/01/2032	मेष	10/01/2034
तुला	24/04/2027	वृश्चि	02/04/2029	धनु	12/05/2030	मेष	21/03/2032	वृष	16/03/2034
वृश्चि	19/07/2027	धनु	02/05/2029	मेष	18/06/2030	वृष	18/08/2032	मिथु	22/04/2034
धनु	19/11/2027	मेष	22/05/2029	वृष	10/09/2030	मिथु	10/11/2032	कर्क	17/07/2034
मेष	12/02/2028	वृष	08/07/2029	मिथु	28/10/2030	कर्क	26/05/2033	सिंह	06/08/2034
वृष	27/08/2028	मिथु	03/08/2029	कर्क	15/02/2031	सिंह	11/07/2033	कन्या	12/09/2034
मिथु	15/12/2028	कर्क	03/10/2029	सिंह	13/03/2031	कन्या	03/10/2033	तुला	17/11/2034

वृष - धनु		वृष - मेष		मिथु - मिथु		मिथु - कर्क		मिथु - सिंह	
17/11/2034		23/06/2036		06/08/2037		29/05/2038		18/04/2040	
23/06/2036		06/08/2037		29/05/2038		18/04/2040		30/09/2040	
धनु	14/01/2035	मेष	22/07/2036	मिथु	02/09/2037	कर्क	21/10/2038	सिंह	26/04/2040
मेष	24/02/2035	वृष	25/09/2036	कर्क	03/11/2037	सिंह	24/11/2038	कन्या	11/05/2040
वृष	28/05/2035	मिथु	01/11/2036	सिंह	18/11/2037	कन्या	26/01/2039	तुला	07/06/2040
मिथु	20/07/2035	कर्क	26/01/2037	कन्या	14/12/2037	तुला	16/05/2039	वृश्चि	18/06/2040
कर्क	20/11/2035	सिंह	15/02/2037	तुला	31/01/2038	वृश्चि	03/07/2039	धनु	04/07/2040
सिंह	19/12/2035	कन्या	24/03/2037	वृश्चि	20/02/2038	धनु	10/09/2039	मेष	16/07/2040
कन्या	10/02/2036	तुला	29/05/2037	धनु	22/03/2038	मेष	29/10/2039	वृष	11/08/2040
तुला	13/05/2036	वृश्चि	26/06/2037	मेष	12/04/2038	वृष	16/02/2040	मिथु	26/08/2040
वृश्चि	23/06/2036	धनु	06/08/2037	वृष	29/05/2038	मिथु	18/04/2040	कर्क	30/09/2040

मिथु - कन्या		मिथु - तुला		मिथु - वृश्चि		मिथु - धनु		मिथु - मेष	
30/09/2040		22/07/2041		30/12/2042		18/08/2043		11/07/2044	
22/07/2041		30/12/2042		18/08/2043		11/07/2044		26/02/2045	
कन्या	26/10/2040	तुला	15/10/2041	वृश्चि	16/01/2043	धनु	19/09/2043	मेष	27/07/2044
तुला	13/12/2040	वृश्चि	20/11/2041	धनु	08/02/2043	मेष	12/10/2043	वृष	02/09/2044
वृश्चि	02/01/2041	धनु	12/01/2042	मेष	24/02/2043	वृष	04/12/2043	मिथु	23/09/2044
धनु	01/02/2041	मेष	18/02/2042	वृष	01/04/2043	मिथु	03/01/2044	कर्क	10/11/2044
मेष	22/02/2041	वृष	13/05/2042	मिथु	22/04/2043	कर्क	12/03/2044	सिंह	22/11/2044
वृष	10/04/2041	मिथु	29/06/2042	कर्क	09/06/2043	सिंह	28/03/2044	कन्या	12/12/2044
मिथु	07/05/2041	कर्क	18/10/2042	सिंह	21/06/2043	कन्या	27/04/2044	तुला	18/01/2045
कर्क	08/07/2041	सिंह	13/11/2042	कन्या	12/07/2043	तुला	18/06/2044	वृश्चि	03/02/2045
सिंह	22/07/2041	कन्या	30/12/2042	तुला	18/08/2043	वृश्चि	11/07/2044	धनु	26/02/2045

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - वृष		कर्क - कर्क		कर्क - सिंह		कर्क - कन्या		कर्क - तुला	
26/02/2045		06/08/2046		03/01/2051		22/01/2052		12/12/2053	
06/08/2046		03/01/2051		22/01/2052		12/12/2053		22/04/2057	
वृष	21/05/2045	कर्क	11/07/2047	सिंह	22/01/2051	कन्या	24/03/2052	तुला	26/06/2054
मिथु	08/07/2045	सिंह	29/09/2047	कन्या	26/02/2051	तुला	12/07/2052	वृश्चि	20/09/2054
कर्क	26/10/2045	कन्या	21/02/2048	तुला	28/04/2051	वृश्चि	29/08/2052	धनु	21/01/2055
सिंह	22/11/2045	तुला	05/11/2048	वृश्चि	25/05/2051	धनु	06/11/2052	मेष	17/04/2055
कन्या	08/01/2046	वृश्चि	26/02/2049	धनु	02/07/2051	मेष	25/12/2052	वृष	30/10/2055
तुला	02/04/2046	धनु	06/08/2049	मेष	29/07/2051	वृष	14/04/2053	मिथु	18/02/2056
वृश्चि	09/05/2046	मेष	26/11/2049	वृष	29/09/2051	मिथु	15/06/2053	कर्क	01/11/2056
धनु	30/06/2046	वृष	11/08/2050	मिथु	02/11/2051	कर्क	07/11/2053	सिंह	02/01/2057
मेष	06/08/2046	मिथु	03/01/2051	कर्क	22/01/2052	सिंह	12/12/2053	कन्या	22/04/2057

कर्क - वृश्चि		कर्क - धनु		कर्क - मेष		कर्क - वृष		कर्क - मिथु	
22/04/2057		11/10/2058		16/11/2060		07/05/2062		15/09/2065	
11/10/2058		16/11/2060		07/05/2062		15/09/2065		07/08/2067	
वृश्चि	30/05/2057	धनु	27/12/2058	मेष	24/12/2060	वृष	19/11/2062	मिथु	16/11/2065
धनु	22/07/2057	मेष	18/02/2059	वृष	20/03/2061	मिथु	10/03/2063	कर्क	10/04/2066
मेष	29/08/2057	वृष	21/06/2059	मिथु	07/05/2061	कर्क	23/11/2063	सिंह	15/05/2066
वृष	23/11/2057	मिथु	29/08/2059	कर्क	28/08/2061	सिंह	23/01/2064	कन्या	16/07/2066
मिथु	10/01/2058	कर्क	06/02/2060	सिंह	23/09/2061	कन्या	12/05/2064	तुला	03/11/2066
कर्क	03/05/2058	सिंह	16/03/2060	कन्या	11/11/2061	तुला	25/11/2064	वृश्चि	22/12/2066
सिंह	30/05/2058	कन्या	24/05/2060	तुला	05/02/2062	वृश्चि	19/02/2065	धनु	01/03/2067
कन्या	17/07/2058	तुला	23/09/2060	वृश्चि	14/03/2062	धनु	21/06/2065	मेष	18/04/2067
तुला	11/10/2058	वृश्चि	16/11/2060	धनु	07/05/2062	मेष	15/09/2065	वृष	07/08/2067

सिंह - सिंह		सिंह - कन्या		सिंह - तुला		सिंह - वृश्चि		सिंह - धनु	
07/08/2067		06/11/2067		18/04/2068		04/02/2069		12/06/2069	
06/11/2067		18/04/2068		04/02/2069		12/06/2069		12/12/2069	
सिंह	11/08/2067	कन्या	21/11/2067	तुला	04/06/2068	वृश्चि	13/02/2069	धनु	01/07/2069
कन्या	19/08/2067	तुला	17/12/2067	वृश्चि	24/06/2068	धनु	26/02/2069	मेष	13/07/2069
तुला	03/09/2067	वृश्चि	28/12/2067	धनु	24/07/2068	मेष	07/03/2069	वृष	12/08/2069
वृश्चि	09/09/2067	धनु	14/01/2068	मेष	13/08/2068	वृष	28/03/2069	मिथु	28/08/2069
धनु	18/09/2067	मेष	25/01/2068	वृष	29/09/2068	मिथु	08/04/2069	कर्क	05/10/2069
मेष	25/09/2067	वृष	21/02/2068	मिथु	25/10/2068	कर्क	05/05/2069	सिंह	14/10/2069
वृष	09/10/2067	मिथु	06/03/2068	कर्क	26/12/2068	सिंह	11/05/2069	कन्या	31/10/2069
मिथु	18/10/2067	कर्क	10/04/2068	सिंह	09/01/2069	कन्या	23/05/2069	तुला	29/11/2069
कर्क	06/11/2067	सिंह	18/04/2068	कन्या	04/02/2069	तुला	12/06/2069	वृश्चि	12/12/2069

चर दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 1 वर्ष 0 मास 0 दिन

सिंह 1 वर्ष	
11/08/1992	
11/08/1993	
कन्या	10/09/1992
तुला	11/10/1992
वृश्चि	10/11/1992
धनु	11/12/1992
मक	10/01/1993
कुंभ	09/02/1993
मीन	12/03/1993
मेष	11/04/1993
वृष	12/05/1993
मिथु	11/06/1993
कर्क	12/07/1993
सिंह	11/08/1993

कन्या 2 वर्ष	
11/08/1993	
12/08/1995	
तुला	11/10/1993
वृश्चि	11/12/1993
धनु	10/02/1994
मक	12/04/1994
कुंभ	11/06/1994
मीन	11/08/1994
मेष	11/10/1994
वृष	11/12/1994
मिथु	10/02/1995
कर्क	12/04/1995
सिंह	12/06/1995
कन्या	12/08/1995

तुला 10 वर्ष	
12/08/1995	
11/08/2005	
वृश्चि	11/06/1996
धनु	11/04/1997
मक	10/02/1998
कुंभ	11/12/1998
मीन	11/10/1999
मेष	11/08/2000
वृष	11/06/2001
मिथु	12/04/2002
कर्क	10/02/2003
सिंह	11/12/2003
कन्या	11/10/2004
तुला	11/08/2005

वृश्चिक 6 वर्ष	
11/08/2005	
12/08/2011	
तुला	10/02/2006
कन्या	11/08/2006
सिंह	10/02/2007
कर्क	12/08/2007
मिथु	10/02/2008
वृष	11/08/2008
मेष	09/02/2009
मीन	11/08/2009
कुंभ	10/02/2010
मक	11/08/2010
धनु	10/02/2011
वृश्चि	12/08/2011

धनु 8 वर्ष	
12/08/2011	
12/08/2019	
वृश्चि	11/04/2012
तुला	11/12/2012
कन्या	11/08/2013
सिंह	12/04/2014
कर्क	11/12/2014
मिथु	12/08/2015
वृष	11/04/2016
मेष	11/12/2016
मीन	11/08/2017
कुंभ	12/04/2018
मक	11/12/2018
धनु	12/08/2019

मकर 12 वर्ष	
12/08/2019	
12/08/2031	
धनु	11/08/2020
वृश्चि	11/08/2021
तुला	11/08/2022
कन्या	12/08/2023
सिंह	11/08/2024
कर्क	11/08/2025
मिथु	11/08/2026
वृष	12/08/2027
मेष	11/08/2028
मीन	11/08/2029
कुंभ	11/08/2030
मक	12/08/2031

कुम्भ 2 वर्ष	
12/08/2031	
11/08/2033	
मीन	11/10/2031
मेष	11/12/2031
वृष	10/02/2032
मिथु	11/04/2032
कर्क	11/06/2032
सिंह	11/08/2032
कन्या	11/10/2032
तुला	11/12/2032
वृश्चि	09/02/2033
धनु	11/04/2033
मक	11/06/2033
कुंभ	11/08/2033

मीन 7 वर्ष	
11/08/2033	
11/08/2040	
मेष	12/03/2034
वृष	11/10/2034
मिथु	12/05/2035
कर्क	11/12/2035
सिंह	11/07/2036
कन्या	09/02/2037
तुला	11/09/2037
वृश्चि	12/04/2038
धनु	11/11/2038
मक	12/06/2039
कुंभ	11/01/2040
मीन	11/08/2040

मेष 1 वर्ष	
11/08/2040	
11/08/2041	
वृष	10/09/2040
मिथु	11/10/2040
कर्क	10/11/2040
सिंह	11/12/2040
कन्या	10/01/2041
तुला	09/02/2041
वृश्चि	12/03/2041
धनु	11/04/2041
मक	12/05/2041
कुंभ	11/06/2041
मीन	12/07/2041
मेष	11/08/2041

वृष 3 वर्ष	
11/08/2041	
11/08/2044	
मेष	10/11/2041
मीन	10/02/2042
कुंभ	12/05/2042
मक	11/08/2042
धनु	11/11/2042
वृश्चि	10/02/2043
तुला	12/05/2043
कन्या	12/08/2043
सिंह	11/11/2043
कर्क	10/02/2044
मिथु	12/05/2044
वृष	11/08/2044

मिथुन 1 वर्ष	
11/08/2044	
11/08/2045	
वृष	10/09/2044
मेष	11/10/2044
मीन	10/11/2044
कुंभ	11/12/2044
मक	10/01/2045
धनु	09/02/2045
वृश्चि	12/03/2045
तुला	11/04/2045
कन्या	12/05/2045
सिंह	11/06/2045
कर्क	12/07/2045
मिथु	11/08/2045

कर्क 7 वर्ष	
11/08/2045	
11/08/2052	
मिथु	12/03/2046
वृष	11/10/2046
मेष	12/05/2047
मीन	11/12/2047
कुंभ	11/07/2048
मक	09/02/2049
धनु	11/09/2049
वृश्चि	12/04/2050
तुला	11/11/2050
कन्या	12/06/2051
सिंह	11/01/2052
कर्क	11/08/2052

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मक - मिथु		मक - वृष		मक - मेष		मक - मीन		मक - कुंभ	
11/08/2025		11/08/2026		12/08/2027		11/08/2028		11/08/2029	
11/08/2026		12/08/2027		11/08/2028		11/08/2029		11/08/2030	
वृष	11/09/2025	मेष	11/09/2026	वृष	11/09/2027	मेष	10/09/2028	मीन	11/09/2029
मेष	11/10/2025	मीन	11/10/2026	मिथु	11/10/2027	वृष	11/10/2028	मेष	11/10/2029
मीन	10/11/2025	कुंभ	11/11/2026	कर्क	11/11/2027	मिथु	10/11/2028	वृष	10/11/2029
कुंभ	11/12/2025	मक	11/12/2026	सिंह	11/12/2027	कर्क	11/12/2028	मिथु	11/12/2029
मक	10/01/2026	धनु	11/01/2027	कन्या	11/01/2028	सिंह	10/01/2029	कर्क	10/01/2030
धनु	10/02/2026	वृश्चि	10/02/2027	तुला	10/02/2028	कन्या	09/02/2029	सिंह	10/02/2030
वृश्चि	12/03/2026	तुला	12/03/2027	वृश्चि	12/03/2028	तुला	12/03/2029	कन्या	12/03/2030
तुला	12/04/2026	कन्या	12/04/2027	धनु	11/04/2028	वृश्चि	11/04/2029	तुला	12/04/2030
कन्या	12/05/2026	सिंह	12/05/2027	मक	12/05/2028	धनु	12/05/2029	वृश्चि	12/05/2030
सिंह	11/06/2026	कर्क	12/06/2027	कुंभ	11/06/2028	मक	11/06/2029	धनु	11/06/2030
कर्क	12/07/2026	मिथु	12/07/2027	मीन	11/07/2028	कुंभ	12/07/2029	मक	12/07/2030
मिथु	11/08/2026	वृष	12/08/2027	मेष	11/08/2028	मीन	11/08/2029	कुंभ	11/08/2030

मक - मक		कुंभ - मीन		कुंभ - मेष		कुंभ - वृष		कुंभ - मिथु	
11/08/2030		12/08/2031		11/10/2031		11/12/2031		10/02/2032	
12/08/2031		11/10/2031		11/12/2031		10/02/2032		11/04/2032	
धनु	11/09/2030	मेष	17/08/2031	वृष	17/10/2031	मेष	16/12/2031	वृष	15/02/2032
वृश्चि	11/10/2030	वृष	22/08/2031	मिथु	22/10/2031	मीन	21/12/2031	मेष	20/02/2032
तुला	11/11/2030	मिथु	27/08/2031	कर्क	27/10/2031	कुंभ	27/12/2031	मीन	25/02/2032
कन्या	11/12/2030	कर्क	01/09/2031	सिंह	01/11/2031	मक	01/01/2032	कुंभ	01/03/2032
सिंह	11/01/2031	सिंह	06/09/2031	कन्या	06/11/2031	धनु	06/01/2032	मक	07/03/2032
कर्क	10/02/2031	कन्या	11/09/2031	तुला	11/11/2031	वृश्चि	11/01/2032	धनु	12/03/2032
मिथु	12/03/2031	तुला	16/09/2031	वृश्चि	16/11/2031	तुला	16/01/2032	वृश्चि	17/03/2032
वृष	12/04/2031	वृश्चि	21/09/2031	धनु	21/11/2031	कन्या	21/01/2032	तुला	22/03/2032
मेष	12/05/2031	धनु	26/09/2031	मक	26/11/2031	सिंह	26/01/2032	कन्या	27/03/2032
मीन	12/06/2031	मक	01/10/2031	कुंभ	01/12/2031	कर्क	31/01/2032	सिंह	01/04/2032
कुंभ	12/07/2031	कुंभ	06/10/2031	मीन	06/12/2031	मिथु	05/02/2032	कर्क	06/04/2032
मक	12/08/2031	मीन	11/10/2031	मेष	11/12/2031	वृष	10/02/2032	मिथु	11/04/2032

कुंभ - कर्क		कुंभ - सिंह		कुंभ - कन्या		कुंभ - तुला		कुंभ - वृश्चि	
11/04/2032		11/06/2032		11/08/2032		11/10/2032		11/12/2032	
11/06/2032		11/08/2032		11/10/2032		11/12/2032		09/02/2033	
मिथु	16/04/2032	कन्या	16/06/2032	तुला	16/08/2032	वृश्चि	16/10/2032	तुला	16/12/2032
वृष	21/04/2032	तुला	21/06/2032	वृश्चि	21/08/2032	धनु	21/10/2032	कन्या	21/12/2032
मेष	26/04/2032	वृश्चि	26/06/2032	धनु	26/08/2032	मक	26/10/2032	सिंह	26/12/2032
मीन	01/05/2032	धनु	01/07/2032	मक	31/08/2032	कुंभ	31/10/2032	कर्क	31/12/2032
कुंभ	06/05/2032	मक	06/07/2032	कुंभ	05/09/2032	मीन	05/11/2032	मिथु	05/01/2033
मक	12/05/2032	कुंभ	11/07/2032	मीन	10/09/2032	मेष	10/11/2032	वृष	10/01/2033
धनु	17/05/2032	मीन	16/07/2032	मेष	15/09/2032	वृष	15/11/2032	मेष	15/01/2033
वृश्चि	22/05/2032	मेष	22/07/2032	वृष	20/09/2032	मिथु	20/11/2032	मीन	20/01/2033
तुला	27/05/2032	वृष	27/07/2032	मिथु	25/09/2032	कर्क	25/11/2032	कुंभ	25/01/2033
कन्या	01/06/2032	मिथु	01/08/2032	कर्क	01/10/2032	सिंह	30/11/2032	मक	30/01/2033
सिंह	06/06/2032	कर्क	06/08/2032	सिंह	06/10/2032	कन्या	05/12/2032	धनु	04/02/2033
कर्क	11/06/2032	सिंह	11/08/2032	कन्या	11/10/2032	तुला	11/12/2032	वृश्चि	09/02/2033

चर दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - धनु		कुंभ - मक		कुंभ - कुंभ		मीन - मेष		मीन - वृष	
09/02/2033		11/04/2033		11/06/2033		11/08/2033		12/03/2034	
11/04/2033		11/06/2033		11/08/2033		12/03/2034		11/10/2034	
वृश्चि	15/02/2033	धनु	16/04/2033	मीन	16/06/2033	वृष	29/08/2033	मेष	30/03/2034
तुला	20/02/2033	वृश्चि	21/04/2033	मेष	21/06/2033	मिथु	16/09/2033	मीन	17/04/2034
कन्या	25/02/2033	तुला	27/04/2033	वृष	26/06/2033	कर्क	03/10/2033	कुंभ	04/05/2034
सिंह	02/03/2033	कन्या	02/05/2033	मिथु	01/07/2033	सिंह	21/10/2033	मक	22/05/2034
कर्क	07/03/2033	सिंह	07/05/2033	कर्क	07/07/2033	कन्या	08/11/2033	धनु	09/06/2034
मिथु	12/03/2033	कर्क	12/05/2033	सिंह	12/07/2033	तुला	26/11/2033	वृश्चि	27/06/2034
वृष	17/03/2033	मिथु	17/05/2033	कन्या	17/07/2033	वृश्चि	13/12/2033	तुला	14/07/2034
मेष	22/03/2033	वृष	22/05/2033	तुला	22/07/2033	धनु	31/12/2033	कन्या	01/08/2034
मीन	27/03/2033	मेष	27/05/2033	वृश्चि	27/07/2033	मक	18/01/2034	सिंह	19/08/2034
कुंभ	01/04/2033	मीन	01/06/2033	धनु	01/08/2033	कुंभ	05/02/2034	कर्क	06/09/2034
मक	06/04/2033	कुंभ	06/06/2033	मक	06/08/2033	मीन	22/02/2034	मिथु	23/09/2034
धनु	11/04/2033	मक	11/06/2033	कुंभ	11/08/2033	मेष	12/03/2034	वृष	11/10/2034

मीन - मिथु		मीन - कर्क		मीन - सिंह		मीन - कन्या		मीन - तुला	
11/10/2034		12/05/2035		11/12/2035		11/07/2036		09/02/2037	
12/05/2035		11/12/2035		11/07/2036		09/02/2037		11/09/2037	
वृष	29/10/2034	मिथु	30/05/2035	कन्या	29/12/2035	तुला	29/07/2036	वृश्चि	27/02/2037
मेष	16/11/2034	वृष	17/06/2035	तुला	16/01/2036	वृश्चि	16/08/2036	धनु	17/03/2037
मीन	03/12/2034	मेष	05/07/2035	वृश्चि	03/02/2036	धनु	03/09/2036	मक	04/04/2037
कुंभ	21/12/2034	मीन	22/07/2035	धनु	20/02/2036	मक	20/09/2036	कुंभ	21/04/2037
मक	08/01/2035	कुंभ	09/08/2035	मक	09/03/2036	कुंभ	08/10/2036	मीन	09/05/2037
धनु	26/01/2035	मक	27/08/2035	कुंभ	27/03/2036	मीन	26/10/2036	मेष	27/05/2037
वृश्चि	12/02/2035	धनु	14/09/2035	मीन	14/04/2036	मेष	13/11/2036	वृष	14/06/2037
तुला	02/03/2035	वृश्चि	01/10/2035	मेष	01/05/2036	वृष	30/11/2036	मिथु	01/07/2037
कन्या	20/03/2035	तुला	19/10/2035	वृष	19/05/2036	मिथु	18/12/2036	कर्क	19/07/2037
सिंह	07/04/2035	कन्या	06/11/2035	मिथु	06/06/2036	कर्क	05/01/2037	सिंह	06/08/2037
कर्क	24/04/2035	सिंह	24/11/2035	कर्क	24/06/2036	सिंह	23/01/2037	कन्या	24/08/2037
मिथु	12/05/2035	कर्क	11/12/2035	सिंह	11/07/2036	कन्या	09/02/2037	तुला	11/09/2037

मीन - वृश्चि		मीन - धनु		मीन - मक		मीन - कुंभ		मीन - मीन	
11/09/2037		12/04/2038		11/11/2038		12/06/2039		11/01/2040	
12/04/2038		11/11/2038		12/06/2039		11/01/2040		11/08/2040	
तुला	28/09/2037	वृश्चि	29/04/2038	धनु	28/11/2038	मीन	29/06/2039	मेष	29/01/2040
कन्या	16/10/2037	तुला	17/05/2038	वृश्चि	16/12/2038	मेष	17/07/2039	वृष	15/02/2040
सिंह	03/11/2037	कन्या	04/06/2038	तुला	03/01/2039	वृष	04/08/2039	मिथु	04/03/2040
कर्क	21/11/2037	सिंह	22/06/2038	कन्या	21/01/2039	मिथु	22/08/2039	कर्क	22/03/2040
मिथु	08/12/2037	कर्क	09/07/2038	सिंह	07/02/2039	कर्क	08/09/2039	सिंह	09/04/2040
वृष	26/12/2037	मिथु	27/07/2038	कर्क	25/02/2039	सिंह	26/09/2039	कन्या	26/04/2040
मेष	13/01/2038	वृष	14/08/2038	मिथु	15/03/2039	कन्या	14/10/2039	तुला	14/05/2040
मीन	31/01/2038	मेष	01/09/2038	वृष	02/04/2039	तुला	01/11/2039	वृश्चि	01/06/2040
कुंभ	17/02/2038	मीन	18/09/2038	मेष	19/04/2039	वृश्चि	18/11/2039	धनु	19/06/2040
मक	07/03/2038	कुंभ	06/10/2038	मीन	07/05/2039	धनु	06/12/2039	मक	06/07/2040
धनु	25/03/2038	मक	24/10/2038	कुंभ	25/05/2039	मक	24/12/2039	कुंभ	24/07/2040
वृश्चि	12/04/2038	धनु	11/11/2038	मक	12/06/2039	कुंभ	11/01/2040	मीन	11/08/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	4
मित्र अंक	2, 7, 8, 4
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	94%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	77%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	75%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	72%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	70%	कम खर्च, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	53%	सन्तति सुख, कम खर्च
पन्ना	बुध	50%	कम खर्च, धनार्जन, धन
लहसुनिया	केतु	25%	हानि, व्यय
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

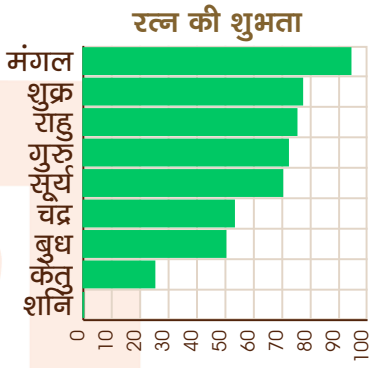

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	10/06/1997	83%	59%	100%	50%	78%	64%	0%	62%	0%
चंद्र	10/06/2007	77%	66%	94%	56%	72%	77%	0%	62%	0%
मंगल	10/06/2014	77%	59%	100%	25%	78%	77%	0%	62%	38%
राहु	10/06/2032	58%	31%	81%	50%	72%	83%	0%	88%	0%
गुरु	10/06/2048	77%	59%	100%	25%	84%	64%	0%	75%	25%
शनि	10/06/2067	58%	31%	81%	56%	72%	83%	2%	81%	0%
बुध	10/06/2084	77%	31%	94%	62%	72%	83%	0%	75%	25%
केतु	10/06/2091	58%	31%	100%	50%	72%	83%	0%	62%	50%
शुक्र	11/06/2111	58%	31%	94%	56%	72%	89%	0%	81%	38%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पुखराज, माणिक्य, मोती एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

नीलम पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र लग्न भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न प्रेम, आकर्षण एवं विपरीत लिंग विषयों में सफलता देगा। हीरा रत्न से धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। शुक्र लग्न भाव से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहे है। इसलिए शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप वैवाहिक जीवन को अनुकूल बनाये रख सकते है। यह हीरा रत्न पारिवारिक सुख-समृद्धि, स्वतंत्र व्यापार में लाभदायक सिद्ध होगा। नियमानुसार धारण किया गया हीरा आपको सुख, ऐश्वर्य, सम्मान, वैभव, विलासिता आदि दे सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यो में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान

करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरू पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरूचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। पंचमेश गुरु लग्नेश सूर्य का मित्र है। अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न की शुभता आपकी आयु पर आने वाले कष्टों का निवारण कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप प्रीति विषय, आमोद-प्रमोद, सांसारिक सुख, संतान एवं ज्ञान को बढ़ा सकते है। रत्न की शुभता से आपको संतान प्राप्ति के योग बन सकते है। आप पुखराज रत्न कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता आपको गणित, ज्योतिश, धार्मिक ग्रंथ, वेद वेदान्त और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों में आपकी रुचि जागृत कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण

करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आपका विदेश गमन सहज हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी। कार्यक्षेत्र में आपकी तरक्की होगी। माणिक्य रत्न की शुभता से आप अस्पतालों, पागलखानों, धर्मार्थ संस्थानों, जेलों और परोपकारी कामों से लाभ हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण से आपका आत्मविश्वास भाव बेहतर होगा। आपको कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी। सूर्य रत्न माणिक्य आपको दूर देश की यात्राएं करवा सकता है। यह आपको आर्थिक रूप से समृद्ध करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको खुशमिजाज बनाएगा। आप मनोरंजन और सुख सुविधाओं की तरफ आकृष्ट होंगे और इन्हें पाने का प्रयास भी करेंगे। रत्न की शुभता से आपकी संतान बहुत अधिक संतुष्ट और प्रसन्नता देने वाले साबित होगी। गुप्त विद्याओं और धार्मिक कार्यो में आपकी रुचि जागृत होगी। दान-पुण्य में आप की सहभागिता बनेंगी। मनोरंजन, खेल और कला से आपका गहरा लगाव रहेगा। मोती रत्न आपका भाग्योदय करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश सूर्य के मित्र है। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न आपकी व्यय संबंधी चिन्ताओं का अंत कर सकता है। मोती रत्न को धारण कर आप अपनी व्यावसायिक कार्यों की परेशानियों में कमी कर सकते है। मोती रत्न आपके मानसिक सुखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हानियों से बचाव करने में आप सफल हो सकते है।

विदेश प्रवास के लिए भी इस रत्न को आप धारण कर सकते है। साथ ही यह रत्न आपको ऋणों से मुक्ति प्राप्त कर अस्पताल, जेल, कारावास इत्यादि से बच सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने से आपके पेट की बीमारियां बढ़ सकती है। आपके द्वारा स्वयं की हानि हो सकती है। शत्रु आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। सरकार या राजा द्वारा सम्मान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। प्रशंसा की कमी का अनुभव आपको हो सकता है। यह रत्न आपके पराक्रम, प्रतिष्ठा और लोकप्रियता में प्रतिकूलता ला सकता है। आभूषण और ऐश्वर्य के लिए भी रत्न का सुख सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप के अधिकतर कार्य अधूरे रह सकते है। आपकी चिंताओं में बढ़ोतरी होगी। तथा संतान से संबंधों की मधुरता कम हो सकती है। बड़े भाई-बहनों से संबंधों की प्रगाढ़ता भी प्रभावित हो सकती है।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूःख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते है। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते है। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़

सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(10/06/2014 - 10/06/2032)

राहु की दशा में आपका गोमेद, हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/06/2032 - 10/06/2048)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, माणिक्य व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(10/06/2048 - 10/06/2067)

शनि की दशा में आपका हीरा, मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(10/06/2067 - 10/06/2084)

बुध की दशा में आपका मूंगा, हीरा, माणिक्य व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(10/06/2084 - 10/06/2091)

केतु की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, माणिक्य, पन्ना व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(10/06/2091 - 11/06/2111)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

सूर्य - 10/06/1997

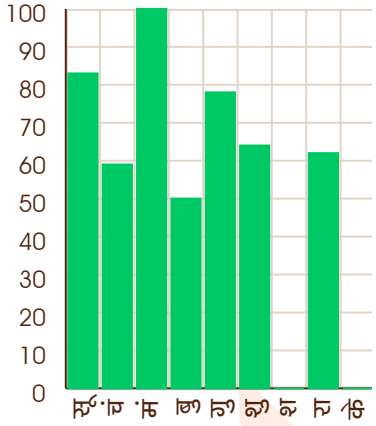

चन्द्र - 10/06/2007

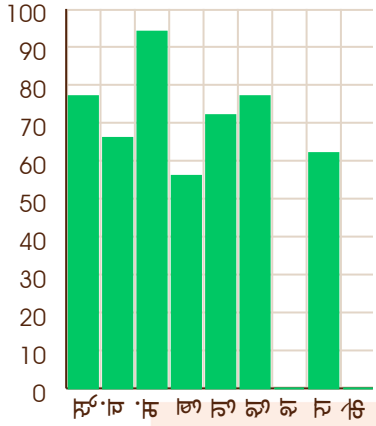

मंगल - 10/06/2014

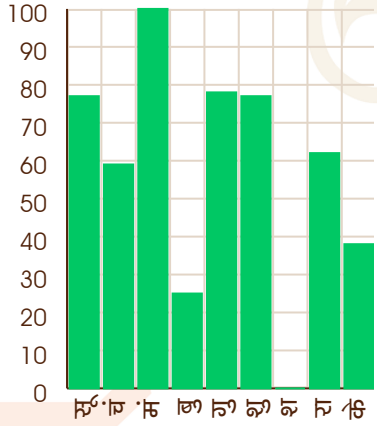

राहु - 10/06/2032

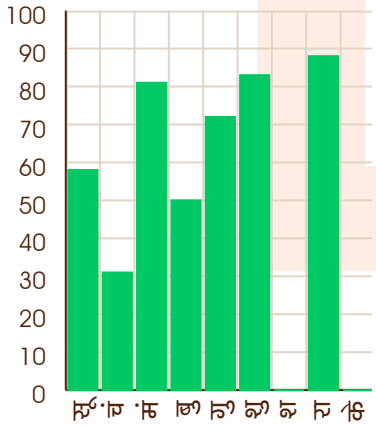

गुरु - 10/06/2048

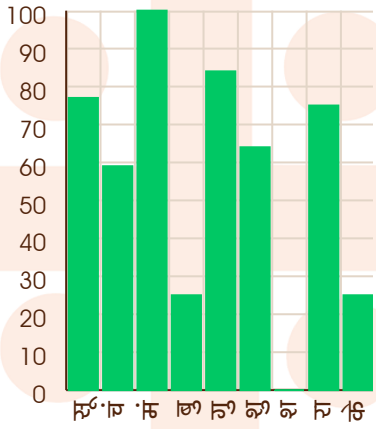

शनि - 10/06/2067

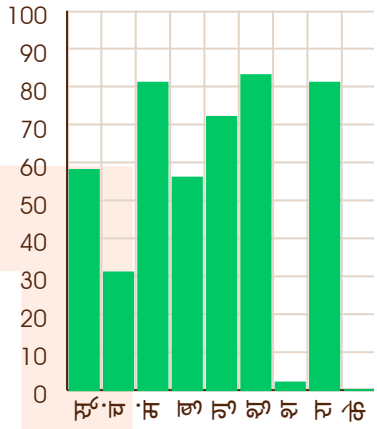

बुध - 10/06/2084

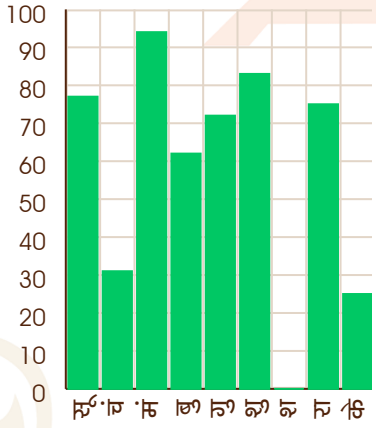

केतु - 10/06/2091

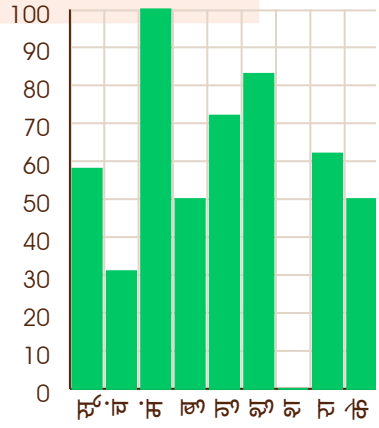

शुक्र - 11/06/2111

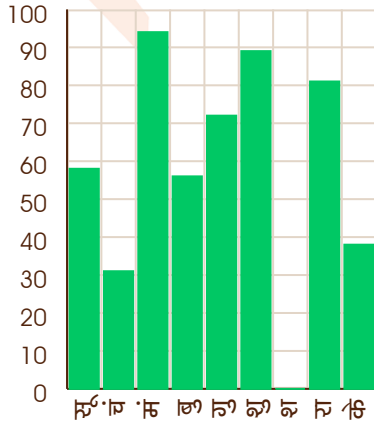

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01झ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपतिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग

में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	11/08/1992-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासानिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य, चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान

करें।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 11 है। एक एवं एक का जोड़ दो आपका मूलांक है। एक का स्वामी सूर्य एवं दो स्वामी चन्द्र है। इन दोंनो ग्रहों के गुण-अवगुण आपके व्यक्तित्व में रहेंगे। आप अनुशासन पसन्द महिला होंगी एवं अपने नाम पर धब्बा नहीं लगायेंगी। समाज में आपकी इज्जत होगी। नाम एवं यश प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रभाव से नियमितता रहेगी। चन्द्र प्रभाव कभी-कभी मनको चंचल भी करेगा उससे बचना हितकर रहेगा अन्यथा सफलता के स्थान पर कई बार चन्द्र प्रभाव असफलता भी दे देगा। संघर्ष करना आपकी आदत बन जायेगी। अतः कभी आप एकदम उच्चता प्राप्त करेंगी तो कभी आपको थोड़ा झुकना भी पड़ेगा।

बौद्धिक स्तर आपका अच्छा रहेगा एवं ऐसे कार्य जिनमें बुद्धि का प्रयोग अधिक होता हो आपके लिये शुभ रहेगा। असफलताओं से आप निराश नहीं होंगी, क्षीण तो होंगी फिर भी हिम्मत नहीं हारेंगी और एक दिन फिर सूर्य की तरह प्रकाशित होंगी।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं क्रोध भी शीघ्र आ जाया करेगा। इन अवगुणों से बचना आपके लिये हितकर रहेगा। आपको ऐसे क्षेत्रों का चुनाव करना हितकर रहेगा, जहाँ अत्यधिक परिवर्तनशीलता न हो। सामान्य कामकाज जिन क्षेत्रों में रहे, वह आपके लिये शुभ रहेंगे। विशेष कर बुद्धि विवेक के कार्य अधिक योगप्रद रहेंगे।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 2 है तथा भाग्यांक 4 है। मूलांक 2 के स्वामी चंद्र तथा भाग्यांक स्वामी हर्षल के मध्य सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपकी कल्पना शक्ति विस्फोटक, आश्चर्यजनक एवं तीव्र गति वाली हो जाएगी। चंद्रमा के प्रभाव से जहां आप एक सहिष्णु महिला होंगी, वहीं हर्षल के प्रभाववश आपकी प्रकृति विध्वंसात्मक रहेगी, जो आपके भाग्योदय में रुकावट का कारण बनेगी। आपके रोजगार, व्यापार में कई बार परिवर्तन होंगे। कुछ एक ऐसी असंभावित घटनाएं होंगी, जो आपकी विचारधारा तथा रोजगार-व्यापार के क्षेत्र को बदल देंगी।

रोजगार के क्षेत्र में आप धीरे-धीरे एक संघर्षशील महिला के रूप में उच्चता को प्राप्त करेंगी। आपके अंदर रोजगार के क्षेत्र में शीघ्र उन्नति प्राप्त करने की कल्पना शक्ति या कला तो अच्छी रहेगी, लेकिन क्रियान्वयन के समय अधीरतावश आप कई बार अपना नुकसान भी कर लेंगी। अपनी इस प्रकृति पर अंकुश रखना आपके भविष्य के लिए सुखदायी रहेगा।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 31 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 40 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 4 की मित्रता 1 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 7, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जुलाई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 7, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्ही वारों में आपके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

शुभ तारीखें

जब कभी आपको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो तो आप किसी भी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में आपका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन आपके कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच-समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

मित्रता या साझेदारी

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना आपके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति आपके लिऐ हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपके लिऐ मूलांक 2, 7 एवं 9 प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसी महिलाएं हमेशा आपके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। हो सके तो आप अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना आपके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उत्तर-पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में आप रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन आपके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। आपका मूलांक 2 होने से आपके शुभ अंक 2,7,9 रहेंगे। यहां आपके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर आप होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2,7,9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी आपके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी-छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए रोजगार-व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंन्ट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारम्भ करें। विधान के अनुसार 54 सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के

दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पांच रत्ती मोती आपके लिए प्रमुख रत्न है। यदि आप मोती धारण ना कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त्त में धारण करें।

अनुकूल देवता

आप चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों से समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र - अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सो तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

वनस्पति धारण

आप सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे, स्वर्ण या तांबे ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य-चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति के लिए चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में सिंह लग्नोदय काल में हुआ था। साथ ही कन्या नवमांश एवं धनु राशि के द्रेष्काण द्वारा एक शुभ आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भारत स्थित शहरी क्षेत्र के निवासियों के समान जो कार्य काल बसों की प्रतीक्षा और दौड़-धूप कर अपने कार्य पर पहुंचते है। उस प्रकार की दिक्कतें का सामना आपको नहीं करना होगा। अर्थात् जन्म के शुभ लक्षण से यह प्रतीत हो रहा है कि आपको जन्म से ही वाहन सुख प्राप्त होगा।

आपको कही भी यात्रा क्रम में सार्वजनिक यातायात के लिए गाड़ी बस ट्रान्सपोर्ट आदि प्रकार की सुविधा हेतु बिना संघर्ष के ही आपकी यात्रा के पथ प्रशस्त होंगे। कही भी बस आदि से यात्रा हेतु कतार में लगकर अपने समय का अपव्यय नहीं करना पड़ेगा। आपको अपनी यात्रा हेतु अपने पास कार-बस आदि उपलब्ध होने का लाभ एवं आनन्द प्राप्त करने का वरदान प्राप्त है। वास्तविकता तो यह है कि आपको अपने स्वयं के पास वाहनों की सुविधा युक्त समर्थ होने का सौभाग्य प्राप्त है।

आपका जीवन उत्तम प्रकार के वाहन सुखों से युक्त, आरामदायक एवं आनन्द से परिपूर्ण रहेगा। आप अपार धन, सम्पति से युक्त कुशाग्र बुद्धि की विद्वान एवं अनेक कलाओं में प्रवीण होंगी। आप सर्वोत्तम प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आप निम्नरूपेण उच्च श्रेणी की सेवा एवं कर्म से संबंधित रहेंगी। जो आपके लिए उपयुक्त एवं लाभप्रद प्रमाणित होगा।

आप व्यक्तिगत रूप से सतत कठिन श्रम करने वाली, उपव्यवसाय की खोज में लगे रहने वाली, दृढ़निश्चयी एवं प्रभावशाली प्राणी होंगी। आप सदा-सर्वदा कार्य विन्दु को निर्धारित समय से पूर्व संपन्न करने के पहले ही अन्य कार्य को हस्तगत करने की इच्छुक रहेंगी तथा आप निश्चित रूप से अपने अनुबंध में सफलता प्राप्त करेंगी।

आप भ्रमणप्रिय हैं। आप अपना अधिक समय घर से बाहर अन्यत्र बिताएंगी। किसी प्रकार विवश होकर कुछ समय अपने प्रिय परिवार के लिए बचाकर उनके साथ बिताएंगी। आप अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य से सभी कार्यों को प्रसन्नतापूर्वक संपन्न कर लेंगी।

आपकी मित्र मण्डली बड़ी होगी। आपके मित्र आपको सहानुभूति पूर्वक मान-प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे। आप अपने रास्ते से चलेंगी-वे मित्रगण आपका सहयोग करेंगे। मित्रगण आपका उच्चस्तरीय मूल्यांकन कर अपनी दिशा मोड़कर आपकी पंक्ति में खड़े होंगे अर्थात् आपको साथ देंगे।

आप मात्र अपने कर्म व्यवसाय से ही नहीं अच्छे लाभ प्राप्त करेंगी। आप तो सदैव भाग्यशाली समय अर्थात् मौके की तलाश में रहकर अपने भाग्य को दाव पर लगाकर लाभ प्राप्त करेंगी। इसका यह अर्थ नहीं कि आप सदैव ही जुआ खेलकर अपनी भाग्योन्नति हेतु प्रयास करेंगी। परन्तु आप यदा-कदा पाशे फेंक कर अपने इस कर्म को लाभदायक प्रमाणित कर सकती है।

आपकी महत्वपूर्ण आय प्रर्याप्त है, इसमें किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं है। आप बहुत धन संचय करने में समर्थ नहीं हैं क्योंकि आप जन सामान्य की नजरों में यह प्रदर्शित करेंगी कि आप अपने परिवार को एक धनाढ्य महिला की तरह भरण पोषण करती हैं। आप सदैव अपनी आय का कुछ अंश अपने घर में व्यय करेंगी।

यद्यपि आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तथापि बाद में कतिपय रोगादि के प्रति आपको थोड़ी सतर्कता बरतना आवश्यक है। क्योंकि आपका कार्यक्रम व्यस्ततम रहता है तथा लम्बे समय तक कार्यरत रहेंगी।

आपकी यह कार्यतंत्रियाँ अधिक समय तक कार्यरत रहने के लिए सक्षम नहीं भी हो सकती है। फलस्वरूप आपके हृदय पर एवं रीढ़ की हड्डियों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतएव आपको इस व्यस्ततम कार्यक्रम का प्रतिकार कर शान्तिपूर्वक विश्राम ग्रहण करना चाहिए।

आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं जीवन पर अनुकूल प्रभाव हेतु पूर्णिमा का व्रत रखना अच्छा होगा। इससे आपको विभिन्न प्रकार का अति सहयोग प्राप्त होगा।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

परन्तु आपको सोमवार एवं शनिवार के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि ये दोनों दिन आपके लिए अनुकूल नहीं है।

आपके लिए अनुकूल एवं प्रदोल्लित करने वाले अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक है। परन्तु अंक 2, 7 एवं 8 अंक आपके लिए प्रतिकूल हैं।

आपके लिए अनुकूल रंग नारंगी, लाल एवं हरा रंग है। रंग नीला, सफेद एवं काला रंग आपके लिए प्रतिकूल रंग है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान

करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी तथा पराक्रमी होते हैं। इनमें आत्मविश्वास की प्रबलता रहती है तथा स्वबुद्धि एवं पराक्रम से ये जीवन में उन्नति तथा सफलता प्राप्त करते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सर्वदा तत्पर रहते हैं। धर्म के प्रति इनकी श्रद्धा रहती है तथा परोपकार सम्बन्धी कार्यों को करने में भी समर्थ होते हैं। फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। राजनीति या कार्यक्षेत्र में ये किसी सम्मानित पद को अर्जित करते हैं एवं समाज में प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होते हैं। इसके अतिरिक्त नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगी। आप एक निडर महिला होंगी तथा निर्भीकता से अपने सांसारिक महत्व के कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। अपने इन कार्यों में आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी तथा धनैश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप सफल होंगी तथा जीवन में उन्नतिमार्ग भी सर्वदा प्रशस्त रहेंगे।

आपके मन में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन करेंगी। साथ ही स्वपरिश्रम से जीवन में उन्नति प्राप्त करेंगी प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगी तथा आपके शत्रु तथा प्रतिद्वन्दी आपसे प्रभावित रहेंगे जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित महिला मानी जाएंगी तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती रहेगी।

लग्न में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। अपने कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें सफलताएं अर्जित करेंगी। आपका स्वरूप भी सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। परिवार को आप सुदृढ़ता प्रदान करेंगी तथा आपके कारण पारिवारिक सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही धनैश्वर्य से युक्त होकर भौतिक सुखसंसाधनों का उपभोग करेंगी।

आपके स्वभाव में गम्भीरता तथा धैर्य का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यों को गम्भीरतापूर्वक सोच विचारकर सम्पन्न करेंगी तथा उनमें आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति होगी परन्तु यदा कदा आप निर्णय लेने में शीघ्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। अतः ऐसे समय में आप अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना कर सकते हैं। विलासिता सम्बन्धी वस्तुओं के प्रति आपका पूर्ण आकर्षण होगा तथा इन्हें प्राप्त करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। मित्रों के मध्य आप आदरणीय होंगी तथा उनसे इच्छित

लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप अपने साहस एवं पराक्रम के द्वारा इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी एवं धनैश्वर्य से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगी तथा आपात्काल के लिए आप के पास कुछ न कुछ धन अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की आपके मन में प्रबल भावना रहेगी तथा इससे आपको अत्यंत ही प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। अतः समय समय पर अन्य जनों को अपने घर में आमंत्रित करती रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति से युक्त रहेगा तथा समृद्धि भी बनी रहेगी परन्तु पैतृक सम्पति को अल्प मात्रा में ही अर्जित करेंगी तथा जीवन में जो कुछ अर्जित करेंगी स्व परिश्रम तथा पराक्रम से करेंगी।

यह भाव वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा बुध ग्रह वाणी का प्रतिनिधिग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में मृदुता तथा ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित दौरान आपकी- ठोस तर्को से सहमत भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त अपने विचारों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ रहेंगी। आप अधिकांश धन अपनी विद्वता से अर्जित करेंगी। तथा जीवन में अन्य भौतिक सुख संसाधन तथा स्वर्णादि धातुओं की भी प्राप्ति होगी। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप प्रसन्नचित महिला होंगी तथा स्मरण शक्ति भी तीव्र रहेगी एवं दीर्घकाल तक किसी दृष्ट वस्तु को नहीं भूलेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन भी शीघ्रता से करेंगी। जीवन में भाई बहिनों से युक्त रहेंगी तथा उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आप उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सुविधाएं प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी परन्तु यदि कभी वे आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते या प्रतिकूल व्यवहार करते है तो आप शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगी परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी। साथ ही पारिवारिक शान्ति के लिए ऐसे अवसरों की उपेक्षा भी करेंगी।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा उत्तेजना में कभी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगी। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगी तथा समाज में आदरणीय समझी जाएंगी। आपको संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरणों की प्राप्ति होगी तथा टेलीफोन दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुखी एवं वैभवशाली जीवन व्यतीत करेंगी। आपको रोमांटिक संगीत प्रिय लगेगा तथा यदा कदा इससे मित्रों का मनोंरजन भी करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं भी होंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं ख्याति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही यात्रा के मध्य आपके नवीन मित्र बनेंगे। संबंधियों से आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी एवं अध्ययन कार्य के प्रति भी रूचिशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचल तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। साथ ही सेवक वर्ग की बहुलता रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप ऐश्वर्यशाली महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते है। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकती है लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी लेकिन संबंधों में औपचारिक्ता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकती हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। तथा राहु भी अपनी नीच राशि में होकर पंचमभाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से आप की बुद्धि में निर्मलता की कमी होगी तथा उग्रता अधिक होगी। आप में शीघ्र निर्णय लेने की शक्ति में भी न्यूनता होगी एवं कठिन या आसान समस्याओं का समाधान करने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है तथापि सामान्य कार्य-कलापों को आप बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन शास्त्र के विषयों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान एवं पाश्चात्य साहित्य में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इसमे ज्ञानार्जन कर के शोध कार्य या नवीन सिद्धांतो का प्रतिपादन भी कर सकती है।

पंचमभाव में राहु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आपकी काफी रूचि होगी तथा मन बहलाव एवं मनोरंजन के लिए आप सामान्य रूप से प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगी। लेकिन प्रेम के क्षेत्र में आप को मर्यादा आदर्श एवं नैतिकता का अवश्य पालन करना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा कोई अप्रिय घटना भी घटित हो सकती है।

जीवन में आपको संतति की प्राप्ति विलम्ब से होगी तथापि एक पुत्र अवश्य होगा तथा कन्या सन्तति की अधिकता हो सकती है। आपकी सन्तति तेजस्वी पराक्रमी एवं चतुर होगी तथा प्रवृति से वे जिद्दी एवं अपनी मर्जी के कार्य करने वाले होंगे। जिससे माता पिता का कहना कम ही मानेंगे तथा जो भी करेंगे स्वतन्त्र रूप से अपने आप करेंगे। जहां माता पिता की सलाह या सहयोग आवश्यक हो वहां भी नहीं लेंगी। इससे यद्यपि आपको किंचित परेशानी हो सकती है। लेकिन आपको अधिक चिंतित नहीं होना चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए। इससे आपसी विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा। आपको बृद्धावस्था में बच्चों से अधिक अपेक्षा नहीं करनी चाहिए तथा स्वयं के लिए वांछित धन संचय करके रखना चाहिए।

अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चों की रूचि कम ही होगी। अतः उनकी शिक्षा सामान्य होगी यद्यपि आप अपनी ओर से उनकी शिक्षा पर पूर्ण व्यय करेंगी तथा आधुनिक स्तर प्रदान करने की कोशिश करेंगी लेकिन बच्चों में चतुराई का भाव अधिक होगा। अतः वे स्वजीविकार्जन में समर्थ होंगे। उनकी तेजस्वी प्रकृति के कारण यदा-कदा अन्य जनों से वाद-विवाद भी हो सकता हैं लेकिन अपने नम्र व्यवहार से आप स्थिति को सम्भालने में समर्थ होंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में मजबूत विपक्ष या शत्रु का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रही हों या स्वयं का कोई व्यवसाय चला रही हों तो सहयोगियों या साझेदार आदि से आपका विरोध या शत्रुता का भाव अपरिहार्य कारणों से उत्पन्न हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक किसी के साथ भी शत्रुता के भाव की उपेक्षा करेंगी परन्तु आपके कार्य कलापों से अन्य जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे। इसी संदर्भ में कोई मुकद्दमे बाजी प्रारंभ हो सकती है परन्तु आप अपने धैर्य बुद्धिमता शान्ति तथा प्रतिभा से शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी तथा शत्रु की गतिविधियों से कभी भी विचलित नहीं होंगी।

आपकी सेवा करने के लिए आपके पास नौकर होंगे लेकिन उनकी संख्या अधिक रहेगी। अतः उनमें से कोई एक आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः नौकरों का चुनाव करते समय अत्यधिक सावधानी का पालन करना चाहिए। आपके संबन्धी भी आपके लिए कार्य क्षेत्र में यदा कदा हानिकारक सिद्ध हो सकते है तथा वे ही आपके वास्तविक शत्रु होंगे। अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

आप आवश्यकतानुसार सीमित व्यय करने की उत्सुक रहेंगी। अतः ऋण आदि लेने के अवसर बहुत कम आएंगे परन्तु युवास्था में स्थिति आ सकती है लेकिन आप उसका यथासमय भुगतान करने में समर्थ रहेंगी। मामा मामियों का आपके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे साथ ही मामाओं पर मामियों का अधिकार होगा। आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यद्यपि आप मुकद्दमे आदि की उपेक्षा करेंगी तथा कोर्ट से बाहर ही मामलों खत्म करने की इच्छा रखेंगी। यदि ऐसा नहीं होगा तभी आप कोर्ट में जाएंगी। इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं प्रभाव से विरोधियों का दमन करके शान्ति पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया कुम्भराशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव कुल में श्रेष्ठ पित प्रकृति व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है साथ ही वह तेजस्वी पराक्रमी एवं शिक्षित होता है एवं स्वाभिमान की भावना भी मन में विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वी स्वभाव के स्वाभिमानी व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगे। कुम्भ राशि के प्रभाव से वह कुल में श्रेष्ठ होंगे तथा सेवकों से भी युक्त रहेंगे परन्तु उनकी प्रवृति अधिक व्ययशील होगी एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगे।

आपके पति का वर्ण किंचित लालिमा लिए गौरवर्ण होगा तथा कद ऊंचा होगा साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा एवं शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ होगा लेकिन अग्नि तत्व सूर्य एवं वायुतत्व कुम्भ राशि के प्रभाव से शरीर में पतलापन रहेगा। इससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा। इसके अतिरिक्त कला एवं भौतिक वस्तुओं के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में कुंभ राशि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना रहेगी। आपका विवाह प्रेम विवाह होगा या स्वयं ही वर का चुनाव करेंगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग का भाव विद्यमान होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु दोनों के स्वभाव में तेजस्विता के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी जिससे अल्प समय के लिए संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे मध्यम होंगे। सास ससुर से आपके संबंध अच्छे होंगे एवं एक दूसरे के प्रति यथोचित सम्मान एवं स्नेह का भाव विद्यमान होगा।

आपके पति का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सामान्यतया साझेदारी अनुकूल होगी। परंतु अत्यावश्यक होने पर ही सोच समझकर साझेदार का चुनाव करना चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा आध्यात्म, ज्योतिष तथा तंत्र मंत्र आदि पर पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही इसका उचित ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। आपकी पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आप इससे लाभान्वित होती रहेंगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अवश्य होगी तथा किसी वृद्ध जन की जायदाद भी आपके नाम हो सकती है। आप सामान्यतया सर्व प्रकार से खुशहाल रहेंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनेंगी। आपके पास एक से अधिक आवास स्थल भी हो सकते हैं। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा एवं ससुराल पक्ष धनऐश्वर्य से युक्त रहेगा ।

बीमा आदि करवाने से आपको समय समय पर लाभ हो सकता है परन्तु दीर्घावधि की अपेक्षा लधुअवधि के बीमों से आपको शीघ्र एवं उचित लाभ की प्राप्ति हो सकती है तथा सम्बधित वस्तु की भी पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि का कोई विशेष योग नहीं है। यद्यपि एक बार चोर अवश्य इसके लिए प्रयत्न करेंगे लेकिन किसी कीमती वस्तु को ले जाने में असफल रहेंगे अतः आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं की पूर्ण सुरक्षा रखनी चाहिए। साथ ही दुर्घटना आदि की उपेक्षा के लिए आपको तेज वाहन नहीं चलाना चाहिए साथ तथा शारीरिक सुरक्षा के लिए सतर्क रहना चाहिए। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगी तथा धार्मिक एवं पारिवारिक परम्पराओं को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप प्रतिदिन ईश्वर का ध्यान अवश्य करेंगी परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि आपके द्वारा यह विधान कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाया गया है। धार्मिक कार्यो पर व्यय करने में भी अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगी जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि की भी इच्छुक रहेंगी। तीर्थ स्थानों की यात्रा में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि भीड़ भरे वातावरण आप अपने लिए असुविधा जनक समझती हैं। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने में भी रूचिशील रहेंगी। साथ ही अर्न्तप्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी फलतः आपके द्वारा की गई भविष्य वाणियां प्रायः सत्य सिद्ध होंगी।

आप एक उच्च शिक्षा प्राप्त विदुषी होंगी तथा समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगी एवं विकट परिस्थितियों में भाग्यबल से समाधान हो जाएगा तथा आप सुरक्षा की अनुभूति करेंगी। लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ सम्मान तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित होगी। पौत्रों से आपको खुशी एवं सहयोग मिलेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सम्मान ऐश्वर्य एवं खुशहाली प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा की प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगी ।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही मंगल भी दशमभाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमि तत्व तथा मंगल अग्नितत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से युक्त होगा परन्तु श्रमसाध्य का भाव भी इसमें विद्यमान रहेगा। साथ ही इसमें आपको वांछित उन्नति तथा सफलता की प्राप्ति होती रहेगी जिससे मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी।

मंगल की दशमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आपकी आजीविका औषधि विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, इलैक्ट्रोनिक्स एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग, होटल प्रबन्धक या कर्मचारी, पुलिस, सी आई डी, सेना, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, शस्त्र निर्माता एवं पराक्रमी क्षेत्रों में होगी। साथ ही राजनीति में भी आप अपने पराक्रम एवं ओजस्विता के भाव से सफलता अर्जित कर सकती हैं। अतः आपको अपने उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर उन्नति के लिए यत्नपूर्वक आजीविका के लिए उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों का ही चयन करना चाहिए जिससे आप बिना किसी व्यवधान एवं समस्या के अपनी आजीविका यापन करने में तत्पर रहें।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार, सेना या पुलिस के वस्त्र, सोना आदि धातु कार्य, विद्युत एवं इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण, रासायनिक वस्तुओं तथा होटल आदि के कार्य से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही तरल पदार्थो या द्रव्यों से भी आप को वांछित धन की प्राप्ति हो सकती है। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करना चाहिए जिससे आपके उन्नति एवं लाभमार्ग सर्वदा प्रशस्त रहें।

योगकारक ग्रह मंगल की दशमभाव में दिग्वली स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको विशिष्ट मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में भी सफल होंगी। इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश व्याप्त होगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त सामाजिक संस्थाओं यथा क्लब आदि में भी किसी पदाधिकारी के रूप में कार्य कर सकती है। आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगी अतः जीवन में मान सम्मान प्रतिष्ठा एवं यश शीध्र ही प्राप्त होगा।

आपके पिता एक पराक्रमी यशस्वी तेजस्वी एवं बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा समाज में अन्य जनों पर उनका प्रभाव होगा एवं उनसे उन्हें वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा अपनत्व का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का वे समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में भी उन्नति एवं सफलता उन्हीं के सहयोग से प्राप्त होगी परन्तु आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान में वृद्धि करने में समर्थ होंगे। आप दोनों के आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त वैचारिक तथा सैद्धान्तिक समानता के कारण संबंधों में परस्पर मधुरता बनी रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी। साथ ही अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को समय समय पर परिश्रम एवं पराक्रम से पूर्ण करने में सफल होंगी। अपनी चतुराई तथा कार्यकुशलता से आप सदैव उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। आप की प्रवृति सक्रिय रहेगी तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने से धन एवं लाभ अर्जित करेंगी। लेखन, कमीशन, प्रेस,समाचारपत्र तथा व्यापारादि से आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित कर सकती हैं। यदि आप कहीं भी कार्यरत नहीं तो आपके पति इनसे लाभ अर्जित करेंगे। आपका ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से अधिक लगाव रहेगा तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह एवं सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगी तथापि भाइयों से आपको समय समय पर सहयोग मिलता रहेगा ।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली की आप सम्मान्नीया सदस्या होंगी तथा इनके मध्य आनन्द की अनुभूति करेंगी। आपके समस्त मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे जिससे परस्पर कई विषयों पर तर्क वितर्क करेंगे इससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। समाज या अपने क्षेत्र में भी आप प्रतिष्ठत एवं ख्याति प्राप्त होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही लोगो की भलाई तथा सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेगी जिससे समय समय के साथ आपको किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगी तथा उनसे संबंध स्थापित करके प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धार्मिकता से युक्त रहेगी तथा तीर्थ यात्राओं पर आपका व्यय होगासाथ ही परोपकारी संबंधी कार्य तथा ब्राह्मणो की सेवार्थ आप किसी धार्मिक स्थल का निर्माण भी करवा सकती हैं। साथ ही कुआं, बगीचा या रास्ते आदि का निर्माण करके समाज में मान सम्मान अर्जित करेंगी। साथ ही परिवार एवं वच्चों के स्तर में वृद्धि पर भी आप इच्छित व्यय होगा।

आपका सामान्य व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः अवस्था के साथ साथ आपको आर्थिक परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है। आप एक स्वच्छंद प्रवृति की महिला होंगी तथा उनमुक्त हाथों से व्यय करेंगी एवं बिना अपनी आर्थिक स्थिति को देखे हुए अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएगी इससे आपके प्रभाव तथा मान सम्मान में वृद्धि तो होगी परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः ऐसे कार्यो को आप यदि सोच समझकर सावधानी से सम्पन्न करेंगी तो आप ऐसी स्थिति से सुरक्षित हो सकती हैं। युवावस्था में आपको कई प्रकार से उतार चढ़ाव देखने पड़ेगे लेकिन व्यय जैसा भी करेंगी शुभ ही अधिक करेंगी।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी तथापि भ्रमण आदि के लिए भी यात्राएं आदि होती रहेगी। साथ ही विदेश भ्रमण के योग भी बनते है तथा समयानुसार आप काफी समय तक वहां प्रवास भी कर सकती हैं। इस प्रकार आपका सामान्य समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि धनु तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि नकुल, वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, वर्ग मूषक तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "भे" या "भै" से प्रारम्भ होगा।

समाज में आप सर्वमान्य महिला होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। क्रोध गुणों का आप में अभाव रहेगा तथा सात्विक गुणों से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी एवं शान्त चित से अपने अधिकांश सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखों से युक्त रहकर जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। धन दौलत का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा। तथा प्रायः आप इससे सुसम्पन्न ही रहेगी। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न शास्त्रों की अच्छी ज्ञाता होंगी। एवं कई प्रकार के कार्यो को करने में भी दक्ष रहेंगी। अतः समाज में आप एक विदुषी के रूप में ख्याति प्राप्त कर सकेंगी।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही विनयशील रहेगा तथा लोग आपकी विनम्रता से हमेशा प्रभावित रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में गहन निष्ठा का भाव रहेगा। तथा धार्मिक क्रियाओं के प्रति हमेशा रूचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा तथा मित्रों की संख्या भी अधिक रहेगी जिनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति भी होगी। आप में कृतज्ञता का सदगुण भी विद्यमान रहेगा। तथा समाज में अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उपकार स्वीकार करेंगी तथा साथ ही हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में सभी वर्गो में आपका समान स्नेह रहेगा तथा सबको सहयोग एवं मदद करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। अतः सभी वर्गों के मध्य आपको सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त होगी।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आप शरीर से स्थूल भी होंगी तथा कद भी सामान्य रहेगा। इसके साथ ही आप एक साहस एवं वीरता के गुणों से भी सम्पन्न रहेंगी। कलह या विवाद आदि में शत्रुओं

पर विजय प्राप्त करने में आप हमेशा सफल रहेंगी।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आपके हृदय में प्रारम्भ से ही दानशीलता का भाव विद्यमान रहेगा। तथा आप अपने जीवन काल में इस प्रवृति का पालन करने के लिए सदैव रूचिशील एवं प्रयत्नशील रहेंगी। आपके हृदय में दया तथा करूणा का भाव भी विद्यमान रहेगा। तथा समय समय पर दीन दुःखियों तथा जरूरतमन्द लोगों के प्रति आप इस भावना का पालन करती रहेंगी। आपके सभी कार्य अच्छे होंगे। जिससे अन्य लोगों को भी लाभ होगा। समाज में आप प्रभुता से सुसम्पन्न रहेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपको हार्दिक आदर तथा मान सम्मान भी प्रदान करेंगे। पति एवं पुत्र का आप पूर्ण सुख अपने जीवन में प्राप्त करेंगी। साथ ही आपका शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। परन्तु कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति का समाज में प्रदर्शन भी करेंगी।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोळभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

धनु राशि में पैदा होने के कारण आपकी मुखाकृति तथा कण्ठभाग दीर्घकार रहेंगे।

साथ ही ओंठ, दांत तथा कानों में भी सुन्दरता रहेगी। आपकी भुजाएं मांसल तथा पुष्टता से युक्त रहेंगी। पिता से प्राप्त धन के द्वारा आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आपके मन में दानशीलता की भावना भी रहेगी। जिसका समय समय आप पर यथाशक्ति पालन करती रहेंगी। आपकी रूचि लेखन कार्यों में भी रहेगी तथा कविता सृजन में आप सफलता एवं ख्याति को प्राप्त करेंगी। आपका शारीरिक बल अच्छा रहेगा। अतः शरीर में बलाभाव नहीं रहेगा। जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में आप निपुण रहेंगी। तथा अपने भाषणों के द्वारा सभी जनों को प्रभावित करके उनसे उचित मान सम्मान प्राप्त करेंगी साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने की भी आपमें योग्यता रहेगी। चित्रकला के प्रति भी आपका रूझान रहेगा। तथा इस क्षेत्र में आशातीत प्रसिद्धि एवं सफलता को प्राप्त करने में भी आप सक्षम सिद्ध हो सकती हैं। आपका स्वभाव गम्भीरता से युक्त रहेगा। अतः आपके सभी कार्य गम्भीरता पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी। तथा धर्म के विषय में आप पर्याप्त मात्रा में ज्ञार्नाजन करेंगी। अपने भाईयों से आपके सबंध सामान्य रहेंगे। साथ ही आप समानता के व्यवहार से ही वश में रहेंगी।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आँखे गोलाकृति लिए सुन्दरता से युक्त रहेंगी तथा हाथ एवं कन्धों की लम्बाई भी अधिक होगी। आपका वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता है। पानी के समीप निवास करना या घूमना आपको अच्छा लगेगा। अतः ऐसे अवसरों को प्राप्त करने के लिए आप प्रायः प्रयत्नशील रहेंगी। कठिन से कठिन विषय को सुगमता पूर्वक हृदयगंम करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगी। आप प्रायः मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्टता को प्राप्त होंगी। साथ ही समाज में अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप हृदय से उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनके प्रति आभार प्रकट करेंगी। अपने इस कृतज्ञता के भाव से आप सभी लोगों से मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक उद्यमी महिला होंगी तथा हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगी। बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगी तथा इसी वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं

महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगी। आप त्याग की भावना से भी युक्त रहेंगी। एवं अवसरानुकूल इस प्रवृति का पालन भी करेंगी। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेगा। तथा मन में साहस तथा विनम्रता का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप सर्वदा सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप उच्चाधिकार प्राप्त तथा धनाढ्य लोगों के मध्य लोकप्रिय रहेंगी। एवं उनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग भी अर्जित करेंगी।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

विभिन्न प्रकार की कलाओं को सम्पन्न करने की योग्यता से भी आप युक्त रहेंगी। आपका स्वभाव विनम्र तथा सुशील रहेगा। एवं चरित्र से भी आप निर्मल रहेंगी। जिससे अन्य जन आपके प्रति सम्मान का भाव प्रदर्शित करेंगे। आप एक स्पष्ट वक्ता होंगी। तथा किसी भी बात को स्पष्ट कहने में विश्वास रखेंगी। आपकी इस स्पष्टवादिता से अन्यजन पूर्ण रूपेण आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप व्यय को अत्यन्त सोच समझकर अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए सम्पन्न करेंगी।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर तथा सुडौलता से युक्त रहेंगे। साथ ही परिवार तथा कुल में आपको श्रेष्ठता प्राप्त होगी। तथा समस्त परिवारिकजन आपको यथा योग्य स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिकित चित्रकला तथा इन्जीनियरिंग में विशेष योग्यता अर्जित करके ख्याति भी प्राप्त कर सकेंगी।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक साहसी तथा निर्भय प्रकृति की महिला होंगी। तथा जीवन में हमेशा सत्य का पालन करने में तत्पर रहेंगी एवं इसको अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगी। स्थिर कार्यों को करने में आप हमेशा रूचिशील रहेंगी तथा आपकी बुद्धि भी स्थिर ही रहेगी। आपके मन में चंचलता का प्राय अभाव ही रहेगा। साथ ही दूसरे लोंगो के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव भी रहेगा। तथा किसी के प्रति अनावश्यक द्वेष का भाव आपके मन में नहीं रहेगा। आप एक सुयोग्य गुणवान एवं बुद्धिमान पुरूष को अपने जीवन साथी के रूप में प्राप्त करेंगी तथा आनन्द पूर्वक गृह सुख का उपभोग करेंगी। आपकी वाणी मधुर एवं प्रिय होगी। जिससे लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपका शरीर भी स्थूलता से युक्त रहेगा।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।

शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सदगुणों से सम्पन्न होकर समाज में एक आदरणीय तथा लोकप्रिय महिला होंगी। धार्मिक प्रवृति की होने के कारण आपकी देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा की भावना विद्यमान रहेगी। सहनशीलता के भाव का आपमें सर्वदा अभाव रहेगा। फलतः आपको कई बार अनावश्यक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा धार्मिक कार्यकलापों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा। परन्तु आप कभी कभी अन्य जनों के समक्ष अपनी अभिमानी प्रवृति का प्रदर्शन करेंगी। आपके मन में दया तथा करूणा का भाव भी विद्यमान रहेगा। तथा दीन दुःखियों एवं जरूरत मन्द लोगों को आप अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपको अनेक प्रकार की कलाओं का भी ज्ञान रहेगा। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगी। तथा परिश्रम पूर्वक इसको प्राप्त करेंगी। साथ ही एक विदुषी के रूप में भी समाज में आप ख्याति तथा सम्मान अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप का शरीर कान्ति तथा सौन्दर्य से युक्त रहेगा एवं अपने परिवार के अतिरिक्त कई लोगों को आप सुख प्रदान करने वाली होंगी।

समाज में आप पूर्ण रूप से मान सम्मान प्राप्त करेंगी तथा हमेशा ऐश्वर्य एवं वैभव से सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आँखे विशालता को प्राप्त रहेंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप निपुण रहेंगी। आप शारीरिक सौन्दर्य से युक्त रहेंगी तथा सम्पूर्ण नगरवासियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगी। अतः आप किसी शहर की गणमान्य महिला होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुलयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप में नैसर्गिक रूप से परोपकार की

भावना विद्यमान रहेगी तथा दूसरे लोगों की भलाई के कार्यों को आप चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगी। इससे आपको समाज में पूर्ण आदर तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी। विपुल धन से आप सम्पन्न रहेंगी तथा धनी वर्ग से भी आपको पूर्ण आदर प्राप्त होगा। साथ ही आप एक विदुषी होंगी तथा कई संस्थाओं की अध्यक्षा भी हो सकती हैं। आप अपने माता पिता की परमप्रिय रहेंगी तथा आपके मन में उनके प्रति स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी।

आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया अष्टमी, तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र वज्र योग, तैतिलकरण,शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृषराशि का चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेगा। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियां भरणी नक्षत्र वज्ररोग एवं तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिर्माण या क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर एवं वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधानी रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए एवं मंगलवार तथा वृहस्पतिवार का उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीत पुष्प, पीली चन्दन, चने की दाल या हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुयोग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 1600 हजार जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपके समस्त अशुभ फल दूर होंगे। तथा शुभ फलों में वृद्धि होकर मानसिक चिन्ता भी समाप्त होगी।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधवी बनना चाहो तो साधवी न बन कर जागीरदार बनेंगी। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगी। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगी। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिले या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधुर पुरुष से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाली होंगी। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगी। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधुर पुरुष से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :
1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से हीरे-जवाहरात से संबंधित नौकरी-व्यापार लाभ देगा। कन्या सन्तान अधिक होने का योग है। आपको सुख के सभी साधन मिलेंगे। वन विभाग की अधिकारी हो सकती हैं। आप 9 वर्ष जीवन में यात्रा करेंगी। विदेश यात्रा से लाभ संभावित है। आपकी संतान की उम्दा परवरिश होगी। धार्मिक विचार रखने से आपके धन-दौलत की बरकत होगी। आप किसी के भी सामने नहीं झुकेंगी। आप दूसरों का इन्साफ करने में आगे रहेंगी। आप रहम दिल महिला होंगी और किसी से बेइंसाफी नहीं करेंगी। लड़ाई-झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगी वह जरूर जीतेगा। सरकारी

काम शुभ फल देने वाला होगा। आप सामाजिक कार्य करें तो आपकी औलाद के लिए अच्छा होगा। यात्रा का फल शुभ होगा। आपकी कभी भी बर्बादी नहीं होगी। आपको अपने जीवन की सभी मशहूर बातें हमेशा याद रखनी चाहिए।

यदि आपने धर्म विरोधी कार्य किये, गुप्त पाप किया, चकोर पक्षी का शिकार किया, अपना भेद किसी को बताया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी विद्या में विघ्न, संतान द्वारा विरोध होगा। आपका अपना भेदी तबाह कर सकता है। लालच और खुदगर्जी से नुकसान होगा। आपकी आदत हरेक को गुमराह करने वाली होगी। आपको नौकरी-व्यापार से अच्छा लाभ नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आप अपनी मर्जी से कोई कार्य न करें, किसी की सलाह जरुर लेवें।
2. किसी भी पाप कार्य में दखल न देवें।

उपाय :

1. धार्मिक कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेवें।
2. कभी-कभी पहाड़ की यात्रा करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होती हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जानी-मानी समाज सेविका होंगी। आप अवश्य ही धनवान होंगी। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद की मालकिन बनेंगी। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त या शाही जीवन बिताएंगी। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगी। आपके जन्म के बाद, आपके पिता/ससुर की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगी और आप कई मकान की मालकिन होंगी। आप अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगी। आप सोना बेचेंगी तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का

लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर गिर कर, न जले।

उपाय :
1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काले, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से स्थिति अच्छी बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगी। आपकी बहन/ननद-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी बसेंगी, मगर पिता अपने घर में दुखी रहेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल रहेगी। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन/ननद, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगी। सट्टे-लाटरी का काम, दलाली या तंबोला आदि के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता/ससुर के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता/ससुर के लिए अशुभ होगा। आपके पति का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :
1. स्टैनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।

2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी कुंडली में वृहस्पति पहले खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप एक पढ़ी-लिखी या उपदेशिका या गुरु भी हो सकती हैं। आप विद्वान, अच्छी बुद्धि की संतान युक्त, शासन द्वारा सम्मान पाने वाली बड़प्पन से युक्त होंगी। विद्या के माध्यम से अपनी आजीविका चलाऐंगी। पैतृक/ससुराल धन से भी धनी होंगी। यदि आपकी शिक्षा कम भी होगी तो भी आपको धन प्राप्त होता रहेगा। आप पैसे की वजह से नहीं, करामाती गुण से सम्मान पाएंगी। आप ऊंचे लोगों के साथ रह कर अपनी दिमागी शक्ति और राजदरबार से संबंधित रह कर, सम्मान प्राप्त करेंगी। शादी के बाद आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी और भाग्योदय होगा। आप अपनी कमाई से नया मकान बनवाएंगी। आपको बहुत जायदाद का लाभ होगा। आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगी। उम्र बढ़ने के साथ-साथ सुख में भी वृद्धि होगी। आपके पति आपके आज्ञाकारी और सेवक रहेंगे।

यदि आपने विद्या अधूरी छोड़ दी, लोगों की व्यर्थ निंदा की, मुफ्त माल या दान आदि से जीवन व्यतीत करना शुरु किया, छोटी आयु में शराब-बीयर पीना शुरु कर दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अप्रत्याशित घटनाओं एवं अव्यवस्था से सतर्क रहें। विद्या में रुकावट, आपके पिता/ससुर की मौत दमा या दिल की बीमारी या मानसिक रोग से हो ऐसी आशंका है। आपको श्वास या दमे की बीमारी होगी। प्रथम पुत्र संतान की प्राप्ति से अशुभ फल प्राप्त होने की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. मुफ्त माल गिफ्ट या दान न लेवें।
2. किस्मत पर भरोसा रखें।

उपाय :
1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।
3. विद्या बी. ए. या समकक्ष जरूर पढ़ें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र पहले खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आपकी सेहत अच्छी रहेगी। देह में पूरी ताकत रहेगी। आप सुंदर, अच्छा भोजन करने वाली तथा सुंदर पुरुषों पर आसक्त रहने वाली महिला हैं। मस्त चाल आशिकाना मिजाज, अपने आप में प्रसन्न रहने वाली हर समय सजने-संवरने वाली तथा सुंदरता की गुलाम हैं। आप में काम शक्ति की

अधिकता रहेगी। आप धनवान और परिश्रमी होंगी। आप अपनी आयु के लोगों की मुखिया होंगी। धार्मिक होते हुए भी इश्कबाजी की हवस आपमें रहेगी। अपना भवन और उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा। आपको दूसरे से सलाह लेने पर अच्छा मार्गदर्शन मिलेगा और आपका भाग्योदय होगा।

यदि आपने पुरुषों के द्वारा धन कमाना शुरु किया या परपुरुष से अनैतिक संबंध रखे, परिवार में मुखिया बनीं तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपको अपने पिता/ससुर के साथ लड़ाई-झगड़ा करने से धन की हानि और संपत्ति का नाश होगा। 24-25वें वर्ष में आपका विवाह करना शुभ नहीं है। आपके परपुरुष से अनैतिक संबंध रहेंगे तो आपको हानि होगी। आपके धर्महीन होने से भाई से लाभ असंभव है। आपका कामकाज ढीला पड़ेगा। आपके घर के कुछ हिस्से अनिर्मित रहने चाहिए। आपके पति और धन पर बुरा असर पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. नास्तिक न बनें।

उपाय :
1. जौ या सरसों या चरी दान करें।
2. कौवे, कुत्ते और गऊ को भोजन का हिस्सा खिलायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के छठे खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपको 28 वर्ष की उम्र में या 28 वर्ष की आयु के बाद विवाह करना लाभदायक होगा अन्यथा मां/सास, पति, संतान पर मंदा असर करेगा। आप खेल में रुचि रखने वाली या प्रसिद्ध खिलाड़ी हो सकती हैं। आपके पति सुखी रहेंगे। आपकी उम्र के 34 से 41 वर्ष के बीच कोई संतान पैदा हो तो आपके जीवन और घर का कायाकल्प हो सकता है। आपको यात्रा से लाभ मिलेगा। आपका चरित्र उत्तम होगा। आपका परिवार सुखी रहेगा। धन-लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहेगी। आप गुप्त कार्य करने की आदी हो सकती हैं। संतान आपके भाग्य के लिए बड़ी ही शुभ और अनुकूल होगी।

यदि आपका घर बंद गली में हुआ, धर्म मंदिर से जूता बदला, पूर्णिमा को नया काम शुरु किया, चमड़े-लोहे का सामान मुफ्त लिया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपका छोटा भाई आप से शत्रुता करे, ऐसी शंका है। परंतु अंत में वह दुश्मनी को भुला कर दोस्त बन जाएगा। शराब-मांस, अंडे का भोजन करने से हानि होने की आशंका है। आप लड़ाई-झगड़े से परेशानी में पड़ सकती हैं। आपके ताऊ, बड़े भाई या मामा को नेत्र रोग या आंखों की हानि हो सकती है। आपके पति और माता/सास को कोई कष्ट होने की आशंका है। शराब-कबाब और पुरुषों के

चक्कर में मुकद्दमा/पुलिस या साहूकारी अड़चने आ सकती हैं। आपको गुर्दे या पथरी के रोग का भी भय है। आपकी मृत्यु दुर्घटना से हो सकती है। आपके नौकरी-व्यापार में अचानक बाधाएं आ सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. धर्म स्थान में जूता चोरी न हो इसका विघेष ध्यान रखें।
2. लोहे का नया सामान न खरीदें।

उपाय :

1. काले कुत्ते की सेवा करें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में राहु पड़ा है। आपकी 21 वर्ष आयु में प्रथम पुत्र और 42 वर्ष आयु में दूसरा पुत्र पैदा होगा। आपको पुत्रों का सुख मिलेगा, उम्मीद है। औलाद मूर्ख और आप ब्रह्मज्ञानी होंगी। आपकी औलाद से अधिक सुखी जीवन आपके पोते-पड़पोते का होगा। आप चंचल और अस्थिर बुद्धि की होंगी। आपकी माता/सास का जीवन भर बड़ा सुखमय समय रहेगा। धन-संपत्ति और औलाद में वृद्धि होगी। आपको भाई का सुख मिलेगा। आप परिवार और माया की ओर से सुखिया होंगी। धर्म-मर्यादा की मालकिन होंगी। व्यापार आपके लिये सबसे उत्तम धन कमाने का साधन होगा, राज्याधिकारियों से लाभ होगा।

यदि आपने पति से अच्छे संबंध न रखे, उससे तलाक लिया, बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब कर ली, पिता या ससुर से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बचपन में शरारती होकर पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं लगाएंगी। शिक्षा अधूरी रह जाएगी या मन के मुताबिक पढ़ाई नही कर सकेंगी। संतान हुई तो जन्म से 12 वर्ष पति का स्वास्थ्य खराब रहेगा। पहली संतान नहीं बचे ऐसी शंका बनती है। पति से तलाक या जुदाई हो, ऐसी शंका है। पति से तलाक या जुदाई की तो संतान का सुख न मिलेगा। आप पाप कर्म में रत हो सकती हैं। आपको पुत्र का सुख न मिले, ऐसी शंका है। आपकी सेहत बिगड़ सकती है तथा बेकार का धन खर्च होगा। आपकी आंखों की दृष्टि में भी कोई दोष उत्पन्न हो सकता है। आपके काम करने का ढंग भी स्थिर नहीं रहेगा। काम की चीजों को भी इधर से उधर करती रहेंगी। अस्थायित्व और चंचलता की आप शिकार होंगी। आपका भाई अमीर या निःसंतान होगा, ऐसी आशंका है। समय साढ़े दस, 21-42वां वर्ष पिता या ससुर की आयु पर भारी रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूसरा विवाह न करें।

उपाय :
1. चांदी का ठोस हाथी घर पर रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।

नोटः यदि दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले मकान में रिहाईश हो तो भी उपरोक्त उपाय जरूर करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन-दौलत की मालकिन होंगी। इसके श्रेष्ठ फल से आप निहाल हो जाएंगी। आपको अपने भविष्य के लिए जागरूक रहना चाहिए। आपको राजपक्ष से शासन से संबंधित कार्यों में अच्छा फल मिलेगा। खानदानी जायदाद से अधिक जायदाद अपने हाथों से बना लेंगी। आपके जीवन में उत्तम राजयोग की संभावना है। आप सरकार पक्ष से या सम्मानित व्यक्ति से लाभ प्राप्त करेंगी। आप यदा-कदा हिम्मत हार बैठेंगी। आपकी औलाद शारीरिक तौर पर अच्छे स्वभाव की और अच्छे काम करने वाली होगी।

यदि आपको काम पर जाते समय कोई पीछे से कोई आवाज दे, माता/सास से झगड़ा या माता/सास का विरोध किया, पुत्र संतान का लालन-पालन अच्छी प्रकार न किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से संतान पक्ष को कुछ कष्ट की आशंका है। मां/सास के साथ आपके मधुर संबंध में न्यूनता की आशंका है या माता/सास को आपकी संतान से सुख नहीं मिलेगा। आपको हमेशा ही पेट में दर्द की बीमारी लगी रह सकती है। आपके पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् माता/सास के सुख का अभाव हो जाएगा। माता/सास की आंखों का आप्रेशन हो सकता है। बल्कि कुछ सुस्त या सैक्स के प्रति अनिच्छा भी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. शुभ काम पर जाते समय पीछे से कोई आवाज दे तो शुभ काम पर न जाएं।
2. व्यतीत समय को याद न करें।

उपाय :
1. काला कुत्ता न पालें।
2. काले-सफेद पत्थर के चकले पर रोटी बेल कर बनायें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में वृद्धि होगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगी। सन्तति पक्ष से आपको इस मास में पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ की भी संभावना बनेगी। आपके प्रभुत्व को इस समय सभी लोग स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। साथ ही अच्छे समाचार आपको मिलेंगे। इस समय आपके सभी सांसारिक कार्य पूर्णतया सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा निष्ठा पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा एवं इनसे धनार्जन भी प्रचुर मात्रा में होगा।आपकी महत्वपूर्ण आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्रों से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण भी प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः यह माह आपके लिये अत्यंत शुभफलदायक रहेगा तथा आप सुख पूर्वक इसे व्यतीत करेंगी।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर से आप कमजोर रहेंगी। साथ ही शत्रुपक्ष के बलवान होने के कारण आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। इस मास में आप अपने उच्चाधिकारियों का पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा उनसे आप किसी प्रकार दंडित भी हो सकती है।आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य इस मास में कम ही सफल होंगे तथा असफलता ही अधिक मिलेगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकती है जिसके बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। आपके बन्धु एवं मित्रों से इस समय संबध तनाव पूर्ण रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। साथ ही समाज में भी आपके सम्मान में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पित से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार का भय भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आपको किसी प्रकार की क्षति या नुकसान हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक आप अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अल्प तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति या पुरूष वर्ग से आप कष्ट की अनुभूति करेंगी तथा शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भी नित्य भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में होगा।साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। जिससे आप मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा धनाभाव की समस्या का भी सामना करना पड़ेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लालच की प्रवृति में वृद्धि होगी। फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से तनाव पूर्ण संबध होने के कारण उनसे भी आपको कोई सहयोग प्राप्त नहीं होगा तथा वे मित्र होकर शत्रु की तरह आपसे व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका सामाजिक जनों से वाद विवाद भी होगा। अतः धैर्यपूर्वक समस्याओं का सामना करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप पति तथा बन्धुओं से सहयोग प्राप्त कर सकेंगी तथा अपनी बुद्धि के द्वारा महत्वपूर्ण कार्यो को भी सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचि का प्रदर्शन करेंगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप मध्यम रूप से व्यतीत करेंगी तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। इस महीने में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट की अनुभूति करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा ही रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक एवं मानसिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता भी रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी कर सकती है। इस समय आपके सांसारिक कार्यो में व्यवधान उत्पन्न होंगे फलतः इनमें आपको अल्प सफलता ही प्राप्त होगी। इसके कारण आप मानसिक रूप से तनाव तथा अशान्ति का अनुभव करेंगी। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमता पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की अभिवृद्धि होगी जिसके कारण महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त धन भी आप प्रचुर मात्रा में अर्जित करेंगी तथा धर्मानुपालन में प्रवृत रह कर समाज में यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में न्यूनाधिक सफल रहेंगी।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः आपका धनार्जन पूर्ण मात्रा में होगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग तथा सामाजिक लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। सन्तति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित होता रहेगा। आपकी बुद्धि में इस मास निर्मलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही समय आप यात्रा से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप वांछित सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनसे आपके मधुर संबध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र सम्माननीया रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। इस प्रकार समस्त सुखों से युक्त होकर आप समाज से यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप प्रोन्नति भी प्राप्त कर सकती है। मित्रों एवं बन्धुओं से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी तथा उनके कल्याण संबधी कार्यो में भी तत्पर रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही अन्य साधनों द्वारा भी आप धनार्जन करेंगी तथा अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को इस समय पूर्ण करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपने शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में यात्रा के द्वारा भी लाभ प्राप्त करेंगी। इस समय आपको नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णाभूषणों की उपलब्धि भी हो सकती है।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी तथा पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप इच्छित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इस मास में आपका

शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगी। बन्धुवर्ग एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही वे आपको अपना पूर्ण सहयोग भी प्रदान करेंगे। इस समय आप वांछित द्रव्यों को प्राप्त करेंगी एवं उनके उपभोग से सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगी तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा उनसे आपको अपेक्षत सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा वांछित धन लाभ तथा सुख अर्जित करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आपको समाज से पूर्ण सम्मान तथा यश प्राप्त होगा एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका व्यय अधिक होगा तथा दुष्ट व्यक्तियों से आपका मेल जोल रहेगा जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगी ।साथ ही धनाभाव की समस्या भी उत्पन्न होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आप बैचेन तथा अशान्त रहेंगी। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि के योग बन सकते है। इस मास में आपके मित्र तथा बन्धुवर्ग से अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे। शत्रु पक्ष से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। फलतः कष्ट पूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगी।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी तथा आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी आप इस मास में कर सकेंगी।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आाप शारीरिक रूप से सामान्यतया स्वस्थ रहेंगी तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आपके आय स्त्रोंतो में इस समय उन्नति होगी फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष दुर्बल रहेगा एवं आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेगा। इस समय आप अपने उच्चाधिकारी वर्ग से सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। अपने प्रमुख कार्य के अतिरिक्त आप

अन्य स्त्रोंतो से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस मास में समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे।आपके सौभाग्य में भी इस समय वृद्धि होगी तथा कई विलम्बित महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। अतः आप यदा कदा गर्मी या पितदोष से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय किसी किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त अग्नि के कारण भी कोई हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में सफल रहेंगी। सामाजिक जनों के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही पारिवारिक लोगों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे उचित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सम्मान अर्जित करेंगी तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होते रहेंगे। इस समय आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी अधिक रूचि रहेगी। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस मास में शत्रुपक्ष आपसे पराजित, भयभीत तथा चिन्तित रहेगा तथा व्यापार एवं अन्य कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल सिद्ध होंगी। इस प्रकार आपका पारिवारिक जीवन भी सुखी तथा शान्त रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णादि के आभूषणों को भी अर्जित करने में सफल हो सकती हैं। अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फलों को भी प्राप्त करेंगी। इस समय आप स्व पराक्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुख का उपभोग भी करेंगी। सामाजिक जनौं के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही आप सामाजिक लोगों के परोपकार संबधी कार्यों को भी इस मास में सम्पन्न करेंगी। आपका स्वास्थ्य इस समय सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगी। आपके मित्रों तथा बन्धुओं से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करती रहेंगी।

इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी। अतः आप वात जनित या ठंड से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी इसके अतिरिक्त आग द्वारा भी आपको किसी प्रकार की क्षति हो सकती है। अतः सोच समझकर सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी जिससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करती रहेंगी। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। साथ ही मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी। इस मास में आपकी नौकरी या व्यापार में मंदी आयेगी तथा अनावश्यक बाधाएं भी उत्पन्न होंगी जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान होंगी। इसके साथ ही आपका कोई जीविका संबधी कार्य बंद होगा या उसमें कोई परिवर्तन होगा। समाज में लोगों से भी आपके विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे अतः आपके सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि एवं शरीर में किसी रोग के उत्पन्न होने की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में आप ठण्ड या बात से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे बाद में पछताना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि द्वारा भी आपको किसी प्रकार की हानि पहुँच सकती है। अतः इस मास में सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य पदार्थो को अर्जित करेंगी तथा पुत्र से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी इस मास में आप रूचिशील रहेंगी। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस मास में आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा शुभ समाचारों को भी आप प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा उचित लाभ प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूप से मानसिक शान्ति प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार की संभावना भी रहेगी। अतः अपने समस्त कार्यो को सावधानी पूर्वक सम्पन्न करें।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल शुभ फलों की अपेक्षा अधिक अर्जित करेंगी जिससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। इस समय शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी एवं उनसे आप अनावश्यक कष्ट भी प्राप्त करेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः सतर्क रहना श्रेयस्कर रहेगा। इस समय आपको उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पूर्ण पालन करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा आप दण्डित हो सकती हैं। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक रूप से परेशान रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे विशेष सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगी तथा आपकी आशाएं भी कम ही पूर्ण होगी। अतः धैर्यपूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धि के कौशल से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुखार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही समाज में आप यश प्राप्त करने में भी समर्थ हो सकेंगी।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपके पति तथा बन्धुवर्ग किसी भी प्रकार से कष्ट प्राप्त करेंगे या आपको कष्ट देंगे। आपके शत्रु इस मास में बलवान रहेंगे तथा आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। अतः आप इनसे चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा मन में लोभ के भाव की वृद्धि होगी।साथ ही धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा। अतः धनाभाव से भी आप दुःखी रहेंगी। इस समय आपके उत्साह में कमी आएगी तथा शरीर में निर्बलता भी रहेगी। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही ऐसे समय में मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से भी कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी आप का विवाद होता रहेगा।अतः संयम पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे पुरूष वर्ग से आपको पूर्ण लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा अपनी बुद्धि से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी तथा अन्य प्रकार से भी धनार्जन एवं सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। अतः शत्रु पक्ष से आप दुःखी रहेंगी एवं उनसे चिन्तित तथा भयभीत भी रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे धनाभाव से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस समय कई प्रकार से बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा कार्यो में सफलता अल्प मात्रा में ही मिलेगी। धर्म के प्रति आपके मन में सामान्यतया उपेक्षा का ही भाव विद्यमान रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आप दूर समीप की यात्रा भी सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में आप परिश्रमपूर्वक सफलता प्राप्त करेंगी तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपको पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा एवं बुद्धिबल से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगी एवं समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगी।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सुख एवं सौभाग्य को प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

आपके उच्चाधिकारी भी इस मास में आपसे पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। इस समय आपके घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। संतति पक्ष से इस मास में आपको सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगी। इस मास में आपका यश भी समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे वांछित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों एवं उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी तथा आपके कार्य क्षेत्र में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों की प्राप्ति करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। अपने उच्चाधिकारी वर्ग को इस समय आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफल रहेंगी अतः कार्य क्षेत्र में विशेष उन्नति मिलेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथ उनसे वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही उनकी भलाई भी आप यत्नपूर्वक करती रहेंगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी समय में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक जन आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। आपका यश भी समाज में इस समय दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकती हैं।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा आपकी अधिकाशं मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी। इसके साथ ही धन एवं सुख का उपभोग करते हुए प्रसन्नता पूर्वक आप इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सर्व प्रकार के शुभ फलों को अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न हो जाएंगे। साथ ही आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी फलतः मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभ प्राप्त करेंगी। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन करने के लिए आपके मन में इच्छा उत्पन्न होगी।

मित्र एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होगा एवं आप मनोवांछित द्रव्यों को इस समय अर्जित करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा रहेगी एवं पूर्व विलम्बित संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं बुद्धिमता पूर्वक आप धन तथा सुख को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के अनुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा समाज एवं बन्धु वर्ग में पूर्ण रूप से आदरणीया रहेंगी।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा तथा दुष्ट लोगों की संगति प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय आपके कार्य पराक्रम एवं अत्यंत परिश्रम करने के बाद भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी।धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक मात्रा में विद्यमान रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती हैं। बन्धुओं एवं मित्रों से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। अतः इनसे आपको किसी विशेष प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उनमें अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस समय प्रबल रहेगा तथा उससे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी इच्छित आशाएं भी इस समय पूर्ण नहीं होगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः आप इस मास में सतर्कता पूर्वक बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सुख तथा शान्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगी एवं मन से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी फलतः शत्रु आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके लाभ मार्ग भी नित्य प्रशस्त रहेंगे। इस समय आर्थिक स्थिति पूर्णरूप से सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करती रहेंगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सफल होंगे तथा विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भी सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। अपने मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे

प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको वांछित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा इनकी ओर से निश्चिन्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र तथा वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगी। अतः यह मास आपके लिए सौभाग्यशाली रहेगा।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अत्यधिक उत्साह के साथ धनार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही समाज से भी आप को पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इस समय परिवार एवं मित्रजनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही इनसे आप मान सम्मान भी अर्जित करेंगी। उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य को भी सिद्ध करने में भी सफल रहेंगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय आप भोजन में मिष्ठान्न का अधिक उपयोग करेंगी। आपका शत्रुपक्ष इस मास में क्षीण रहेगा अतः उनको पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। पति से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा व्यापारिक कार्यो से अतिरिक्त आय एवं लाभ अर्जित करने में आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातोत्पन रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त करेंगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में भी समर्थ रहेंगी। सामाजिक जनों से इस मास में आपको पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा मिलेगी एवं सभी लोग आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही दूसरे लोगों के परोपकार संबधी कार्य भी आपके द्वारा सम्पन्न होंगे। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके बन्धु एवं मित्रों से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी इच्छाएं भी इस समय में पूर्ण होंगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होगा।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे। अतः आप शीत से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप

न्यूनाधिक मात्रा में हानि प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी तथा शुभ फल अत्यल्प मात्रा में होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा नाना प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस मास में शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी तथा वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी या कोई कार्य छूट सकता है या बन्द हो सकता है। इसके साथ ही कार्य क्षेत्र में आप परिवर्तन भी कर सकती हैं। सामाजिक लोगों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा तथा यदा कदा वाद विवाद भी होगा जिससे आपके समाजिक सम्मान में न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अर्जित करेंगी। इससे आप पति एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इस मास में नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित कर सकती हैं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नही तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानिया तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। 18 फरवरी से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

9 अगस्त से व्यावसायिक स्तर पर समय आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए पुरुस्कृत भी किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। 18 फरवरी के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

9 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। यह समय आपके लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। यदि अनापेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिएगा मत। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। दशमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी अवसर आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भघरेलू वातावरण के लिए अनुकूल है। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है अतः परिवार से जुड़े हर

मामलों में आपको सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ है।

9 मई से घरेलू वातावरण के लिए समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान होगा क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। 15 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा किन्तु आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं रहेंगी। 18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। यह समय आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की लिहाज से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक क्लेश के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आपके जीवन में इस साल खुशी के पल भी आएंगे। स्वस्थ्य रहने के लिए आपको चाहिए कि आप योग और ध्यान का सहारा लें। प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे।

15 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी और आप पूर्णरूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष अनुकूल बना रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत बढ़िया है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

15 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती

रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के शुरु में आपके धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 18 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढेगी। 14 जूल के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा कर पुण्यरर्जन भी करेंगे।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन दीपक जलाएं और महालक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं दशम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुपंचम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भश्रेष्ठतम रहेगा। बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे।

23 अक्तूबर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से अपना विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। गुरु के गोचर के बाद क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहें। खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

12 अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलने की सम्भावना है। लॉटरी, शेयर इत्यादि से भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। कर्जे से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि से घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में वैचारिक मतभेद से आप मानसिक अशान्ति महसूस सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 5 मार्च के बाद परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफीअनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मेंबच्चों का प्रवेश हो जाएगा।

5 मार्च से गुरु का गोचरप्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकीशिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। बच्चोंके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपको छोटी-मोटी बीमारियां हो सकती हैं। मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को उत्तमबनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यवसायी इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें सफलता भी होंगे।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 5 मार्च से समय आपके लिए काफीशुभ हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के कारण वर्षारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राओं के भी प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

गुरु के गोचर के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। यात्रा के दौरान किसी से बहुत अच्छी मित्रता होगी। 12 अगस्त के बाद धार्मिकयात्रा का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक धार्मिक कार्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना, तीर्थ स्थलों की यात्रा इत्यादि करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय अति उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। अष्टम स्थान के केतु आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। अपने कार्य व्यवसाय में रिश्तेदारों के साथ साझेदारी न करें। नहीं तो उनके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण बीमारी दूर करने में संचित धन का व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह का गोचर अशुभ होने से धनागम में रुकावट व आर्थिक तंगी का योग बना हुआ है। परन्तु 18 मार्च के बाद अचानक व्यापारिक उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी व तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ें या विवाद में न उलझें और अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय धर्म पत्नी के

साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। प्रेम संबंध बहुत ही मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस समय के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लपरवाही न करें। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी ग्रस्त होंगे। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। यदि पहले आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित करने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष की शुरुआत करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगी। परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको 18 मार्च के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

शिक्षार्थी इस समय योग्यता के अनुसार सफलता पाने में सफल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बड़ी कोई अड़चन नहीं आयेगी। अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि रहेगी। विदेशी भाषा सीखने की ओर आकर्षित होंगे। आपका उत्साह व साहस बना रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 18 मार्च से आप अपनी पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्राओं से आपको लाभ होगा।

वर्षान्त में नौकरी करने वाले व्यक्तियों के स्थानान्तरण के योग बन रहे हैं। परन्तु यह बदलाव आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 18 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो आपके लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगो को अच्छा लाभ मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

जुलाई के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी प्रकार का जोखिम मोल न लें नहीं तो व्यापार में हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम भाग आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। एकादशस्थ शनि के कारण आर्थिक स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है, परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक कुछ व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। अनावश्यक खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वर्ष का पूर्वार्द्ध सम्पन्नता से गुजरेगा।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। धोखा या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध सामान्य रहने वाला है। द्वितीय स्थान का राहु प्रतिकूल होने के कारण आपको घरेलू मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर

झगड़ा या विवाद में नही पड़ना चाहिए। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए आपको अपने जीवन साथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। एकादशस्थ शनि के कारण बड़े भाइ-बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मदभेद होने की संभावना बन रही है। पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है परन्तु माता के लिए शुभ है। आपका एवं आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने सेघरेलू माहौल ठीक नहीं सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण यह समय आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। दूसरे संतान के लिए भी यह वर्ष ज्यादा अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़िया रहेगा। आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान का शनि धीरे-धीरे आपकी शारीरिक ऊर्जा कम कर सकता है, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। अतः राहु ग्रह की शान्ति स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

यदि आप नौकरी करते हैं तो साल का उत्तरार्द्ध कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। लोग आपके विरूद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाये जा सकते हैं,

जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है और आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का पूर्वार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। मार्च के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश के शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा और नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वादश भाव में और सिंह राशि का राहु लग्न स्थान में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें वरना कानूनी वाद-विवाद में फंस सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं, सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उस में आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से अनुभवी लोगों का सफलता मिलेगी। जो लोग शेयर बाजार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा बहुत लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। यदि वह आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। अप्रैल के बाद आपके छोटे भाई बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। आपके माता पिता

जी के लिए यह समय काफी शुभ है। परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़ी सावधानी से से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। 6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रहेगी।

अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या में भी सुधार करना होगा। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नम्बर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजसता की स्थिति बनी रहेगी। विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको अत्यधिक परिश्रक करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। अष्टम स्थान का गुरु प्राचीन दर्शनीय स्थलों या सामुद्रिक स्थलों की यात्रा करा सकता है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगे।

नवमस्थ गुरु के कारण आप धार्मिक यात्रा भी अधिक करेंगें। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके समस्त धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को खाना खिलाने या उनकी सहायता करने में आपको संतुष्टि मिलेगी।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान करें जिसके प्रभाव से शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। जिससे राहु ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु नवम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं। आपके कार्यों में अचानक हानि या कोई बड़ी समस्या आ सकती है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु नवमस्थ गुरु के कारण आपका भाग्य साथ देगा और आप सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे।

अप्रैल के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। व्यापार में किसी पर अवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें नही तो हानि हो सकती है। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह तबादला आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वादश स्थान का शनि अनावश्यक खर्च भी बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चे पर अंकुश लगाएं।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तता के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए आप

अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकास करें। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय काफी अनुकूल हो जाएगा। आपको परिवार के बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। उनके साथ आपके संबंध भी खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। उनके उन्नति के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रही है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश मिल सकता है।

अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। 27 अगस्त के बाद शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। इस यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके घर के पास हो सकता है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी, जिससे परमात्मा के प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं व हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- दुर्गा बीसा व आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बना रहा है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अप्रैल के बाद गुरु का गोचर किंचित शुभ हो रहा है। अतः व्यापार व नौकरी में कुछ सुधार होगा। शेयर बजार से जुड़े जोगो को लाभ मिलेगा। क्रय विक्रय, व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियो को सावधान रहना चाहिए नही तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे।

16 सितम्बर से आप का समय प्रभावित हो रहा है। मुख्यतः ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बन रहा है। इस समय आपको खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर

शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी ख्याति समाज में और बढ़ेगी।

16 सितम्बर से आपका पारिवारिक माहौल प्रभावित हो सकता है। अचानक आपकी धर्म पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कुछ लोगों का व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी आपको उन लोगों के साथ स्नेह व प्रेम बनाए रखना पड़ेगा। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु सितम्बर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको अपने अन्दर कमजोरी जैसा अनुभव होगा।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय के सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। सितम्बर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं प्रभावित होंगी। परन्तु द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अप्रैल के बाद जन्म भूमि की यात्रा होगी।

26 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि व्यवसाय संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 26 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान का गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहा है। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी लोगों व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मई के बाद समय कुछ प्रभावित होगा। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई गुप्त शत्रु आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और अक्टूबर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपके कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेन देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोगों की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। अक्टूबर के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका पारिवारिक माहौल ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आप बड़े ही विवेक से काम लें और सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। आप मानसिक रूप से परेशान भी रह सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। अक्टूबर के बाद जीवनसाथी के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

11 मई के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी अनुशासनहीन हो सकती है, जिससे उनकी उन्नति में किंचित व्यवधान आ सकता है, परन्तु अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। 11 मई के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी ही भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें। 7 अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे

शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

मई के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी-मोटी यात्रा कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप दुखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि मई के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना ही आप अपना धर्म समझेंगे। अक्टूबर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे।

- वीरवार के दिन केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में धारण करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर नित्य उसका पूजन करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करने की काशिश करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। हालांकि अप्रैल से समय काफी शुभ हो रहा है। कार्य व्ययवाय में सुधार होगा। वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे।

आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधी में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो अच्छी सफलता मिलेगी। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। 4 नवम्बर के बाद समय नौकरी करने वालों के लिए शुभ नहीं है। आपके वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेत उत्पन्न हो सकते हैं तथा कार्य स्थल का वातावरण खराब हो सकता है।

धन संपत्ति

द्वितीय स्थान के शनि कुछ अनावश्यक खर्चे ला सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाने की जरूरत है तथा जोखिम भरे कार्यो में धन निवेश करने से बचें।

5 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होते ही धनागम के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे तथा आपका चौमुखी विकास होगा। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च होगा। मित्र या भाइयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। अतः आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आपकी पत्नी के साथ समन्वय मधूर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

आपके भाइयों की उन्नति होगी। पिता जी के लिए भी यह समय शुभ है। 2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। आप उच्च मान संमान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके सामाजिक प्रभाव व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्र में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। परन्तु 4 नवम्बर से समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं। पंचमस्थ केतु पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। अतः आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उनकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

3 मार्च के बाद समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु 2 जून के बाद समय फिर से अच्छा हो जाएगा तथा उसके बाद पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। उस समय के अंतराल में बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे जिससे आप उनसे प्रसन्न रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है, नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हालांकि 2 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना प्रारम्भ हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन की ग्रहण करेंगे। अर्थात् सादा खाना उच्च विचार वाली युक्ति आप पर पुर्ण रूप से चरितार्थ होगी। 4 नवम्बर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है उसके बाद आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को ज्यादा सफलता नहीं मिलेगा।

यात्रा-तबादला

3 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होंगी। 4 नवम्बर से सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होने का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गौशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान करेंगे। 2 जून के बाद आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

- सोमवार के दिन शिव जी पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- वीरवार के दिन केला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं प्रथम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कई कार्यों में सफल होंगे। व्यापार में बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही कदम बढ़ाएं। कानूनी मामलों से बचें क्योंकि वर्षारम्भ में शनि एवं गुरु की युति अच्छी नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। अधिक आत्मविश्वास आपको मुश्किल में डाल सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। आप अपने मनपसंद क्षेत्र में अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

अप्रैल से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें नहीं तो कार्य व्यवसाय में नुकसान हो सकता है। परन्तु जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आप प्रसन्न रहेंगे व अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। 11 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

आमदनी में बढ़ोत्तरी होने के कारण आप बचत करने में भी सफल रहेंगे। किसी वसीयत के माध्यम से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप धन को धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद धन हानि के योग हैं अतः कोई जोखिम भरा निवेश करने से बचें साथ ही पैसों की सुरक्षा को लेकर चिंतन करें। जून के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। वर्षान्त निवेश के लिए बहुत ही शुभ है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य

आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद अचानक आपकी माताजी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसके नकारात्मक प्रभाव से पूरा परिवार प्रभावित हो सकता है। चतुर्थ स्थान का केतु वैचारिक मतभेद भी करा सकता है। आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक शान्ति एवं सामाजिक उन्नति के लिए उत्तम है। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में और अधिक वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। वर्षान्त आपकी दूसरी संतान के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। आप रोग व्याधियों से दूर होंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा।

खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा। अधिक खान-पान व बाहर का खाना खाने से फूड पॉइजनिंग की सम्भावना है। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें। व्यवहारिक बने रहें। व्यर्थ के कार्यों में समय खराब न करें, इसके फलस्वरूप आप परेशान रह सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें एवं अधिक आत्मविश्वासी न बनें वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह साल मिला जुला रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है। विदेश में वांछित उन्नति के लिए वर्षान्त श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय से संबंधित यात्राओं की अधिकता होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थानान्तरण होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। साल के मध्य में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। कुछ गलत फहमियों से भी आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि 6 मई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेगा।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें। यदि साझेदारी में कार्य कर करे हैं तो 26 सितम्बर के बाद आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। लाभ के साथ-साथ चुनौतियां भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेन-देन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरे निवेश करने से बचें। राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को आर्थिक हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके छोटे

भाई बहनों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

6 मई के बाद पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। लेकिन आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में कुछ कमी आ सकती है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा रहने वाला है। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। 6 मई से जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। उसके बाद पूरा वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

पहले से चली आ रही बीमारी उग्र रूप ले सकती है इसलिए सावधानी बरतें। 26 सितम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। अतः शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन व महामृत्यंजय का जाप कराएं जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। 6 मई के बाद आपको वांछित सफलता मिलेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा रहने वाला है। 26 सितम्बर के बाद नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी।

सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि 26 सितम्बर के बाद दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य पर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे।

- प्रत्येक सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं तृतीर्य भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्य स्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। 10 जून से अगस्त तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आजीविका के क्षेत्र में कुछ कमी आ सकती है, जिससे आय के स्रोत प्रभावित होंगे। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियो को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज भी लेने पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। 22 जून के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन को निवेश न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेशी धन व वसीयत की प्राप्ति होगी। गुप्त रूप से भी आपको धन लाभ होगा। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए श्रेष्ठ है। वर्षान्त में आपके कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। अतः उस समय अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण रहेगा। आपकी माता के लिए यह समय शुभ है। जून के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से नाराज हो सकता है। राहु के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दे सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आपके प्रति बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आएगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों को किसी नौकरी या रिसर्च के कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेते हैं तो सफलता सम्भव है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह बहुत शुभ समय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप कुछ चिन्ता का अनुभव करेंगे। अकारण चिंता करने से कुछ हासिल नहीं होगा। आप चिंताओं से उबरने की कोशिश करें वरना आपको किसी मानसिक रोग अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी विकार का सामना करना पड़ सकता है। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियां हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शिक्षा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला फल देने वाला है। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय काफी श्रेष्ठ है। आपका नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान रहेगा।

राहु के कारण याद करके भूलने की प्रवृति बनेगी। अष्टम स्थान का राहु मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। आपका रुझाान राजनैतिक, तंत्र-मंत्र, विद्या सिद्धि रोमांचकारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे है। 10 जून के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थान की यात्रा होगी। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राएं करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का आरम्भ अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगा। आप चाह कर भी पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। मानसिक अशान्ति के कारण ध्यान योग व मन्त्रोच्चारण में आपका मन नहीं लगेगा। परन्तु काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके भी मिल सकते हैं। व्यापार में पूंजी लगाने वाले नए लोग भी मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम मिलेंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी इच्छाएं पूरी होंगी।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के बाधित मार्ग खुलेंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन लगातार होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी। आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा।

30 जुलाई के बाद किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। अतः पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें, नहीं तो अष्टम स्थान का राहु अचानक धन हानि करा सकता है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपने खर्चों पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस वर्ष आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। समाज में आपका दबदबा बना रहेगा। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही शुभ है। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं, तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से उत्तम हो जाएगा। आपके बच्चे धर्म कार्य व अच्छे कार्यों में समय ज्यादा व्यतीत करेंगे। आपकी आज्ञा के पालन में सदैव तत्पर्य रहेंगे। सितम्बर के बाद नवविवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक रूप से आरोग्य रखने में सहायता करेगी तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करेंगे। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। अष्टम स्थान का राहु जल तत्व राशि होने के कारण कफ, सर्दी तथा जुखाम इत्यादि बीमारियों से पीड़ित कर सकता है। मोटापा तथा पेट संबंधित बीमारी भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तला हुई वस्तु का सेवन कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहने वाला है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वाले के लिए बहुत ही शुभ है। इन लोगों को वांछित उन्नति मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने

लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी छोटी बड़ी यात्राएं खूब होंगी। धार्मिक यात्रा का अधिक आनन्द लेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राएं प्रभावित होंगी।

नौकरी करने वालों के लिए मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग बने हुए हैं। आप अपने जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अनुकूल है। विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा नीली वस्तु का दान करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में बुधवार के दिन श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें, क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ नहीं है। गैरकानूनी क्रिया-कलापों में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि होने की संभावना हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।

नौकरी करने वाले जातकों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बना कर रखने चाहिए। फरवरी के बाद व्यवसाय करने वालों को अपनी व्यावसायिक प्रगति में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। बिजनेस में धीमी चाल से प्रगति होगी। शेयर बाजार एवं सट्टेबाजी आधारित गतिविधियों में किस्मत अजमाने का प्रयास न करें अन्यथा आपका धन लंबे समय के लिए फँस सकता है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय आपको आर्थिक हानि पहुँचा सकते हैं। किसी भी बिजनेस के लिए सोच समझकर ही साझेदार शामिल करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए उत्तम रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

आर्थिक मोर्चे पर आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा तथा दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापिस मिलने की संभावना कम है। आप आकस्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। मंहगी व सुख सुविधा वाली वस्तुओं में धन लगा सकते हैं जो आपके लिए धन का अपव्यय ही होगा इसके परिणामस्वरूप आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपके पत्नी के साथ संबंध खराब हो सकते हैं। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के

लिए अच्छा नहीं होता, अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड़वाहट आने की संभावना है।

माता व बड़े-बुजुर्गों का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है। किसी करीबी व्यक्ति के साथ आपकी कहा-सुनी हो सकती है। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। आपके साथ विश्वासघात हो सकता है यानी आप जिन लोगों पर भरोसा करते हैं वे धोखा दे सकते हैं।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है, परन्तु 16 फरवरी के बार समय सामान्य हो जाएगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का पूरा फल मिलेगा।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं तथा उनकी उन्नति में व्यावधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखो का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मवश्वास में कमी आ सकती है।

लंबे समय से चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा। उसके उपचार में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। आक्स्मिक चोट लगने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। अनिद्रा की शिकायत आपको परेशान कर सकती है। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें नहीं तो मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से सम्बन्धित कार्य करते समय सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएँ। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो के लिए यह साल सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी भी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। दी गई परीक्षाओं का परिणाम

हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में धार्मिक यात्राएं करने का अवसर प्राप्त होगा। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ेगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरू कुम्भ राशि एंव सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आपको काफी मेहनत करनी होगी, क्योंकि शनि के चतुर्थ भाव में गोचर करने से आपके सारे कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मानसिक तौर पर मजबूत तथा धैर्यवान बनना होगा। बड़े स्तर की योजनाओं में सोच समझकर ही निवेश करें।

लगातार प्रयास और दृढ़ निश्चय के साथ डटे रहने से ही आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। व्यापार का विस्तार करने से पहले जोखिम होने की संभावनाओं को ध्यान में अवश्य रखें। धैर्य से काम लें और जो कुछ हो रहा है उसे होने दें। 15 जुलाई के बाद आप अपने विरोधियों से मुकाबला करने में सक्षम रहेंगे। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखना श्रेष्ठ रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ खर्चों में बढ़ोत्तरी दर्शा रहा है। इस अवधि के दौरान धनार्जन करने के लिए आपको सतत प्रयास करने पड़ सकते हैं तथा व्यवसाय में धन की आवाजाही लगी रहेगी। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। अपनी विलासिता पर लगाम लगाएँ अन्यथा कुछ आर्थिक समस्याएँ हो सकती हैं। अगर किसी को उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें।

15 जून के बाद आपके बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होगा। धन कमाने के काफी अच्छे अवसर मिलने की संभावनाएँ हैं। आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी व अनेक स्रोतों के माध्यम से धन मिल सकता है। आप अपने खुद के परिश्रम से अधिक धन अर्जित कर पाएंगे। पत्नी व मित्रों से भी धन लाभ होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। माता के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड गा। अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड वाहट आने की संभावना है। पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है। माता या किसी बड़े-बुजुर्ग का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है।

सामाजिक स्तर पर कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं, हालांकि राहु ग्रह के गोचर के साथ समय कुछ अनुकूल होगा। वर्ष के दूसरे भाग से आप अपने जीवनसाथी के साथ ढेर सारी खुशियाँ मना सकेंगे। यह समय आनंद से भरपूर रहेगा। आपके व्यवहार में प्रेम और भावुकता की वृद्धि होगी। जीवनसाथी आपके प्रति अधिक समर्पित रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा उनके उन्नति में भी व्यावधान आने की संभावना बन रही है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह समय श्रेष्ठ नहीं है।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। 15 जून के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उस समय उनको वांछित सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियां, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। सिर में चोट चपेट लगने की पूर्ण सभावना बन रही है। किसी लंबी चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा, जिसके कारण आपको उपचार कराने में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें वरना आपका मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से काम करते हुए सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएं। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा। हालांकि 15 जून के बाद सयम काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस लिए दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको खूब लाभ मिलेगा। इस वर्ष आप ज्यादातर अपने घर से दूर ही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल नहीं है। मानसिक अशान्ति व आलस्यता का भाव बना रहेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 15 जून के बाद आपके मन में ईश्वर के प्रति आस्था व विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी धर्म पत्नी के साथ मिल कर कोई विशेष पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(10/06/2014 - 10/06/2032)

राहु की महादशा 10/06/2014 को आरम्भ और 10/06/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर है। इसके पहले आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको इस दशा के दौरान सुख, अचल सम्पत्ति में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा, तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति होगी और जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका शक्ति मिलेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, आँत सम्बन्धी समस्या, आल्सर और घाव, चर्मरोग और उदर-रोग (औरतों को) आदि बीमारियाँ हो सकती है। आपको बच्चे के जन्म के समय सावधान रहना चाहिए। कुछ सावधानी बरतकर इनमें से कुछ बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सट्टे तथा निवेश से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। ग्यारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आपके मित्र होंगे जो आपके लिए लाभदायक होंगे। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेख, कम्प्यूटर राजनीति, खेल, प्रबन्धन, पदाधिकारी कापद आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, चमड़े के सामान, दवा, एण्टीवायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों का कुछ परिवर्तन, आय में अचानक वृद्धि, कार्य-स्थान में अनपेक्षित प्रगति और स्थिति कठिन होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की भी अनपेक्षित प्रगति, अचानक लाभ और हानि होगी। आप अपने काय्र अथवा व्यावार में परिवर्तन कर सकते हैं। कोई भी परिवर्तन लाभदायक होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको लाभ व सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद के लेन-देन के सभी मामलों के लिए यह समय लाभदायक है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। यात्रा में सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, प्रबन्धन, कम्प्यूटर विज्ञान, विधि, दवा, खेल आदि से संबंधित विषय आपके लिए अच्छा होगा। आप दृढ़प्रतिज्ञ हैं और आपको यश तथा ख्याति मिलेगी। परमविज्ञान में भी आपकी रुचि होगी।

परिवार :

आपके बच्चों को सफलता तथा समृद्धि मिलेगी और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ और अर्थ-लाभ का अवसर मिलेगा और उनकी इच्छा की पूर्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि मिलेगी जबकि आपके पिता को समृद्धि मिलेगी तथा उनकी यात्रा और तीर्थाटन होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की यात्रा होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और यातायात में लाभ होगा और बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और वाणिज्य-व्यापार में लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा तकनीकी शिक्षा मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा आपके लिए भाग्यशाली होगा यद्यपि विरोधियों के कारण कुछ मामूली समस्या हो सकती है। शनि की महादशा कष्टकर सिद्ध होगी किन्तु कुछ भौतिक लाभ और यात्रा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी जिसमें उनकी यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको लाभ तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में पारिवारिक सुख और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सम्पत्ति, सुख ओर सफलता मिलेगी जबकि मंगल के फलस्वरूप सुख, बच्चे का जन्म तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(28/12/2025 - 28/12/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/06/2014 को प्रारंभ होकर 10/06/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 28/12/2025 को प्रारंभ होकर 28/12/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शुक्र शुभग्रह है और सुख-साधन, भोग-विलास आदि का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप प्रसन्नचित्त होंगे; शरीर ऊर्जावान होगा। विषय-वासना और आमोद-प्रमोद में रुचि हो सकती है। दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण आवश्यक है, अन्यथा मुसीबत में फंस सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(28/12/2028 - 21/11/2029)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/06/2014 को प्रारंभ होकर 10/06/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 28/12/2028 को प्रारंभ होकर 21/11/2029 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है। कार्यों में असफलता मिल सकती है। पापकर्म में रुचि हो सकती है। नेत्ररोगों और चोट से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। कार्यक्षमता और ऊर्जा उत्तम रहेंगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

महादशा :- गुरु
(10/06/2032 - 10/06/2048)

गुरु की महादशा की अवधि सोलह वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 10/06/2032 को आरम्भ और 10/06/2048 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु लग्न में स्थित है। यह शरीर रचना, रूपकार, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रतिष्ठा, सामान्य रहन-सहन, चेहरे के ऊपरी भाग, दीर्घ आयु और सामान्य जीवन की संरचना के प्रति विचार का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित होकर पंचम, सप्तम तथा नवम भावों को देखता हुआ उनपर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष की यह दशा शान्ति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की दशा होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी अपने ही भाव में स्थित होकर भाव को शक्ति दे रहा है। फलतः इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप अपने सामान्य कार्यों का सम्पादन करने की स्थिति में होंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति और पंचम तथा नवम (सप्तम के अतिरिक्त) भाव अर्थात् दो त्रिकोणों पर उसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आप भोग-विलास की वस्तुओं पर व्यय भी करेंगे।

व्यवसाय :

प्रथम भाव में स्थित गुरु के कारण आप अपने ही प्रयास से अपना जीविकोपार्जन करेंगे। आप जिस किसी भी व्यवसाय में हों, उन्नति करेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, जीवन में उन्नति करेंगे और मकान, वाहन आदि सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आपकी शिक्षा तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति तथा पंचम, सप्तम तथा नवम भावों अर्थात् भूत-कर्म भाव, जीवन संगी भाव और सुख कर्म पर उसकी दृष्टि के कारण आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सौहर्दपूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके माता-पिता आपके जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति के कारण इस दशा के दौरान आपको शिक्षा के उत्तम अवसर मिलेंगे और आपकी प्रशिक्षण-वृत्ति सफल होगी।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(10/06/2032 - 29/07/2034)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/06/2032 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/06/2032 को प्रांरभ होकर 29/07/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली रहेंगे, सम्मानित होंगे, धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी; योग्यता विकसित होगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, संतान सुखकारी होगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार से लाभ में वृद्धि होगी। चुनाव में जीत होगी; हर काम में सफल रहेंगे। पुत्र का जन्म हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकता है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विद्वानों, संतों से संपर्क बढ़ेगा।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, धनी बनेंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता की किस्मत चमकेगी; आपके भाई-बहनों के लिए परीक्षा में सफलता, संचार माध्यम में कुशलता, लघु यात्राओं का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, धनी बनेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित प्रगति या धनलाभ संभव है। परामर्शदाता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(29/07/2034 - 08/02/2037)

आपकी बृहस्पति की महादशा 10/06/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/07/2034 को प्रारंभ होकर 08/02/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। मातहत सहयोग करेंगे। स्पर्धियों और विरोधियों पर विजय होगी। प्रोन्नति और प्रगति होगी मगर उच्चाधिकारियों से कुछ संघर्ष करना पड़ेगा। खर्चे बढ़ेंगे, मगर आय में भी वृद्धि होगी। अध्यात्म, तंत्र-मंत्र और धर्म में रुचि रहेगी।

बाधाओं को पार करने के लिए उत्साह बना रहेगा। भाई और मित्र मदद करेंगे।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं होंगी; पराविद्या में रुचि होगी। आपके पिता की प्रोन्नति हो सकती है। माता को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए परीक्षा में सफलता, अप्रत्याशित परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान का धनार्जन उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो आय में वृद्धि होगी ; प्रोन्नति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति हो सकती है; सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्रा हो सकती है; खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मछली को भोजन खिलाएं।

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(08/02/2037 - 17/05/2039)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/06/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 08/02/2037 को प्रारंभ होकर 17/05/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपके शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे। अध्यात्म और ध्यान में रुचि होगी। अंतर्ज्ञान शक्ति और कल्पनाशीलता उत्तम रहेंगी। शिक्षा पूर्ण होगी। कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। सफलता के कई अवसर मिलेंगे। अध्यात्म और दर्शन में रुचि बढ़ेगी। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को मानसिक शांति और घरेलू सुख मिलेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति और वाहन का सुख मिलेगा। माता की यात्राएं हो सकती हैं; सम्मान और उच्च पद प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, लाभ, सुख-सुविधाएं, भरोसेमंद मित्र, महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर का संकेत है।

आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी, ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा, कार्यों में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है, सफल रहेंगे। व्यापारियों को स्पर्धा में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य का, विशेषकर स्नायुतंत्र और नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- गुरु - केतु
(17/05/2039 - 22/04/2040)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/06/2032 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 17/05/2039 को प्रारंभ होकर 22/04/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपके सम्मान में वृद्धि होगी, प्रसिद्ध बनेंगे। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे, धनी बनेंगे। बहुत लोग अप्रत्याशित सहायता करेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। अपारंपरिक माध्यम से धनागम हो सकता है। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर होंगे। संतान से सुख मिलेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ हो सकता है। आपके पिता के धन और सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। माता को साझेदार के माध्यम से धनार्जन होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए लंबी यात्रा, सुनियोजित कार्य, उत्तम स्वास्थ्य और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बायें कान, पैर और उदर की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(22/04/2040 - 22/12/2042)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 10/06/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/04/2040 को प्रारंभ होकर 22/12/2042 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप को सब सुख नसीब होंगे; उत्तम वस्त्रों से सुशोभित रहेंगे, धनी बनेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। उच्चपद और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। आत्मसम्मान और आत्मविश्वास उत्तम रहेंगे। विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ उत्तम रहेगा। किसी को दिया कर्ज़ वापस मिल जाएगा। धनागम होगा। विवाह, अनुबंध, व्यापार और महिलाओं के माध्यम से लाभ होगा। मुकदमे में जीत होगी। उत्तम परिवार में विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता को संतान से सुख मिलेगा। माता की आय अच्छी होगी। आपके भाई-बहनों के लिए आकांक्षाओं की पूर्ति, सुखकारी लघु यात्राएं, धन और स्वयं के प्रयास से सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, सरकार से सहयोग मिलेगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध बनेंगे, सम्मानित होंगे। परामर्शदाताओं का प्रभाव बढ़ेगा। व्यापारियों को धनलाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(22/12/2042 - 10/10/2043)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/06/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/12/2042 को प्रारंभ होकर 10/10/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और तंत्र-मंत्र में रुचि होगी। धन के खर्च में सूझ-बूझ का परिचय देंगे; कर्ज़ से बचेंगे। विदेश यात्रा या विदेश में निवास संभव है। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। विरोधियों और स्पर्धियों पर विजय होगी। आप में प्रशासनिक क्षमता उत्तम है। अदालत में विजय होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे; उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है; बोनस आदि से अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारों या अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कर्मचारियों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(10/10/2043 - 08/02/2045)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/06/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 10/10/2043 को आरंभ होकर 08/02/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आप संतुष्ट और शांत रहेंगे। धर्म में रुचि होगी। कल्पनाशक्ति और सर्जनात्मक क्षमता उत्तम होंगी। सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। धनार्जन उत्तम होगा। घर में शिशु का जन्म हो सकता है। बहुत से मित्र होंगे। बड़े भाई-बहनों से संबंध उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी के लिए सफलता, धन और लाभ का योग है। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे, उच्चपद मिलेगा, धनी बनेंगे। माता को धन का लाभ होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, आपके भाई-बहनों के लिए कला और साहित्य में सफलता, साझेदारी से लाभ, सुखी विवाहित जीवन का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, खुश रहेंगे, समाज में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली उदर रोग हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चांदी, जल और दूध दान में दें।

अंर्तदशा :- गुरु - मंगल
(08/02/2045 - 15/01/2046)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/06/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/02/2045 को प्रारंभ होकर वद 15/01/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी बनेंगे और जोखिम के कार्यों में माहिर होंगे। प्रसिद्धि बढ़ेगी और स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आकांक्षाएं और ऊर्जा प्रबल होंगी; लक्ष्य की ओर केंद्रित रहेंगे। तकनीकी शिक्षा में सफल होंगे, अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, वाहन सुख रहेगा। कार्यशक्ति में वृद्धि होगी, आत्म-विश्वास उत्तम होगा; सफलता, सम्मान और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। स्पर्धा में जीत के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता को धनलाभ होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित लाभ, यात्रा, अप्रत्याशित खर्चे, कार्यक्षेत्र में बाधाओं का संकेत है।

आपकी संतान को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, परीक्षा में सफल होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी ; प्रसिद्धि मिलेगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

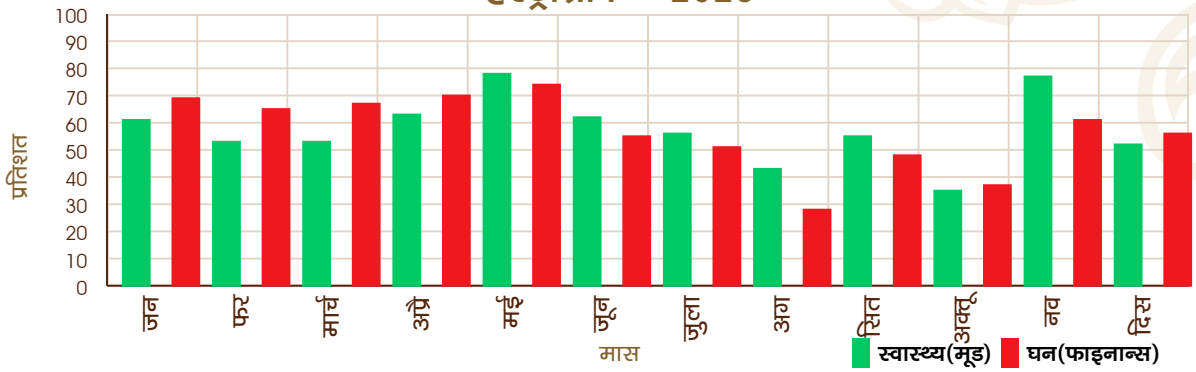

एस्ट्रोग्राफ - 2027

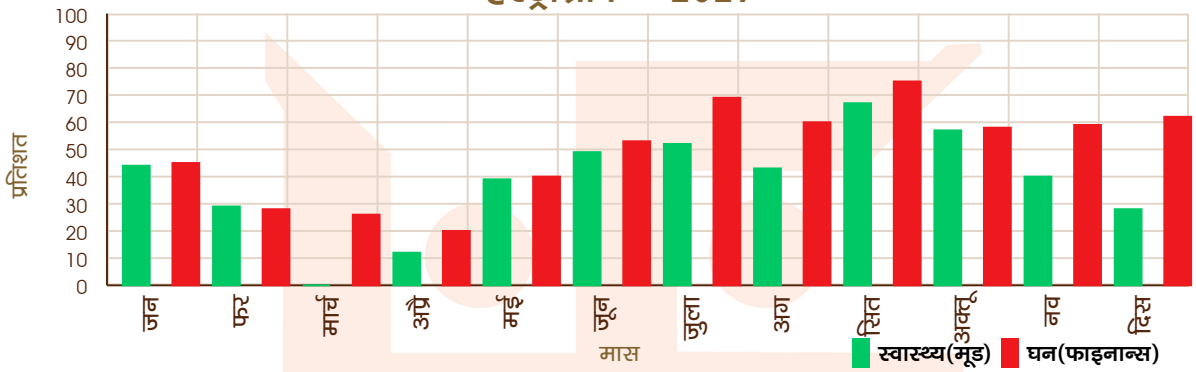

एस्ट्रोग्राफ - 2028

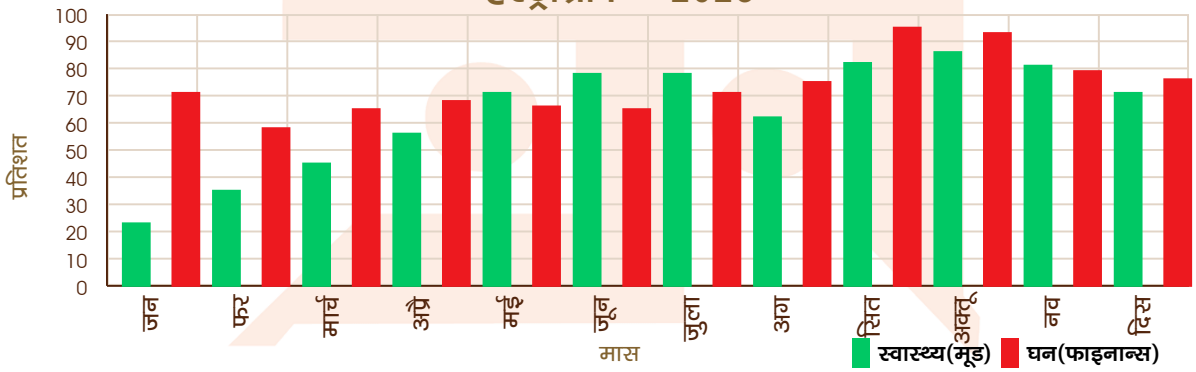

एस्ट्रोग्राफ - 2029

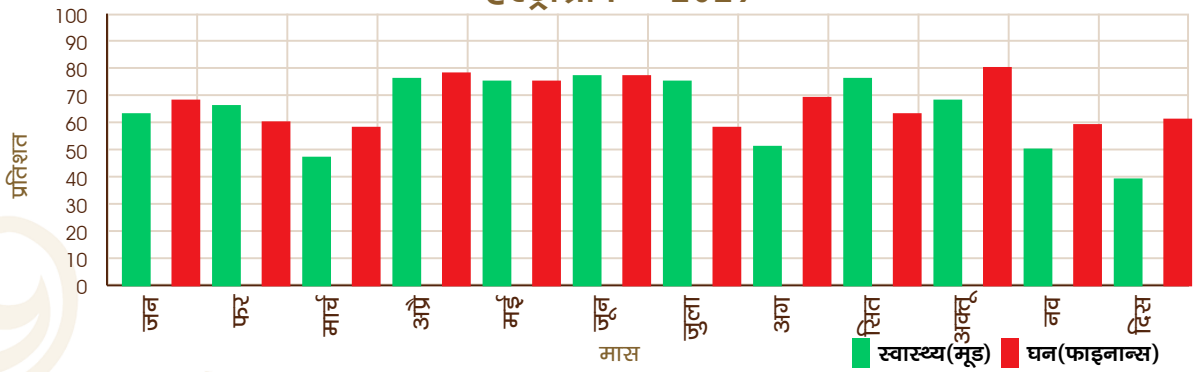

एस्ट्रोग्राफ - 2030

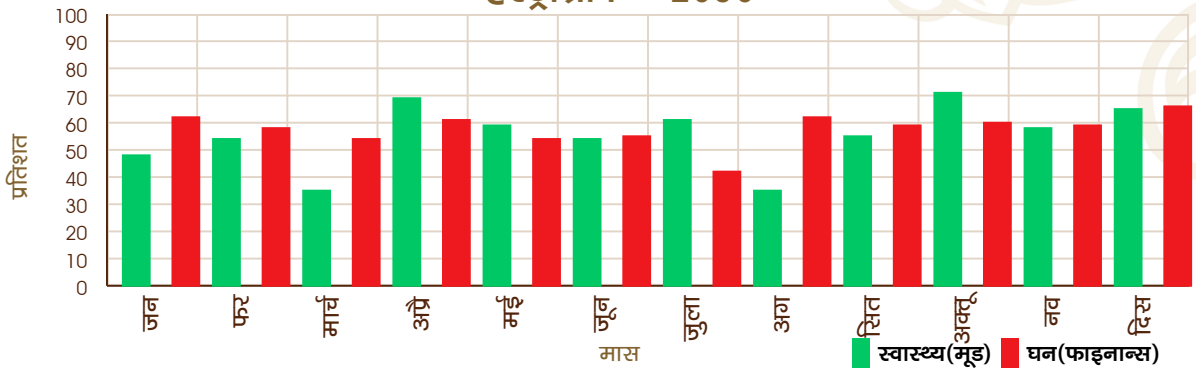

एस्ट्रोग्राफ - 2031

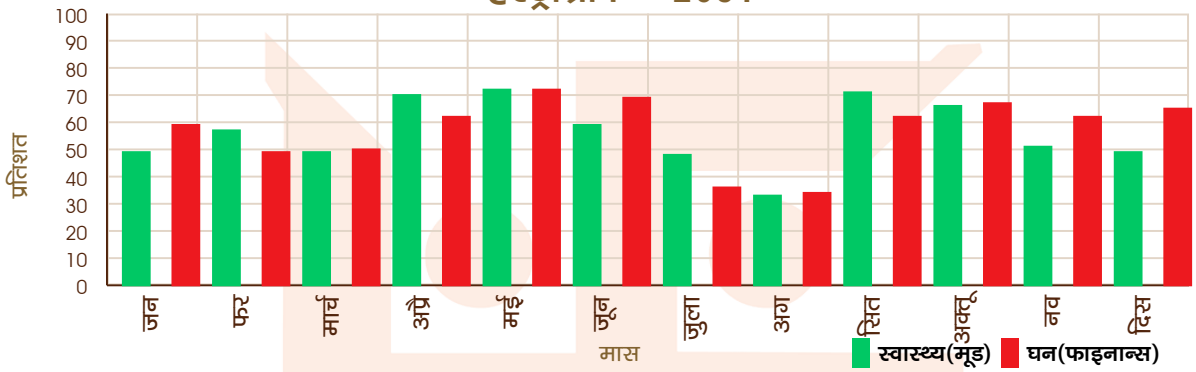

एस्ट्रोग्राफ - 2032

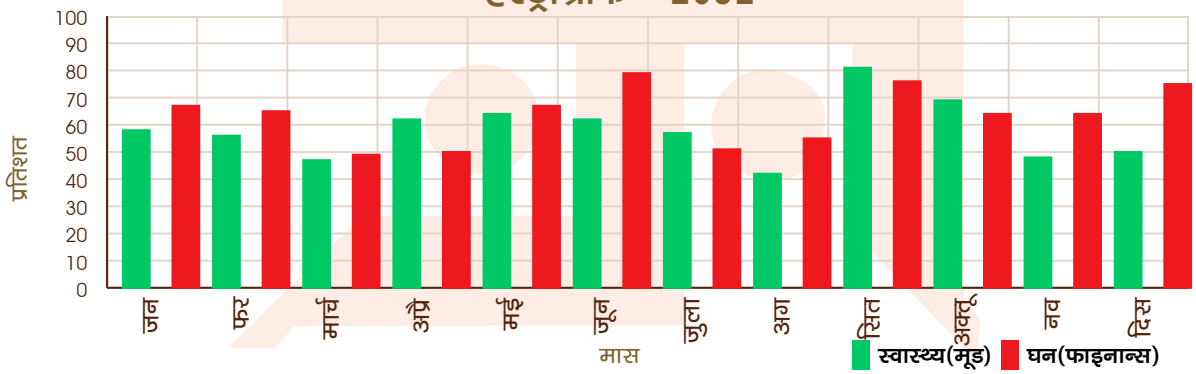

एस्ट्रोग्राफ - 2033

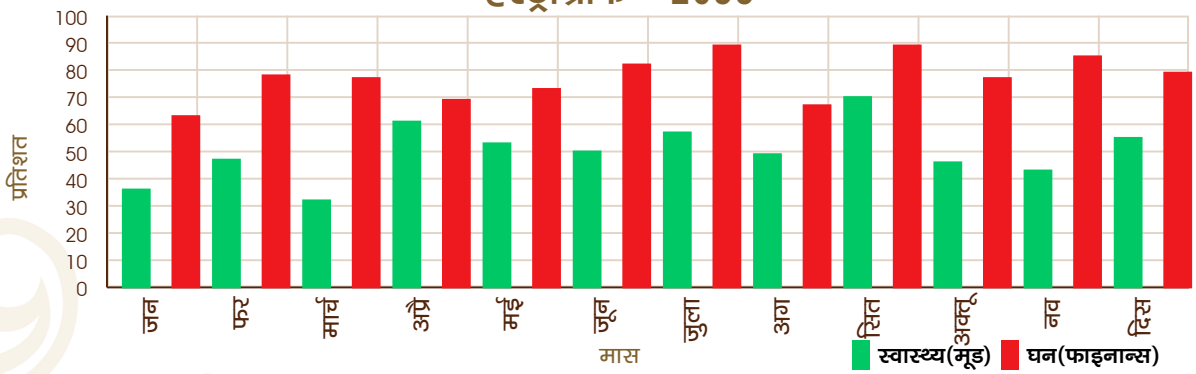

एस्ट्रोग्राफ - 2034

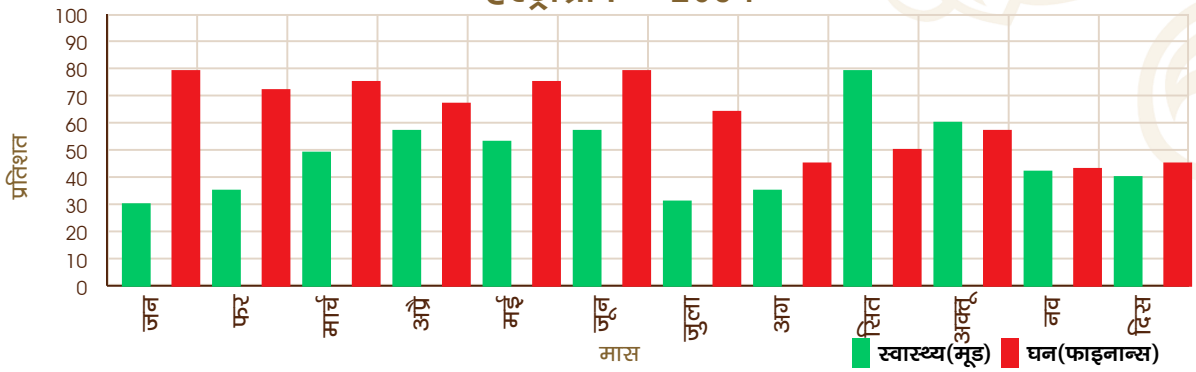

एस्ट्रोग्राफ - 2035

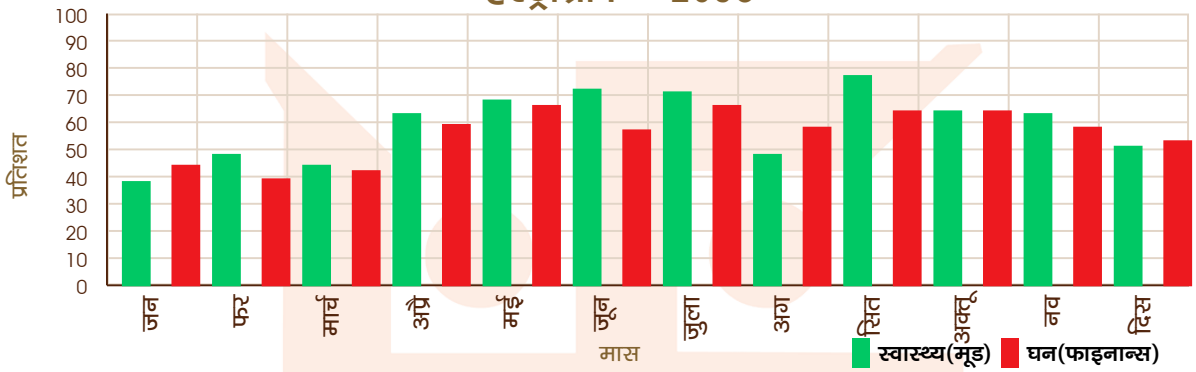

एस्ट्रोग्राफ - 2036

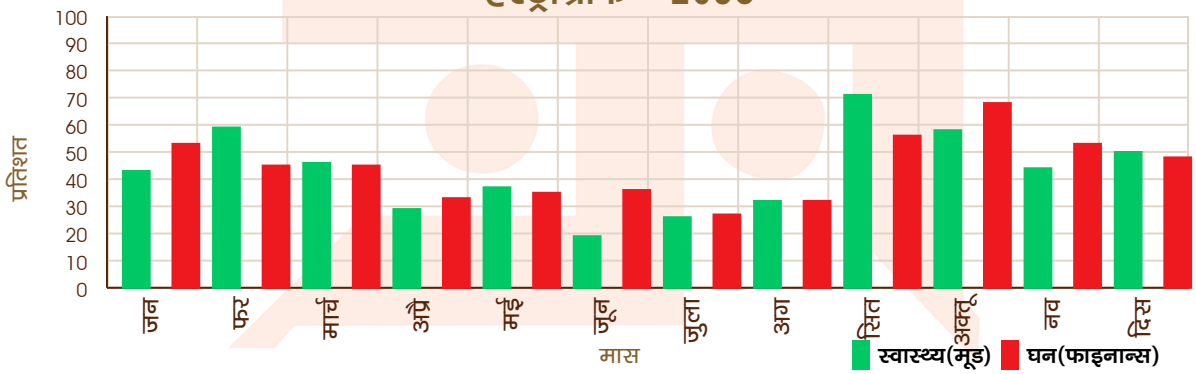

एस्ट्रोग्राफ - 2037

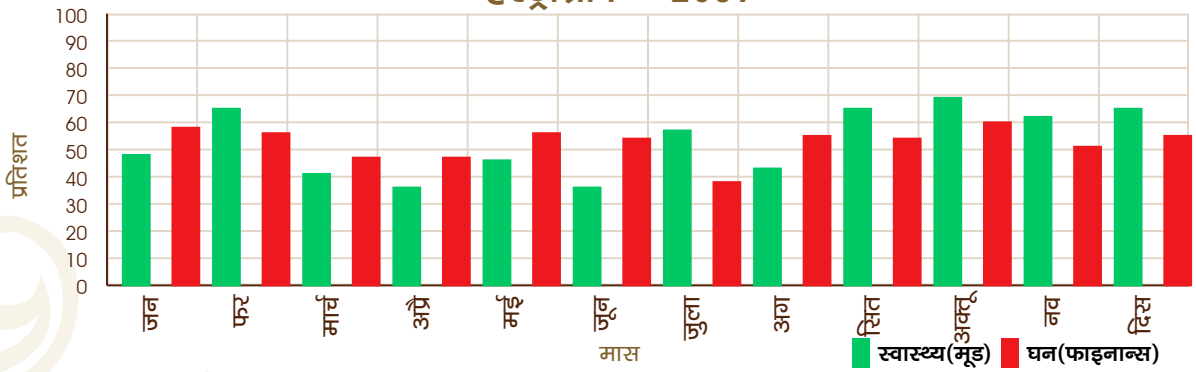

एस्ट्रोग्राफ - 2038

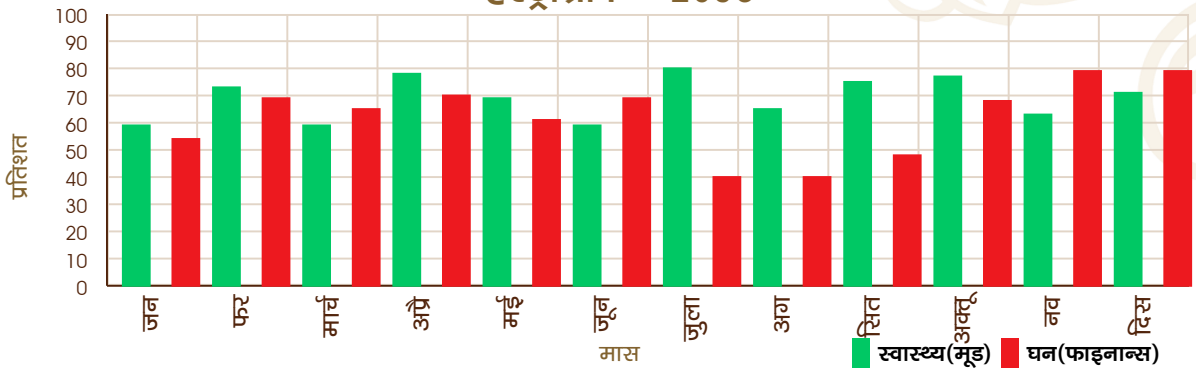

एस्ट्रोग्राफ - 2039

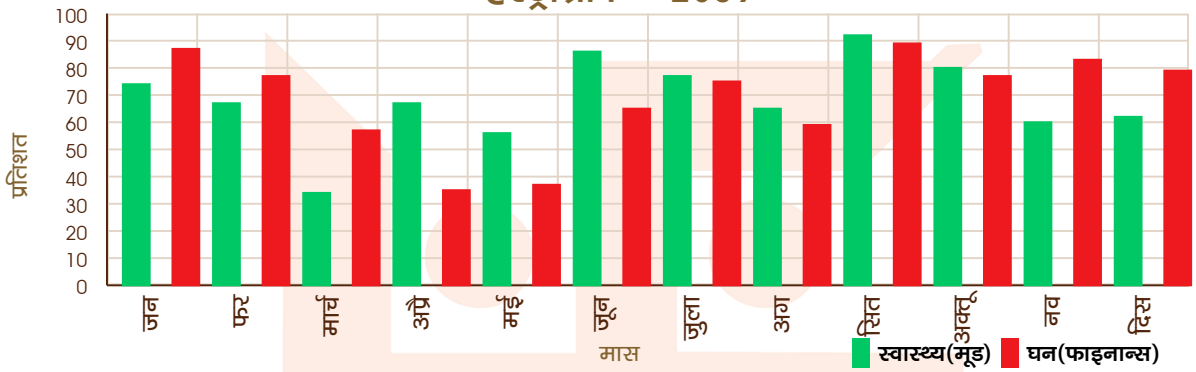

एस्ट्रोग्राफ - 2040

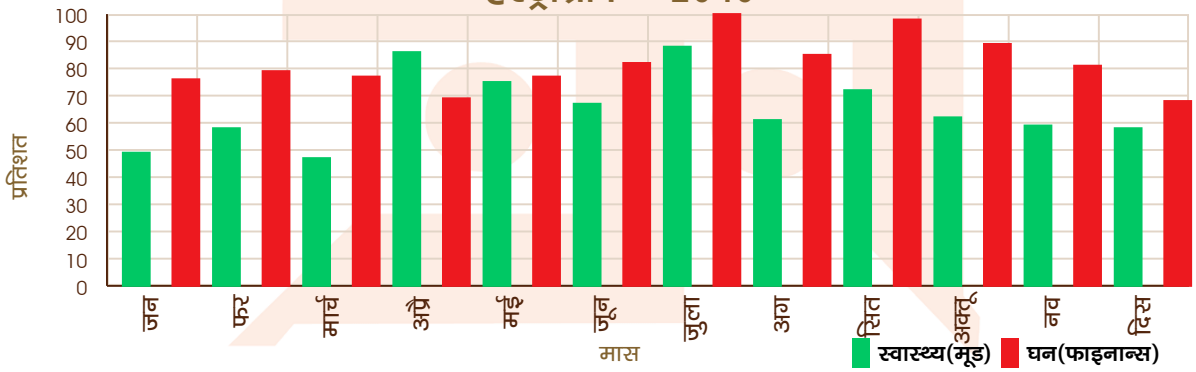

एस्ट्रोग्राफ - 2041

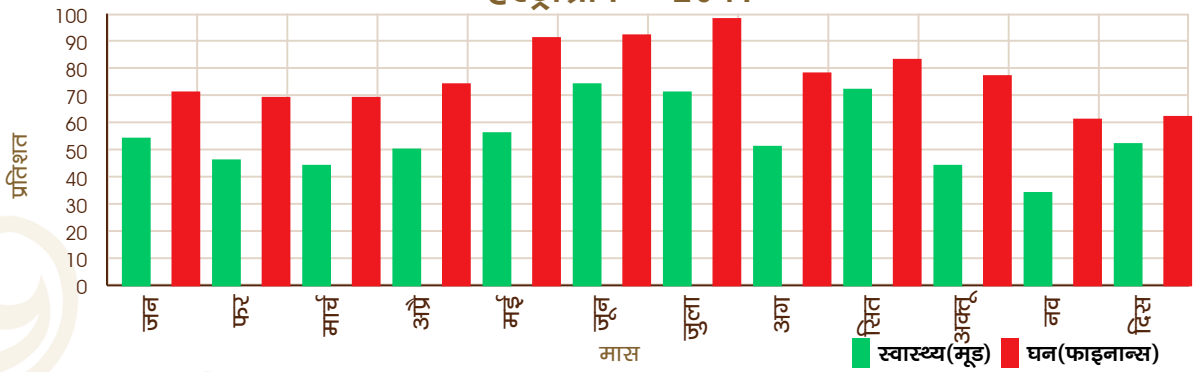

एस्ट्रोग्राफ - 2042

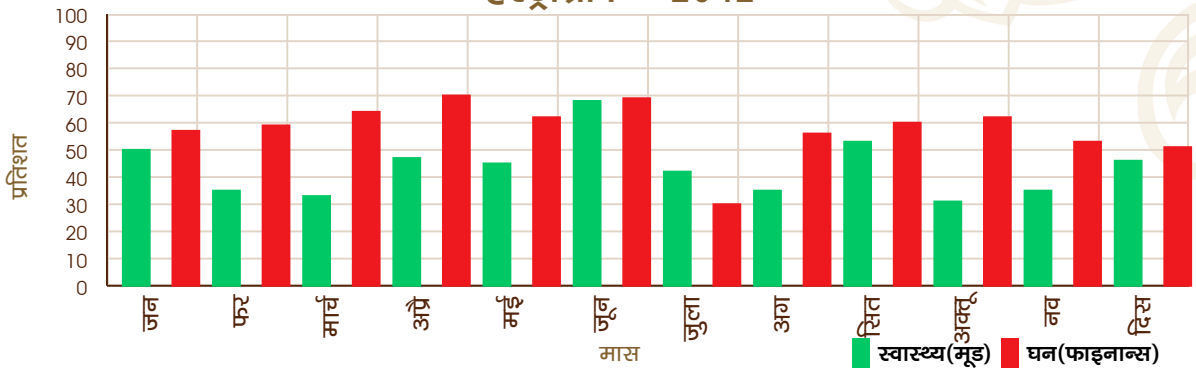

एस्ट्रोग्राफ - 2043

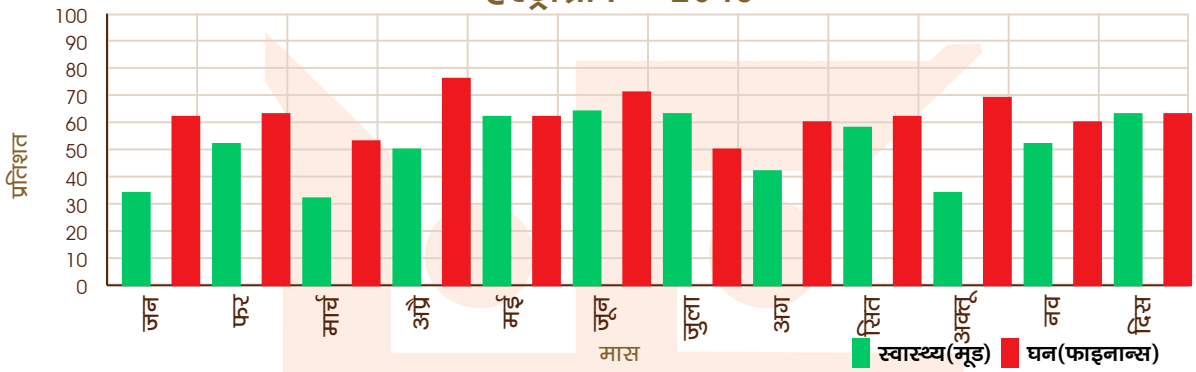

एस्ट्रोग्राफ - 2044

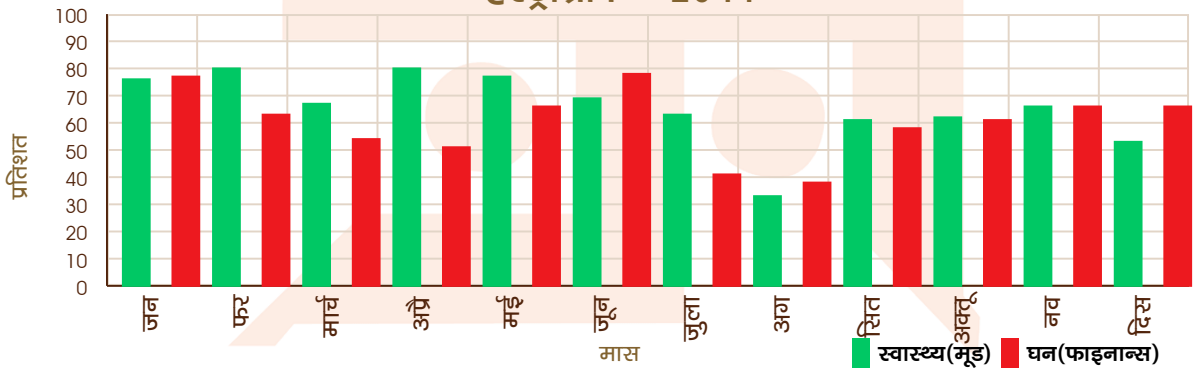

एस्ट्रोग्राफ - 2045

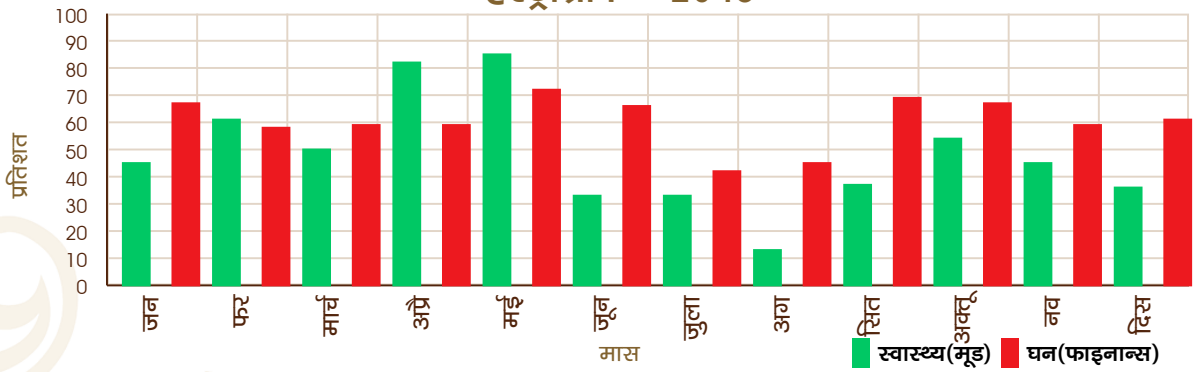

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः

शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

लग्ने गुरौ दानवपूजितेन युक्ते यदा तस्य विशुद्धचित्तम् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-146 ।।

यदि जन्मपत्रिका के लग्न में बृहस्पति शुक्र से युक्त हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

अनेक वाहन प्राप्ति योग

सुखेश्वरे केन्द्रगते तदीशे लग्नस्थिते वा बहुवाहनाढ्यः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-163 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश केन्द्रस्थ हो जिस राशि में सुखेश है उसका स्वामी लग्न में हो तो जातक को बहुत वाहनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक वाहनों का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठस्थान में शनि षष्ठेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक को विशेषकर गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको गुल्मरोग (त्वचा रोग) होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु योग

यदि होरागतः शुक्रः केन्द्रेष्वन्यतमे गुरुः।
नैधने न च पापाः स्युः सविंशं जीवते शतम्।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-95।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न में शुक्र हो और किसी भी केंद्र स्थान में गुरु हो तथा अष्टम भाव में पापग्रह न हों तो 120 वर्ष जातक जीता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र — योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होकर 120 वर्ष तक जीवित रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च सुखादि योग

चन्द्रो व्ययाधिपो धर्मलाभमन्त्रेषु संस्थितः ।
स्वोच्चस्वर्क्षनिजांशे वा लाभधर्मात्मजांशके ।
दिव्यागारादिपर्यङ्को दिव्यगन्धैकभोगवान् ।
परार्घ्यरमणो दिव्यवस्त्रमाल्यादिभूषणः ।
परार्घ्यसंयुतो वित्तो दिनानि नवति प्रभुः ।।

।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा व्ययेश होकर 5-9-11 वें भाव में हो या अपनी उच्च राशि, अपनी राशि, धन भाव के नवांश में हो अथवा लाभ, नवम पंचम के नवांश में हो तो दिव्य भवन, शक्रया, गन्ध, दूसरे के द्रव्य को भोगनेवाला होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम भवनशक्रयादि सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।

।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,राहु,चंद्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।